(हिंदी संस्करण)

॥ श्रीमंत ॥

॥ श्रीमंत दगडूशेठ हलवाई सार्वजनिक गणपति ट्रस्ट, पुणे ॥

इस गौरवपूर्ण
स्वर्णिम क्षण में
सहभागिता का सौभाग्य
प्रदान करने के लिए
हम आपके प्रति
अपनी विनम्र कृतज्ञता
अर्पित करते हैं.

भक्तिमय कृतज्ञता

श्रीमंत दगडूशेठ हलवाई सार्वजनिक गणपति ट्रस्ट के सच्चे आधारस्तंभ थे - संस्थापक अध्यक्ष स्व. तात्यासाहेब गोडसे, संस्थापक उपाध्यक्ष स्व. मामासाहेब रासने, संस्थापक कोषाध्यक्ष स्व. शंकरराव (आप्पासाहेब) सूर्यवंशी तथा संस्थापक सरचिटणीस स्व. बुवासाहेब रासने। अत्यंत अभावपूर्ण परिस्थितियों में जीवन व्यतीत करने के बावजूद उनके हृदय में गणपति बाप्पा के प्रति अटूट श्रद्धा थी। उसी भक्ति ने उन्हें शक्ति दी और उन्होंने लगभग छह दशकों तक अपना संपूर्ण जीवन बाप्पा की सेवा में समर्पित कर दिया। उनकी अथक सेवा, निष्ठा और समर्पण का ही परिणाम है कि आज "श्रीमंत दगडूशेठ गणपति" का नाम विश्वभर के श्रद्धालुओं तक पहुँचा है। उनकी पुण्य परंपरा के कारण ही हम सभी कार्यकर्ताओं को यह उत्सव आज भी उसी गौरव, श्रद्धा और भव्यता के साथ मनाने का सौभाग्य प्राप्त हो रहा है। पूर्वजों ने हमें ईमानदारी, पारदर्शिता और समर्पण का जो मार्ग दिखाया, उसी पर चलने का हम निरंतर प्रयास कर रहे हैं। स्व. अशोकभाऊ गोडसे और श्री. माणिकदादा चव्हाण ने लगभग ५५ वर्ष, श्री. सुनीलभाऊ रासने ने लगभग ४५-५० वर्ष तथा श्री. हेमंतभाऊ रासने और श्री. महेश सूर्यवंशी ने लगभग ४० वर्ष गणपति बाप्पा की सेवा में समर्पित किए हैं। आज की पीढ़ी में श्री अक्षय गोडसे, श्री. अमोल केदारी, सुवर्णयुग तरुण मंडल के श्री. प्रकाश चव्हाण तथा सभी कार्यकर्ताओं का भी अमूल्य योगदान प्राप्त हो रहा है। यह केवल वर्षों का हिसाब नहीं, बल्कि बाप्पा के प्रति अखंड श्रद्धा, सेवा और परंपरा के संरक्षण की निरंतर साधना है।

श्री. सुनीलभाऊ रासने ट्रस्ट के वर्तमान अध्यक्ष हैं। उनकी सेवा और कार्यशैली की अपनी अलग पहचान है। आज मंदिर भव्य और विश्वप्रसिद्ध है, लेकिन जब यह छोटा था, तब भी वे देर रात तक स्वयं मंदिर की साफ़-सफ़ाई पूरी श्रद्धा और समर्पण से करते थे। उनके जीवन से यही संदेश मिलता है कि बाप्पा की सेवा में कोई भी कार्य छोटा या बड़ा नहीं होता।

आज मंदिर में होने वाली जो मधुर, भावपूर्ण और भक्तों को मंत्रमुग्ध कर देने वाली आरती है, जिसमें हजारों श्रद्धालु तल्लीन हो जाते हैं, उसकी संपूर्ण रचना श्री. सुनीलभाऊ रासने ने ही की है। उस आरती के प्रत्येक शब्द में उनकी भक्ति और समर्पण की झलक दिखाई देती है। मंदिर के प्रबंधन में भी वे अत्यंत सजग और सूक्ष्म दृष्टि रखते हैं। वे प्रतिदिन स्वयं मंदिर में उपस्थित रहकर प्रत्येक व्यवस्था पर ध्यान देते हैं और यह सुनिश्चित करते हैं कि किसी भी श्रद्धालु को असुविधा न हो। चाहे कितनी भी भीड़ हो या कार्य का कितना ही दबाव, मंदिर बंद होने तक वे श्रद्धालुओं की सेवा में सदैव उपस्थित रहते हैं।

संस्थापकों द्वारा बोया गया भक्ति का बीज परंपरा से समृद्ध होकर आज एक विशाल वटवृक्ष का रूप ले चुका है। उसी परंपरा को आगे बढ़ाते हुए अनेक कार्यकर्ता आज भी निःस्वार्थ भाव से गणपति बाप्पा की सेवा में समर्पित हैं। हमारी यही प्रार्थना है कि बाप्पा के प्रति अटूट श्रद्धा और सेवा की यह परंपरा आने वाली पीढ़ियों तक इसी प्रकार फलती-फूलती रहे।

श्रीमंत दगडूशेठ हलवाई सार्वजनिक गणपति ट्रस्ट एवं सुवर्णयुग तरुण मंडल, पुणे

श्रीमंत

इस ग्रंथ-पुष्प के निर्माण में जैसे-जैसे मैं अधिकाधिक तन्मयता से सहभागी होता गया, वैसे-वैसे एक बात अत्यंत स्पष्ट रूप से अनुभव होने लगी; वह यह कि यदि इस ग्रंथ-पुष्प को कोई नाम सर्वथा उपयुक्त और सार्थक रूप से सुशोभित कर सकता है, तो वह केवल "श्रीमंत" ही हो सकता है। क्योंकि "श्रीमंत" शब्द केवल वैभव का परिचायक नहीं है, बल्कि वह प्रौढ़ता, परिपक्वता और अंतर्मुखी समृद्धि का भी प्रतीक है। यही समृद्धि श्रीमंत दगडूशेठ हलवाई गणपति मंदिर एवं मंडल के अस्तित्व में कदम-कदम पर अनुभव होती है।

वास्तव में सच्ची श्रीमंती कभी प्रदर्शित नहीं करनी पड़ती; वह स्वतः दृष्टिगोचर हो जाती है, वह स्वयं ही लोगों की दृष्टि आकर्षित करती है और उनके मन में घर कर जाती है। इस ग्रंथ का प्रत्येक पृष्ठ पलटते समय यही अनुभूति होती है। मंडल की वैचारिक समृद्धि, आध्यात्मिक ऊंचाई, कलात्मक संवेदनशीलता, सामाजिक उत्तरदायित्व, नैतिक मूल्यों के प्रति दृढ़ निष्ठा, सुसंस्कृत आचरण, भारतीय शास्त्रीय संगीत के संवर्धन हेतु "स्वराभिषेक" जैसे सांस्कृतिक उपक्रमों की हिफाज़त, ज्ञान-प्रसार के प्रति बेचैनी, पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता, जनजागरण का व्यापक दृष्टिकोण तथा खेलकूद के क्षेत्र में भी उल्लेखनीय योगदान - इन सभी आयामों में मंडल की उत्कृष्ट "श्रीमंती" स्वतः ही प्रखरता से परिलक्षित होती है। हां, यहां एक महत्त्वपूर्ण तथ्य का उल्लेख आवश्यक है, और वह यह कि यह "श्रीमंती" न तो आकस्मिक है और न ही विरासत में प्राप्त वैभव। यह पिछली और वर्तमान पीढ़ियों के विश्वस्तों, सेवकों और कार्यकर्ताओं के अथक परिश्रम, अखंड सेवा, निष्कलंक आचरण तथा जीवन-मूल्यों के प्रति अटूट निष्ठा का परिणाम है। पारदर्शिता और समर्पण के बल पर उन्होंने जमीनी स्तर पर समाज में सर्व वर्ग समावेशी होने का विश्वास संपादन किया, और उसी अटूट विश्वास की सुदृढ़ नींव पर आज यह "श्रीमंती" प्रतिष्ठित है।

इसीलिए यह "श्रीमंती" क्षणिक नहीं, बल्कि शाश्वत है - जो सेवा, साधना और सद्भावना से साकार हुई है। इस आध्यात्मिक और मानवीय समृद्धि का सहभागी बनना प्रत्येक व्यक्ति के लिए गर्व का विषय है; और इस गर्व में अहंकार नहीं, बल्कि केवल कृतज्ञता का निर्मल भाव ही अंतर्निहित है।

मिलिंद घैसास

अनुक्रमणिका

पद चिह्न	१
श्रद्धा का दीपस्तंभ	५
एक प्रेरणादायक यात्रा	७
शून्य से विश्व निर्माण की ओर	१०
श्री गणेश की गौरवशाली विरासत	१२
नेत्रांगन	१५
गरुड़ सी उड़ान	१७
आशा की किरण	२०
सर्वसाधारण लोगों की स्वर्णिम गाथा	२३
परोपकार की अखंड ज्योति	२५
किरणोत्सव	२६
अंगारकी चतुर्थी	२७
प्रेरणा के पदचिह्न, उम्मीद की किरण	३०
श्रीगणेश जयंती (माघ शुद्ध चतुर्थी)	३३
ममता की छाँव, मानवता का मंदिर	३५
अंगूर महोत्सव	३९
करुणामय उपचार	४१
चैत्र शुक्ल प्रतिपदा – गुड़ी पाड़वा (श्री मंदिर का स्थापना दिवस)	४४
मंदिर प्रबंधन	४६

श्रद्धा की आध्यात्मिक यात्रा ४९
चैत्र शुक्ल द्वितीया वल्लभेश मंगलम् ५१
चैत्र वद्य पंचमी / चैत्र कृष्ण पंचमी (मोगरा महोत्सव) ५२
नव संजीवनी ५५
पुष्टिपति विनायक जयंती (डाब महोत्सव) ५७
इतिहास का वह काला दिन ५९
शेषात्मज गणेश जयंती ६३
अक्षय तृतीया (आम महोत्सव) ६५
मानव सेवा अभियान ६९
गणेशोत्सव (भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी - अनंत चतुर्दशी) ७७
माटी से मानवता तक ८९
उत्सव प्रबंधन ९१
ज्ञानवर्धन का तेजोमय दीप ९४
सुरलहरियों की मधुर यात्रा ९८
गणेश जयंती - उमांगमलज (कार्तिक शुक्ल चतुर्थी) १०३
परंपरा की विरासत १०५
ऊर्जा का दिव्य प्रक्षेपण (अतिरुद्र महायज्ञ) १०९
तुलसी विवाह १११

संकल्पना एवं रचना (Concept & Design)
आदिवेद ॲडव्हर्टायझिंग प्रा. लि.

रचनात्मक निर्देशक (Creative Director)
मिलिंद घैसास

कला निर्देशक (Art Director)
स्वाती घैसास

कलात्मक सज्जा (Artworks & Post-Production)
यश वाघरे

मुद्रण समीक्षा (Print Review)
डॉ. संजय पलनीटकर

मुद्रण संशोधन (Proofreading)
अमर ठाकूर

प्रक्रिया आणि छपाई (Processed & Printed At)
इमेज प्रॉडक्शन

© श्रीमंत दगडूशेठ हलवाई सार्वजनिक गणपति ट्रस्ट, पुणे

यह पुस्तक श्रीमंत दगडूशेठ हलवाई गणपति बाप्पा के श्रीचरणों में श्रद्धा, समर्पण और दृढ़ संकल्प से अर्पित एक विनम्र प्रयास है। पाठकों से विनम्र अपेक्षा है कि वे इसका सकारात्मक एवं व्यापक दृष्टिकोण से स्वागत करेंगे।

पुस्तक-निर्माण की प्रक्रिया में आवश्यकतानुसार सृजनात्मक स्वतंत्रता का उपयोग किया गया है। किसी की भावनाओं को आहत करना उद्देश्य नहीं है; यह संपूर्ण लेखन श्रद्धा और सम्मान की भावना से प्रेरित है। इस पुस्तक का कोई भी अंश मुद्रित, डिजिटल अथवा किसी अन्य माध्यम से श्रीमंत दगडूशेठ हलवाई गणपति मंदिर न्यास की पूर्व लिखित अनुमति के बिना पुनर्मुद्रित, प्रकाशित या प्रसारित न किया जाए।

पद चिह्न

आज श्रीमंत दगडूशेठ गणपति बाप्पा के पावन श्रीचरणों में इस संग्रहणीय ग्रंथ की प्रति श्रद्धासुमन स्वरूप अर्पित करते हुए हमारे मानस पटल पर अंकित बीते अनेक दशकों की वह तेजस्वी और भावपूर्ण यात्रा आंखों में अवतरित हो आई, और सहज ही आनंद अश्रु बहने लगे। ये अश्रु थे एक अलौकिक समाधान के, आध्यात्मिक परिपूर्णता के, साथ ही अपार आनंद के।

बीते समय में पूज्य सद्गुरु माधवनाथ महाराज के कृपाशीर्वाद से श्रीमंत दगडूशेठ एवं पुण्यश्लोक लक्ष्मीबाई द्वारा श्रद्धा और भक्ति के देवालय में बोया गया आस्था का वह बीज आज मानवसेवा के विराट मंदिर में एक विशाल वटवृक्ष के रूप में विकसित हुआ देख कर हम रोमांचित हो रहे हैं। इस दिव्य रूपांतरण का साक्षी बनना निश्चय ही हम सभी के अनेक जन्मों के संचित पुण्य का फल ही प्रतीत होता है।

सार्वजनिक गणेशोत्सव के एक पावन शुभारंभ से चली, और समाजसेवा के असंख्य आयामों को स्पर्श करते हुए स्थायी भव्य मंदिर की दिव्य स्थापना तक पहुंची इस यात्रा की यशोगाथा ऐसी है जिसका उल्लेख सदैव गर्व के साथ किया जाएगा जो अपने आप में एकमेव और अद्वितीय है।

सन् १८९३ में केले के स्तंभों से सुसज्जित अश्वरथ पर निकली श्री गणपति की शोभायात्रा में लोकमान्य तिलक, श्रीमंत दगडूशेठ हलवाई, श्रीमंत भाऊसाहेब रंगारी, 'काल' के संस्थापक शिवराम महादेव परांजपे, गोविन्द दाजी जोशी, बाबूराव गोडसे, सोमनाथशेठ गाडवे और अन्य कार्यकर्ता

सन् १८९३ में, जब श्री लोकमान्य तिलक जी ने सार्वजनिक गणेशोत्सव की परंपरा का शुभारंभ किया, तभी इस गणपति की प्रतिष्ठापना की गई थी। श्रीमंत दगडूशेठ के निधन के पश्चात् १९५२ में इस उत्सव का दायित्व पूर्णतः "सुवर्णयुग तरुण मंडल" ने संभाला। उस समय तात्या गोडसे, मामा रासने, आप्पा सूर्यवंशी, बुवा रासने, रघुनाथ महाराज केदारी तथा उनके सहयोगियों ने मिलकर संपूर्ण व्यवस्थापन में पारदर्शिता की सुदृढ़ नींव रखी। उनकी दूरदृष्टि का ही परिणाम है कि "दगडूशेठ हलवाई गणपति" आज केवल श्रद्धा और मंदिर का ही नहीं, बल्कि विश्वास और विश्वसनीयता का भी पर्याय बन चुका है।

इसका सबसे बड़ा प्रमाण "श्रीमंत दगडूशेठ गणपति उत्सव" का प्रतिवर्ष प्रकाशित होने वाला आय-व्यय विवरण है। एक रुपये के अर्पण से लेकर हजारों की भेंट तथा प्रसाद से लेकर नारियल तक, प्रत्येक आय-व्यय का पारदर्शी लेखा-जोखा सिद्धांतनिष्ठ कार्यशैली का परिचायक है जिससे मन भाव विभोर हो जाता है। निस्संदेह, इतनी पारदर्शिता और तत्वनिष्ठ अनुशासन अपनाने वाला यह "श्रीमंत दगडूशेठ" देश के अग्रणी सार्वजनिक गणेशोत्सव मंडलों में से एक है। इसी सेवा-भाव को आगे बढ़ाते हुए, अपने क्षेत्र के श्रमिकों को सम्मान और जरूरतमंद परिवारों को आर्थिक संबल प्रदान करने के उद्देश्य से "सुवर्णयुग सहकारी बैंक" की स्थापना की गई। यह सामाजिक जिम्मेदारी की यात्रा का मानो बीजारोपण ही था। आज यह बैंक राज्य के सर्वाधिक विश्वसनीय बैंकों में गिना जाता है - यही हमारे प्रयासों का सच्चा प्रतिफल है।

इसके बाद कोंढवा में अनाथ बच्चों और देवदासी महिलाओं के बच्चों के लिए स्थापित बालसंगोपन केंद्र ने अनेक जीवन संवारे। यहां पले-बढ़े बच्चों में से एक आज इसरो के प्रोजेक्ट में वैज्ञानिक है, और अनेक अन्य छात्र देश-विदेश की प्रतिष्ठित संस्थाओं में सेवाएं दे रहे हैं। और उन्हीं में से कई आज नई पीढ़ी को संवारने में जुटे हैं - यही हमारी वास्तविक विरासत है।

दूसरों के घरों के लिए ईंटें बनाने वाले ईंट-भट्ठा श्रमिकों को क्या अपने अधिकार का घर नहीं मिलना चाहिए? इसी संवेदना से सिंहगढ़ रोड पर निर्मित "गणपति नगर गृहसंकुल" हमारे सेवा-कार्य का एक भावपूर्ण शिखर और गौरवशाली अध्याय बन गया। सन् २००३ में कोंढवा में स्थापित वृद्धाश्रम आज दादा-दादी / नाना - नानी और उनके नाती-पोतों के स्नेह से आलोकित एक परिवार बन चुका है। तीन पीढ़ियों को जोड़ने वाला यह आत्मीय संबंध हृदय को भावविभोर कर देता है।

प्रतिदिन "ससून अस्पताल" के ३,२०० रोगियों को भोजन, नाश्ता और चाय उपलब्ध कराना, उनके परिजनों के लिए निवास की व्यवस्था करना तथा गंभीर रोगियों को चिकित्सा सहायता प्रदान करना - इन सभी सेवाओं पर ट्रस्ट प्रतिवर्ष लगभग तीन करोड़ रुपये व्यय करता है। यह हमारे सामाजिक उत्तरदायित्व और मानव सेवा का सजीव प्रतीक है। इसके साथ ही पोलियो उन्मूलन अभियान, वारकरियों के लिए अन्नदान, चलित चिकित्सालय (मोबाइल मेडिकल यूनिट / एम्बुलेंस), "जय गणेश ज्ञानवर्धन" योजना, सैनिकों के लिए शौर्य पुरस्कार, आपदाग्रस्तों की सहायता, वृक्षारोपण तथा जलसंरक्षण जैसी अनेक सेवाभावी पहलों ने ट्रस्ट की कार्यसंस्कृति को निरंतर समृद्ध किया है। मैदान में खेले जाने वाले कबड्डी जैसे खेल में भी हमारी गौरवपूर्ण परंपरा रही है। "सुवर्णयुग स्पोर्ट्स क्लब" की कुमारी सुमती पुजारी ने कबड्डी में भारतीय टीम की कप्तान बनने का गौरव प्राप्त किया तथा कुमारी दीपिका जोसेफ ने विश्व कप जीतकर देश का नाम रोशन किया। "हिंद केसरी" प्रतियोगिता के स्वर्ण जयंती वर्ष में ट्रस्ट के विशेष प्रयासों से इस प्रतिष्ठित प्रतियोगिता का आयोजन जबलपुर से स्थान बदल कर पुणे में हुआ। उसके भव्य, सुव्यवस्थित और अनुकरणीय आयोजन ने ट्रस्ट की संगठन क्षमता को नई पहचान दी। समाज से प्राप्त प्रत्येक रुपया पुनः समाजहित में समर्पित करना ही हमारी अटूट परंपरा है। देवालय में भक्तों द्वारा अर्पित दान हो या मानव सेवा के लिए प्राप्त सहयोग - वही हमारे प्रत्येक उपक्रम का पवित्र श्वास है। इसी कारण निष्कलंक ईमानदारी, स्पष्टता एवं निर्दोष पारदर्शिता ही हमारी सशक्त पहचान है।

मंडल ने अनुशासन, ईमानदारी और आत्मसंयम को अपने कार्य का मूलाधार बनाते हुए एक सुदृढ़ आचार-संहिता अपनाई, ताकि ये मूल्य सदैव अक्षुण्ण बने रहें। इतना ही नहीं, आज महाराष्ट्र के अनेक गणेशोत्सव मंडल भी इसी मार्गदर्शक आदर्श का अनुकरण करने का प्रयास कर रहे हैं। यह स्वयं मंडल की अग्रणी और प्रेरणादायी परंपरा का प्रमाण है।

यह पुस्तक सार्थक रूप से मंदिर के विविध उत्सव, श्री गणपति की दिव्य प्रतिमा की विशेषताएं, अलंकार, भक्तों के अनुभव तथा समय के साथ अपनाई गई आधुनिक तकनीक की झलक-इन सभी से अलंकृत होकर इस ग्रंथ को "श्री" की कृपा का एक स्वर्णिम अभिलेख बना देती है।

हमारे पूर्वजों द्वारा मानवता के रास्ते पर चलते हुए जो अमिट पदचिह्न निर्मित किये गए हैं, उन पर निरंतर आगे बढ़ते रहना वास्तव में शिवधनुष उठाने जैसा चुनौतीपूर्ण दायित्व है। किंतु हमें दृढ़ विश्वास है कि यह सब केवल श्री गणराय की असीम कृपा से ही संभव हो पा रहा है। यही भावना हमारे प्रत्येक कार्यकर्ता के हृदय में गहराई से रची-बसी है। इसी कारण हमारे इस पवित्र कार्य में कभी विवाद, मतभेद, कलह या राजनीति को स्थान नहीं मिला। परिणाम स्वरूप, समाज का हम पर अटूट विश्वास निरंतर सुदृढ़ होता गया और हम भी

निष्कलंक प्रतिष्ठा तथा स्वाभिमान के साथ समाज में अपना दायित्व निभा सके। हमारी यही मंगलकामना है कि सेवा, श्रद्धा और विश्वास की यह अविरल परंपरा कालचक्र के साथ इसी प्रकार अनवरत आगे बढ़ती रहे। श्री गणराय के श्रीचरणों में यही हमारी मनः पूर्वक प्रार्थना है।

यह केवल एक संग्रहणीय पुस्तक नहीं, बल्कि लाखों श्रद्धालुओं की आस्था, कृतज्ञता और निरंतर प्रवाहित मानव सेवा की अब तक की गौरवशाली यात्रा का एक आदर्श प्रस्तुतीकरण है।

श्रीमंत दगडूशेठ हलवाई
सार्वजनिक गणपति ट्रस्ट

श्रद्धा का दीपस्तंभ

पुणे में उस समय के प्रतिष्ठित एवं सुप्रसिद्ध व्यापारी के रूप में विख्यात श्रीमंत दगडूशेठ हलवाई समाज के एक सम्मानित व्यक्ति थे। वे पुणे के प्रथम शेरिफ (महापौर) थे।

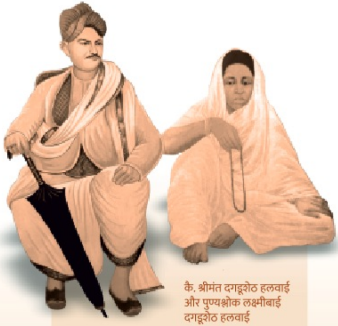

कै. श्रीमंत दगडूशेठ हलवाई और पुण्यश्लोक लक्ष्मीबाई दगडूशेठ हलवाई

सन १८९६ के आसपास प्लेग जैसी भीषण महामारी का प्रकोप फैल गया था और चारों ओर हाहाकार मच गया था। हजारों परिवार उजड़ गए, अनगिनत घरों के चिराग बुझ गए। इसी महामारी में श्रीमंत दगडूशेठ हलवाई के पुत्र का भी निधन हो गया। इस असहनीय आघात ने दगडूशेठ और उनकी पत्नी लक्ष्मीबाई को भीतर तक झकझोर दिया; वे शोक से पूरी तरह टूट गए।

॥ योगभ्यानन्द श्रीसद्‌गुरु माधवनाथ महाराज ॥

इसके कुछ ही महीनों बाद श्रीमंत दगडूशेठ हलवाई का भी निधन हो गया। ऐसी विषम परिस्थिति में उनकी पत्नी लक्ष्मीबाई को संभालने और उन्हें धैर्य देने के लिए उनके सद्‌गुरु श्री माधवनाथ महाराज आगे आए। उन्होंने लक्ष्मीबाई को भक्तिमार्ग का आश्रय लेने का उपदेश देते हुए कहा - "श्री दत्तात्रेय और श्री गणेश की उपासना करो तथा उनकी सेवा में ही अपने जीवन की नई दिशा खोजो। जैसे संतान बड़ी होकर अपने माता-पिता का नाम गौरवान्वित करती है, उसी प्रकार ये आराध्य देव भी तुम्हारे कुल का यश और प्रतिष्ठा बढ़ाएंगे।"

सद्गुरु के इस आशीर्वाद से लक्ष्मीबाई ने संगमरमर की श्री दत्तात्रेय की प्रतिमा बनवाई। श्री गणेश की प्रतिष्ठापना तो पहले ही हो चुकी थी। इन दोनों आराध्य देवों की प्रतिष्ठापना के साथ एक नयी आध्यात्मिक यात्रा का शुभारंभ हुआ। तभी से भक्ति, निष्ठा और समर्पण की जो ज्योति प्रज्वलित हुई, वह आगे चलकर एक महान आध्यात्मिक परंपरा का आधार बनी।

समय के साथ यह गणेश उत्सव निरंतर आगे बढ़ता गया। श्रीमंत दगडूशेठ हलवाई के निधन के बाद भी यह परंपरा उसी श्रद्धा और भक्ति के साथ चलती रही। धीरे-धीरे यह उत्सव पूरे क्षेत्र की आस्था का केंद्र बन गया और व्यापारी समाज तथा स्थानीय नागरिकों ने निस्वार्थ भाव से इसमें अपना सहयोग देना शुरू किया। फिर वर्ष १९५२ में एक ऐतिहासिक मोड़ आया। इस गौरवशाली उत्सव की जिम्मेदारी तात्या गोडसे, मामा रासने, आप्पा सूर्यवंशी, बुवा रासने और उनके 'सुवर्णयुग तरुण मंडल' को सौंपी गई। वर्षों की समर्पित सेवा के बाद उन्हें यह दायित्व मिला। उनके पास इस परंपरा को निभाने के लिए श्रीकोष में कुल राशि मात्र तीन सौ रुपये थी, लेकिन तात्या और उनके सहकर्मियों के उत्साह, अटूट विश्वास और समाज का सहयोग ही उनकी सबसे बड़ी पूंजी थी। उन्होंने संकल्प लिया कि श्री गणेश की महिमा विश्व के कोने - कोने तक तक पहुंचायेंगे। वर्ष १९६७ के अमृत महोत्सव में यह संकल्प सर्वोच्च शिखर पर पहुंच गया, जहां २५,००० रुपये का लक्ष्य रखा गया था, वहीं पुणेवासियों के अपार स्नेह से ४०,००० रुपये का सहयोग प्राप्त हुआ। इसके बाद यह गणेशोत्सव केवल एक मंदिर

तक सीमित न रहकर जन-जन की आस्था का पर्व बन गया। वर्ष १९८४ में श्रीमंत दगडूशेठ गणपति वर्तमान स्थान पर एक बहुत ही छोटे से मंदिर में विराजमान हुए बस, इसी क्षण से मंदिर परिसर का मानो भाग्योदय ही हो गया और इस क्षेत्र में व्यापार में वृद्धि, संस्कृति विकास और धार्मिक चेतना, श्रद्धा के उद्गम का नया अध्याय प्रारंभ हुआ...जैसे एक नई बहार आ गई हो - और श्रीमंत दगडूशेठ हलवाई सार्वजनिक गणपति ट्रस्ट श्रद्धा, आस्था के साथ सेवा भाव का प्रतीक बन गया। इसके पीछे का सच्चा कारण था ट्रस्ट की पारदर्शिता, अनुशासन, विश्वसनीयता, निस्वार्थ सेवा, और कार्यकर्ताओं की अथक मेहनत।

आज इस संपूर्ण यात्रा पर दृष्टि डालने पर स्पष्ट होता है कि एक सद्गुरु के मार्गदर्शन और लाखों भक्तों के हाथों समृद्ध हुई यह अक्षय श्रद्धा सजीव होकर समर्पण के साथ इस पुण्यभूमि में समाहित भक्ति-भाव का एक अद्वितीय उदाहरण बन चुकी है।

एक प्रेरणादायक यात्रा

अत्यंत साधारण परिवार से आए तात्यासाहेब का जीवन संघर्ष और कर्मठता का प्रेरक उदाहरण था। फूलों की दुकान

में माला पिरोने, पान की टपरी चलाने और बैंक में चपरासी के रूप में कार्य करने से लेकर समाज सेवा तक का उनका सफर असाधारण रहा। सीमित शिक्षा के बावजूद उनमें अद्भुत नेतृत्व क्षमता थी। मात्र पंद्रह वर्ष की आयु में उन्होंने 'सुवर्णयुग तरुण मंडल' की स्थापना की और अपने समर्पित कार्यकर्ताओं का मजबूत समूह तैयार किया।

उस समय श्रीमंत दगडूशेठ हलवाई का गणपति बुधवार पेठ स्थित उनकी गली में स्थापित किया जाता था।

तात्यासाहेब और 'सुवर्णयुग' के कार्यकर्ता पूरे समर्पण के साथ गणपति उत्सव में सहयोग करते थे। वर्ष १९५२ में गणपति उत्सव की संपूर्ण जिम्मेदारी 'पंच मंडल' से 'सुवर्णयुग तरुण मंडल' को सौंप दी गई।

स्व. प्रतापराव बाबुराव गोडसे (तात्या)
संस्थापक अध्यक्ष

स्व. दिगंबरराव केशवराव रासने
संस्थापक उपाध्यक्ष

स्व. शंकरराव शिवराम सूर्यवंशी
संस्थापक कोषाध्यक्ष

स्व. काशीनाथ दत्तात्रय रासने
संस्थापक सरचिटणीस

तात्यासाहेब पर बड़ी जिम्मेदारी थी, जिसे निभाने में उनके साथी मामा रासने, आप्पा सूर्यवंशी और बुवा रासने उनके प्रमुख सहयोगी बने।

आप्पा सूर्यवंशी और बुवा रासने साधारण सरकारी कर्मचारी थे। दिनभर की नौकरी के बाद वे प्रतिदिन अपने कार्यकर्ताओं के साथ मिलकर पूरे समर्पण से गणपति उत्सव की तैयारियों में जुट जाते थे।

आर्थिक स्थिति साधारण थी और आय इतनी ही थी कि किसी तरह जीवनयापन हो सके। लेकिन सपने बेहद बड़े थे - गणपति उत्सव विश्वभर में पहुंचे, स्थायी गणेश मंदिर बने और वर्षभर दर्शन की व्यवस्था हो। ऐसी सामान्य परिस्थितियों में इतने विराट संकल्प केवल अटूट श्रद्धा, अदम्य इच्छाशक्ति और भगवान गणेश की कृपा से ही संभव हो सकते थे।

बी.ए., एल.एल.बी. शिक्षित आप्पा सूर्यवंशी ने तात्यासाहेब के विचारों को स्पष्ट दिशा दी, जबकि बुवा रासने ने कार्यप्रणाली में अनुशासन स्थापित किया।

इन तीनों के प्रयासों से उत्सव में अनुशासन और पारदर्शिता की मजबूत परंपरा स्थापित हुई। चंदे के प्रत्येक रुपये का ईमानदारी से उपयोग होने के कारण 'दगडूशेठ गणपति' का नाम श्रद्धा के साथ-साथ विश्वास का भी प्रतीक बन गया।

लोकमान्य तिलक के जनजागरण और देश की स्वतंत्रता के उद्देश्य पूर्ण होने के बाद गणपति उत्सव को नई दिशा देने की आवश्यकता महसूस होने लगी।

तात्यासाहेब के सामने सबसे बड़ी चुनौती यह थी कि गणपति उत्सव केवल दस दिनों तक सीमित न रहे, बल्कि जन-जन का गणपति बने। उनकी दूरदृष्टि इसी दौर में स्पष्ट होने लगी। गणेशपूजन, प्रातःकालीन शहनाई वादन तथा सौ. अलकाताई पेंडसे के भजन जैसे अनेक धार्मिक कार्यक्रम प्रारंभ किए गए।

श्रीमंत दगडूशेठ हलवाई गणपति मंडल वार्षिक आय-व्यय का सार्वजनिक रूप से विवरण प्रस्तुत करने की परंपरा शुरू करने वाला पहला गणपति मंडल बना।

इस मंडल ने उत्सव की शोभायात्रा में गुलाल उड़ाने की प्रथा समाप्त कर पर्यावरण-अनुकूल, सुसंस्कृत और संयमित उत्सव मनाने का संदेश दिया। इस निर्णय ने सामाजिक जिम्मेदारी की भावना को भी स्पष्ट रूप से रेखांकित किया।

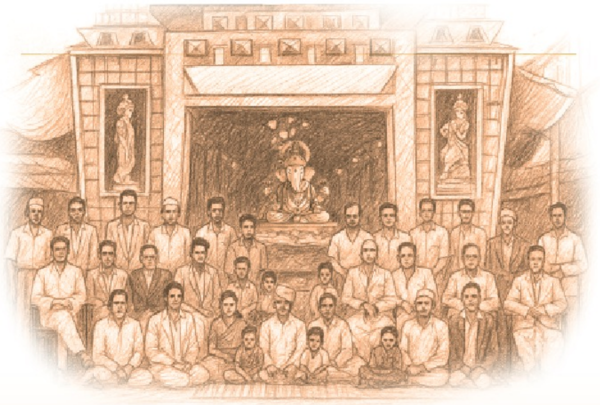

१९६७ का अमृत महोत्सव इस यात्रा का निर्णायक मोड़ साबित हुआ। २५ हजार रुपये चंदा इकट्ठा करने का लक्ष्य न केवल पूरा हुआ, बल्कि कुल ४० हजार रुपये इकट्ठे हो गए। अब यह उत्सव की सीमाओं से आगे बढ़कर वास्तव में 'जन-जन का गणपति' बन चुका था।

उस समय राज्य की स्थिति और सामाजिक-शैक्षणिक मुद्दों सहित अनेक विषयों पर समाज में जागरूकता फैलाने के उद्देश्य से व्याख्यानमालाओं का आयोजन शुरू किया गया था।

बच्चों के लिए आसपास के क्षेत्र में मुफ्त कक्षाओं और प्रशिक्षण हेतु शिक्षा कक्षाएं शुरू की जाने लगीं। समय बदल रहा था और उसका प्रभाव उत्सव पर भी पड़ रहा था। १९८४ में मंडल ने संगीत महोत्सव की शुरुआत की।

१९९२ में यह शताब्दी वर्ष का उत्सव होने के कारण उस वर्ष इसे दस दिनों तक सीमित न रखकर पूरे ५७ दिनों तक आयोजित किया गया। इस दौरान देश के श्रेष्ठ कलाकारों ने यहाँ आकर अपने गायन और वादन की प्रस्तुतियाँ दीं।

शून्य से विश्व निर्माण की ओर

आज श्रीमंत दगडूशेठ गणपति उत्सव मंडल को एक समृद्ध, सुसंपन्न और सुदृढ़ संस्था के रूप में देखा जाता है। लोग भी इसका विशेष रूप से उल्लेख करते हैं। लेकिन इस सफलता के पीछे की कठिन यात्रा के अवलोकन से यह स्पष्ट हो जाता है कि इसकी जड़ों में क्या समाहित है।

कार्यकर्ताओं की निरंतर मेहनत, श्रद्धा और सेवाभाव से किया गया दिन-रात का संघर्ष, व्यवहार में निष्कलंक पारदर्शिता, जनसमुदाय का अर्जित अटूट विश्वास और मानव सेवा का दीप लेकर आगे बढ़ती जीवन-यात्रा - यह सब तो है ही, लेकिन इन सभी गुणों की परंपरा का पिछली पीढ़ियों ने जो बीजारोपण और अंकुरण किया, आज के कार्यकर्ता भी उसका पालन और संवर्धन कर रहे हैं - यह एक निर्विवाद सत्य है।

मंदिर परिसर का विचार करते ही मन में कई प्रश्न उभरते हैं। एक ओर पुणे की बड़ी व्यस्त मंडी है - जो यातायात में भारी अवरोध पैदा करती है।

दूसरी ओर वेश्यावृत्ति का इलाका, साथ ही शराब और जुए जैसी लतों में फंसती युवा पीढ़ी... ऐसे कठिन वातावरण में स्वयं को संभालते हुए, संघर्ष के रास्ते पर चलते हुए, अपने पैरों पर खड़े होकर आज हमारे कार्यकर्ता सात्त्विकता, आध्यात्मिकता और मानवधर्म के लिए समर्पित हैं, यह दृश्य सच में तृप्तिदायक है। इनमें से अधिकांश कार्यकर्ता बेहद साधारण सामाजिक- आर्थिक पृष्ठभूमि से हैं - दिहाड़ी मजदूर भी, जो रोज़ काम मिले तभी उनके घर में चूल्हा जलता है। कोई फूल बेचता है, कोई गजरा बनाता है, कोई सब्जी बेचता है, तो कोई घरों में सेवा कार्य करके जीवनयापन करता है। ऐसी कठिन जीवन शैली के बावजूद वे गणेशोत्सव मंडल के कार्य में पूरी तरह समर्पित रहते हैं, जो सामान्य बात नहीं है।

उत्सव के दौरान वे ३६ से ४० घंटे तक निरंतर भूख-प्यास भुलाकर, अपने सुख-दुःख को पीछे रखकर, बिना किसी को कष्ट दिए सेवा करते हैं - ऐसे कार्यकर्ता धन्य हैं!

परिस्थितियों की आंधियों से लड़े, प्रलोभन के क्षण आए, गलत काम करने के अवसर भी थे... फिर भी किसी भी लालच के आगे न झुकना - यह तो केवल गणपति बाप्पा के आशीर्वाद और पिछली पीढ़ियों के संस्कार से ही संभव है।

श्रीमंत दगडूशेठ हलवाई गणपति मंडल का जुनून 'पारदर्शकता' और 'विश्वास' है। हमारे पास आने वाला प्रत्येक रुपया हमारा नहीं होता - वह श्री गणेश और मानव कल्याण के लिए होता है। हम तो केवल उस धन के संरक्षक हैं। इसलिए हर रुपये का सही उपयोग सुनिश्चित करने से कभी भी कोई समझौता नहीं किया जाता। इसी कारण आज यह मंडल 'निष्कलंक' कहलाता है।

यदि सभी इसी पारदर्शिता, सेवाभाव, कठोर परिश्रम और सुसंस्कृत संस्कारों से मार्गाक्रमण करें, तो "शून्य से विश्व निर्माण" केवल एक अलंकारिक वाक्य नहीं रहेगा, बल्कि एक जीवंत अनुभव बन जाएगा। और उसी क्षण इस ग्रंथपुष्प का उद्देश्य भी साध्य हो जाएगा।

श्री गणेश की गौरवशाली विरासत

सन १८९३ से सार्वजनिक गणेशोत्सव मनाने वाला "श्रीमंत दगडूशेठ हलवाई गणपति सार्वजनिक ट्रस्ट" पुणे के प्राचीन और प्रतिष्ठित मंडलों में से एक है। जैसे नामकरण में परंपरा की छाप दिखाई देती है, मूर्तियां बनने की यात्रा में भी समय के साथ हुए परिवर्तनों की रोचक कहानी इसमें छिपी हुई है। शुरुआत में नगरसेठ दगडूशेठ हलवाई ने १८९३ में कोतवाल चावड़ी में "बाहुली के हौद" (गुड़िया का हौद) के पास पुणे से गणेशोत्सव की शुरुआत की। उनके निधन के उपरान्त उनकी पत्नी ने वही मूर्ति गली के लोगों को सौंप दी। आगे अमृत महोत्सव के बाद मंडल का ट्रस्ट में रूपांतरण हुआ और संस्थापकों की स्मृति में इसे "श्रीमंत दगडूशेठ हलवाई" नाम दिया गया।

१८९३: पर्यावरण पूरक मूर्ति से शुरुआत

नानासाहेब खाजगीवाले ने ग्वालियर में देखे गणेशोत्सव से प्रेरित होकर सार्वजनिक उत्सव की अवधारणा श्री लोकमान्य तिलक जी को बताई। पुणे के मान्यवरों की बैठक में १८९३ में शहर में पांच स्थानों पर उत्सव मनाने का निर्णय लिया गया। इस उपक्रम को भारी प्रतिसाद मिलने के बाद तिलक जी ने दैनिक केसरी के माध्यम से इसे व्यापक रूप देने का आह्वान किया।

उसी वर्ष दगडूशेठ हलवाई ने कोतवाल चावड़ी, पुणे में कागज़ की लुगदी से बनी पर्यावरण-अनुकूल गणेश मूर्ति स्थापित की। श्री नाईक द्वारा निर्मित यह चतुर्भुज, सुखासन में विराजमान गणेश मूर्ति भक्तों की रक्षार्थ पाश-परशु युक्त होकर अत्यंत प्रसन्न मुद्रा में थी। गुलामी के काल में प्रचलित योद्धा-गणेश स्वरूप के बजाय आशीर्वादमयी मूर्ति का चयन उनकी सोच-समझकर की गई संकल्पना थी।

यह पहली मूर्ति ही सतत तीन वर्षों तक स्थापित की गई और आज भी परांजपे जी के "अकरा मारुति मंदिर", पुणे में जतन की हुई है।

१८९६ की श्री गणेश मूर्ति

१८९६ में श्रीमंत दगडूशेठ के निधन के बाद उनकी पत्नी ने पहली मूर्ति की तरह ही दूसरी मूर्ति मूर्तिकार नाईक जी से बनवाई और उसे गली के लोगों के सुपुर्द करते हुए उत्सव की परंपरा जारी रखी। इसलिए १८९७ से बाहुली के हौद, पुणे का यह गणेशोत्सव समाज के योगदान से मनाया जाने लगा।

१९५२ में यह उत्सव गली के कतिपय व्यापारियों और तात्यासाहेब गोडसे, मामासाहेब रासने, शंकरराव सूर्यवंशी, काशिनाथराव रासने, लक्ष्मणराव जमदाडे, गजानन केदारी, निवृत्तीराव रायकर, बाळकृष्ण जमदाडे और दत्तोबा चव्हाण के नेतृत्व में सम्पन्न होने लगा। यही दूसरी मूर्ति मंडल के अमृत महोत्सव तक, अर्थात १९६७ तक स्थापित की जाती रही।

अमृत महोत्सव के समय गणेश मूर्ति का एक हाथ टूटने की स्थिति तक कमजोर हो जाने के कारण नई मूर्ति की आवश्यकता महसूस हुई। पुरानी मूर्ति का विसर्जन न करते हुए उसकी मरम्मत कर उसे संरक्षित किया गया। आज यह ऐतिहासिक दूसरी मूर्ति ट्रस्ट के कोंढवा स्थित "बाल संगोपन केंद्र", पुणे के गणेश मंदिर में भव्य रूप से विराजमान है।

भारत-चीन युद्ध की पृष्ठभूमि में युद्ध पर आधारित चलायमान 'चलचित्र दृश्य' प्रस्तुत करने वाला यह पहला मंडल बना। इस अभिनव पहल के बाद अन्य उत्सव मंडलों ने भी चलचित्र दृश्य प्रस्तुत करना शुरू किया।

१९६८ की "लड्डों से पाली" मूर्ति

अमृत महोत्सव के बाद नई मूर्ति निर्माण पर चर्चा शुरू होने पर मंडल के उपाध्यक्ष डॉ. बाळासाहेब परांजपे ने बी.जे. मेडिकल कॉलेज में कार्यरत, मूर्ति-निर्माण में निपुण नागेश शिल्पी का नाम सुझाया। नागेश शिल्पी ने यह कला अपने पिता शंकरप्पा शिल्पी से प्राप्त की थी। नागेश शिल्पी द्वारा महाविद्यालय के लिए निर्मित नटराज मूर्ति का अवलोकन कर उन पर विश्वास किया गया।

पुरानी मूर्ति का फोटो देकर उन्हें पहले एक फुट ऊंची नमूना मूर्ति बनाने के लिए कहा गया। तैयार मूर्ति "आर्यन टॉकीज", पुणे में गली के प्रतिष्ठित नागरिकों को दिखाई गई और उसे सर्वसम्मति से मंजूरी मिल गई। इसके बाद उसी स्वरूप में बड़ी मूर्ति बनाने का कार्य नागेश शिल्पी को सौंपा गया।

नागेश शिल्पी दक्षिण भारतीय शैली के निपुण कलाकार थे। उन्होंने ही तिरुपति बालाजी, चामुंडेश्वरी आदि की मूर्तियाँ बनाई थीं। उन्होंने गणेश मूर्ति के पेट में सिद्ध गणेश यंत्र स्थापित करने का प्रस्ताव रखा। उनके अनुसार - इससे दक्षिण भारत में मूर्ति 'जागृत देवस्थान' के रूप में मान्यता प्राप्त करती है। यह सुझाव मंडल ने तुरंत स्वीकार कर लिया।

इसके अनुसार ताम्रपत्र पर तैयार किए गए यंत्र को मंत्रपाठ और होम संस्कारों से सिद्ध किया गया। सूर्यग्रहण के दिन मुळा-मुठा नदियों के संगम में खड़े होकर नागेश शिल्पी ने इस यंत्र को मूर्ति के पेट में प्रतिष्ठापित किया। अगले बारह महीनों तक मूर्ति पर रुद्री पाठ और धार्मिक विधियां की

जाती रहीं। २७ अगस्त १९६८ को प. पू. श्री गुळवणी महाराज के पावन करकमलों से इस नवीन मूर्ति की शास्त्रोक्त प्राणप्रतिष्ठा विधिवत् संपन्न हुई। और दगडूशेठ गणपति के इतिहास में एक नया अध्याय शुरू हुआ। हमारे देश में मिट्टी की मूर्ति स्थापना मंदिर में स्थायी रूप से करने की परंपरा बहुत कम देखने को मिलती है - दगडूशेठ हलवाई गणपति का मंदिर उनमें एक उल्लेखनीय अपवाद है। पहला मंदिर १९८४ में बुधवार पेठ में, बुधवार चौक के हौद, पुणे के पास बनाया गया। बढ़ती श्रद्धालु संख्या के कारण उसके पास ही की भूमि पर एक भव्य और विस्तारित मंदिर २००६ में बनाया गया।

नेत्रांगन

श्रीमंत दगडूशेठ हलवाई गणपति के गर्भगृह में प्रवेश करते ही, प्रथम दर्शन में ही वह मनोहारी, ऐश्वर्यपूर्ण और मनमोहिनी मूर्ति श्रद्धालु के अंतर्मन को मंत्रमुग्ध कर देती है और शरीर रोमहर्षित हो उठता है। जब हम कुछ क्षण ठहरकर श्री गणराय के दिव्य मुखमंडल का दर्शन करते हैं, तब उनकी आंखों से झलकता प्रेम, करुणा और दिव्य तेज सीधे हमारे अंतःकरण को स्पर्श कर जाता है। उस अलौकिक अनुभूति में हमारी आंखें भी अनायास ही श्रद्धा और आनंद के अश्रुओं से भर उठती हैं।

सोचिए - गर्भगृह के किसी भी कोने में खड़े हो जाइए; दाएं, बाएं या बीच में... उन भावपूर्ण आंखों की दृष्टि हमेशा जैसे हम पर ही स्थिर रहती है। भीड़ में एक क्षणिक दर्शन में भी अनेक भक्तों को यह अनुभव होता है - गणराया मानो हम पर ही दृष्टि रखे हुए हों, प्रेम और आशीर्वाद की भावना के साथ। कुछ भक्त तो कहते हैं कि उत्सव के जुलूस में बस कुछ क्षणों के ही दर्शन मात्र से बाप्पा के उस भावपूर्ण दृष्टिपात से ही मन कृतार्थ हो जाता है।

जैसे कि उन आंखों के माध्यम से गणराय प्रत्येक भक्त को यह संदेश देते हैं "तुम कर्म करो, सत्य के मार्ग पर चलो, सर्वजनहिताय विचार करो, फिर मैं तुम्हारे साथ हुं। मेरी दृष्टि सदा तुम पर है ही ।" वह केवल देने के लिए ही विराजमान हैं, बिना किसी अपेक्षा के। यह प्रश्न मन में उठता है कि इतने अद्भुत, भावपूर्ण नेत्र किसने बनाए होंगे? यह कैसे संभव हुआ होगा? इस उत्सुकता के कारण मैंने मंडल के कुछ माननीय सदस्यों से चर्चा शुरू की, और जो जानकारी सामने आई उसे सुनकर मैं आश्चर्य चकित हो गया। मूर्ति बनाते समय सर्वसम्मति से यह निर्णय लिया गया कि बाप्पा की आंखें सर्वस्वी परिपूर्ण, अत्यंत सुंदर और जीवंत प्रतीत होनी चाहिएं। यह जानते हुए कि मिट्टी या मार्बल में इतनी प्रभावशाली चमक नहीं आ सकती, एक विशिष्ट कांच से आंखें बनाने का निर्णय लिया गया।

इसके लिए उपयुक्त कलाकार की खोज कई दिनों तक जारी रही। कुछ लोगों ने नमूने भी तैयार किए। अंततः सभी की सहमति से यह नाज़ुक और अत्यंत कौशल्यपूर्ण कार्य महामुनी नामक एक वरिष्ठ कारीगर को सौंपा गया।

कार्य शुरू हुआ - पहले रेखांकन, फिर नमूने बनाए गए। लेकिन यह काम न केवल कठिन था, बल्कि अत्यंत सूक्ष्म भी था, क्योंकि कांच की आंखों पर रंग भीतर की ओर से करना पड़ता था; तभी उनमें प्राकृतिक होने का एहसास, गहराई और दिव्य भाव प्रकट हो सकते थे।

पहले २५-३० प्रकार बनाए गए, लेकिन संतोष नहीं हुआ। फिर १०-१५ और नमूने तैयार किए गए। इसी तरह एक के बाद एक कुल लगभग ३५० अलग-अलग नमूने बनाए गए। कई दिनों की मेहनत, जागरण और सुधार के बाद अंततः एक विशेष प्रकार की आंखें सभी को पसंद आईं। उसी क्षण कलाकारों सहित सभी की आंखों में संतोष और आनंद अश्रु भर आये - यही उनकी सच्ची सफलता थी। आज हम जो आंखें देखते हैं, वे उस समय की अहर्निश तपस्या का फलित ही तो है। लेकिन वास्तव में, इतने सुंदर, इतने जीवंत और इतने भावनापूर्ण नेत्रों के निर्माण के पीछे एकमात्र कारण है - स्वयं गणराय के आशीर्वाद।

"नेत्री दोन हिरे, प्रकाश पसरे, अत्यंत ते साजिरे" - गोसावीसुत वासुदेव के इस मराठी श्लोक का दिव्य वर्णन या सही भाषांतर तो संभव ही नहीं है, किन्तु इसमें जो भाव है वो यह है कि "ये दो हीरे जैसे नेत्र, जिनकी दिव्य आभा से मानो समूची सृष्टि का आकर्षण साकार हो उठता है"; जो मानो शिल्पकार के अंतःकरण में ही उतर आया था। इसलिए गणराय के नेत्रों में जड़े उस हीरे जैसे तेज को देख कर ऐसा अनुभव होता है कि यह कारीगर सिर्फ आंखें गढ़ नहीं रहा था, बल्कि उस श्लोक में उभरते प्रकाश को ही साकार कर रहा था। उन दो तेजस्वी आंखों में छिपी दिव्य आभा इतनी मंत्रमुग्ध कर देने वाली है कि अनायास ही विचार आता है - कारीगर ने इन नेत्रों का निर्माण करते समय मानो उस श्लोक को ही अपनी सांसों में समाहित कर लिया हो।

गरुड़ सी उड़ान

उस समय देश देशांतर्गत पर्यटन के शुरुआती दौर से गुजर रहा था। अपने राज्य के लोग मंदिर दर्शन, तीर्थयात्रा और आध्यात्मिक स्थलों के पुण्य दर्शन और पुण्य संचय हेतु दूसरे राज्यों में जाने लगे थे। लेकिन "श्रीमंत दगडूशेठ हलवाई गणपती मंडल" के ट्रस्टियों के मन में एक प्रश्न लगातार बना रहता था की -आर्थिक मर्यादाओं की वजह से अपने आसपास के कई लोगों के लिए ऐसी यात्राएं करना संभव नहीं है। और इसी भावना से कि "हमें ही कुछ करना चाहिए", एक अनोखी पहल ने आकार लिया।

यहीं पर, लोगों को अपने ही शहर में रहकर विभिन्न तीर्थस्थलों के दर्शन करवाना, संतोष प्राप्त करवाना - और इसकी भी निःशुल्क व्यवस्था करना; यह अत्यंत उदात्त विचार आगे आया। इसी कल्पना से देश के अनेक प्रसिद्ध देवस्थानों और तीर्थक्षेत्रों की अद्भुत, जीवंत प्रतीत होने वाली प्रतिकृतियां मंडल द्वारा गणेशोत्सव के १० दिनों के दौरान प्रदर्शित करने के लिए बनाई जाने लगीं। एक से बढ़कर एक सुंदर, भव्य और आकर्षक प्रतिकृतियों की यह परंपरा वर्षों से निरंतर चली आ रही है।

इसमें हवा महल (राजस्थान), सूर्य मंदिर (कोणार्क), पशुपतिनाथ मंदिर (नेपाल), श्रीराम मंदिर (अयोध्या), मीनाक्षी मंदिर (मदुरै) जैसे अनेक तीर्थस्थलों की प्रतिकृतियां बनाई गईं। हमारे मंडल के पदचिह्नों पर चलते हुए अनेक उत्सव मंडलों ने भी ऐसे अभिनव उपक्रमों की शुरुआत की और आज पुणे का गणेशोत्सव विश्व मानचित्र पर गर्व से 'चमक' रहा है। ट्रस्टियों के इस विचार की "गरुड़ सी उड़ान" ने पुणे में होने वाले गणेश उत्सवों का पूरा स्वरूप ही बदल दिया और उन्हें एक नई भव्यता प्रदान की।

उत्सव में चयनित स्थानों के स्थापत्य के मूल रूप को यथार्थ साकार करने के हेतु से तात्या स्वयं शिल्पकारों और कारीगरों को संबंधित स्थानों पर ले जाया करते थे।

जनमानस की सोच और उससे उत्पन्न होने वाले अवसर-ये दो तत्व जहां एक साथ आए, वहां श्रद्धा से आगे बढ़कर समाजकार्य और सृजनशीलता के नए द्वार खुल गए। विचारों की यह परिपक्वता, जिसे हम 'दिव्यदृष्टि' कहते हैं, क्या यही है? क्या उन ट्रस्टियों को यह अंदाज़ा रहा होगा कि आने वाले १०० वर्षों में क्या होने वाला है? कौन जानता है।

उस समय उभरे एक विचार ने आज राज्य में गणेशोत्सव के दस दिनों में अरबों रुपये के कारोबार को चालना दी है। यह सत्य है और इसमें संख्यात्मक वृद्धि भी देखी जा रही है।

इस यात्रा का सर्वोच शिखर १९९२ में मनाया गया शताब्दी महोत्सव था और उस अवसर पर बीकानेर के राजप्रासाद की भव्य प्रतिकृति का निर्माण किया गया। यह निर्माण वास्तव में "गरुड़ की उड़ान" जैसा था, जिसमें एकड़ों के विस्तीर्ण क्षेत्र में निर्माण करके इस प्रकार की प्रतिकृति बनाना मानो साक्षात शिवधनुष को उठाने जैसा था। क्योंकि हमारा अनुमान था कि लाखों भक्त इसे देखने अवश्य आएंगे, लेकिन अनुमान से कई गुना अधिक भक्तों ने इसका लाभ लिया।

संगीत सम्राज्ञी लता मंगेशकर के हाथों इस राजमहल में स्थापित फव्वारे का उद्घाटन किया गया। इस भव्य निर्माण कार्य की शुरुआत तीन-चार महीने पहले ही हो चुकी थी, जिसमें सैकड़ों मजदूर और कलाकार दिन-रात मेहनत कर रहे थे। इससे परियोजना से कई लोगों को रोजगार के अवसर मिले और कई कलाकारों को अपनी कला प्रस्तुत करने के लिए एक मंच प्राप्त हुआ। बदलते समय के साथ तकनीक का भरपूर उपयोग किया गया, जिससे यह दृश्य वास्तविक राजमहल जैसा दिखाई देने लगा।

उत्सव के दौरान आसपास के क्षेत्र के व्यापारियों का व्यापार रिकॉर्ड स्तर पर हुआ।

इतने बड़े पैमाने परियोजना के विस्तार को निर्धारित समय में पूरा करना अत्यंत कठिन कार्य था। लेकिन सभी कार्यकर्ताओं की इच्छाशक्ति और गणराय की कृपा से सब कुछ सुचारु और निर्विघ्न रूप से सम्पन्न हुआ और मंडल की प्रतिष्ठा के मुकुट में किलंगी स्वरूप सम्मान का एक और पंख जुड़ गया। लाखों भक्तों ने इस अनोखी कलाकृति का प्रत्यक्ष दर्शन किया और अनेक गणमान्य व्यक्ति देश-विदेश से विशेष रूप से आकर इस अद्वितीय उपक्रम की सराहना कर गए। उस काल में इतना बड़ा आयोजन "न भूतो, न भविष्यति" ही तो था।

समय के साथ परिस्थितियां बदलती गईं। देश में कुछ दुर्भाग्यपूर्ण घटनाओं के कारण 'सुरक्षा' एक गंभीर मुद्दा बन गया। इसी पृष्ठभूमि में, २०११ से "श्रीमंत दगडूशेठ हलवाई सार्वजनिक गणपति मंडल" ने उत्सव के दौरान दर्शन हेतु आने वाले सभी भक्तों, तथा एक किलोमीटर के दायरे के हज़ारों निवासियों और दुकानदारों के लिए लगभग ५० करोड़ रुपये का बीमा संरक्षण करवाने वाला देश का पहला उत्सव मंडल बनकर एक नई मिसाल कायम की।

कितनी बड़ी ज़िम्मेदारी! कितनी आत्मीयता! कितनी लोकाभिमुख सोच! यही इस मंडल की विलक्षण विशिष्टता है - श्रद्धा, सेवा और संवेदना का अभिनव संगम, इसी कारण हम इसे "गरुड़ सी उड़ान" कहते हैं।

शताब्दी महोत्सव के अवसर पर ट्रस्ट ने "हिंद केसरी प्रतियोगिता" सहित कबड्डी, खो-खो, मलखम्ब आदि खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन किया। इसके साथ ही नेत्र परीक्षण, सोनोग्राफी और रक्तदान शिविर, ५७ दिनों का संगीत महोत्सव, प्राध्यापक शिवाजीराव भोसले, हरी भक्त परायण उपाधि से नवाज़े हुए बाबामहाराज सातारकर और द्वारकापीठ के शंकराचार्य के प्रेरणादायक व्याख्यान तथा अखंड धार्मिक यज्ञों का आयोजन अत्यंत सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

आशा की किरण

पुणे विद्वत्ता, शिक्षा और सांस्कृतिक विरासत के लिए पूरे देश में प्रसिद्ध है। यह शहर आज सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भी अग्रणी है। लेकिन पुणे की असली पहचान उन महान विभूतियों से बनी है जिन्होंने इसे गौरवान्वित किया-लोकमान्य तिलक, गोपाळकृष्ण गोखले, महात्मा ज्योतिबा फुले और सावित्रीबाई फुले, संगीतसम्राट पं. भीमसेन जोशी, साहित्यकार पु. ल. देशपांडे और कवयित्री शांता शेळके, खगोलशास्त्रज्ञ जयंत नारळीकर, उद्योगपति शंतनुराव किर्लोस्कर व बाबा कल्याणी, तथा इतिहासकार बाबासाहेब पुरंदरे। इन महान व्यक्तित्वों के कारण पुणे की प्रतिष्ठा और भी उज्ज्वल हुई है।

कला, शिक्षा, शोध, संगीत और साहित्य जैसे अनेक क्षेत्रों के इन विशेषज्ञ व्यक्तित्वों में एक समान सूत्र है - उनकी श्रीमंत दगडूशेठ हलवाई गणपति देवस्थान के प्रति गहरी श्रद्धा है। जब इस देवता का आशीर्वाद प्राप्त है, तो पुणे की प्रगति क्यों न हो? आज विश्व मानचित्र पर अपनी पहचान बनाने वाला आधुनिक पुणे और यहां स्थित दगडूशेठ गणपति मंदिर - दोनों ने शहर के बदलते स्वरूप पर अत्यंत महत्वपूर्ण प्रभाव डाला है।

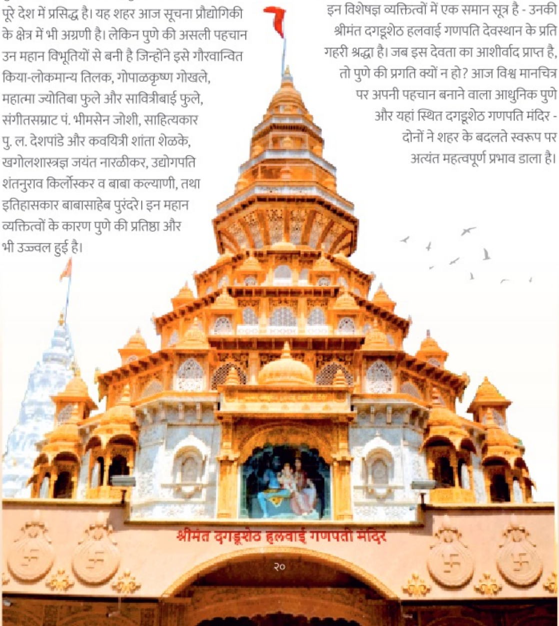

गणेशोत्सव की पवित्र परंपरा से ही इस भव्य मंदिर की स्थापना हुई है। गणेशोत्सव के दौरान भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति स्व. फखरुद्दीन अली अहमद ने स्वयं गणपति बाप्पा के दर्शन कर आरती की थी - यह उस समय की भक्तिभावना और इस उत्सव के राष्ट्रीय महत्व का अत्यंत गौरवपूर्ण क्षण था।उस समय मंडल की आर्थिक या भौतिक स्थिति बहुत सशक्त नहीं थी, लेकिन गणराय पर अटूट श्रद्धा और भक्तों के हृदय में प्रज्वलित आशा का दीप अत्यंत शक्तिशाली था। यही आशा की किरण धीरे-धीरे उज्ज्वल होती गई, भक्ति विश्वास में परिवर्तित हुई और उसी विश्वास ने इस मंदिर को मूर्त रूप दिया। गणराय के प्रति असीम श्रद्धा, भक्तों के अपार प्रेम और निरंतर सेवा भाव का प्रतीक आज यह भव्य मंदिर है। आज इस मंदिर में प्रतिदिन हजारों श्रद्धालु दर्शन के लिए आते हैं, वर्ष भर करोड़ों भक्त यहां पहुंचते हैं और गणेशोत्सव के समय तो लगभग ढाई करोड़ श्रद्धालुओं की उपस्थिति से पूरा परिसर भक्तिरस से भर जाता है। इस विशाल भक्तिप्रवाह से हजारों लोगों को रोजगार के अवसर मिलते हैं, जिससे न केवल महाराष्ट्र बल्कि देश की अर्थव्यवस्था - GDP - को भी महत्वपूर्ण योगदान प्राप्त होता है।भक्ति, विश्वास, सेवा और विकास का यह अद्भुत संगम ही यह मंदिर है, जो केवल उपासना का स्थान नहीं बल्कि समाज निर्माण की प्रेरणा का केंद्र बन चुका है।

इस परिसर में हजारों लोगों को रोजगार के अवसर मिले; पर्यटकों की लगातार बढ़ती आवाजाही शुरू हुई; फूलवाले, मिठाईवाले, पूजा सामग्री के व्यापारी और विभिन्न दुकानदार - सभी के व्यवसाय फलने-फूलने लगे। एक विशाल बाजार

का निर्माण हुआ और असंख्य हाथों को काम मिला। प्रतिदिन गणपति बाप्पा के चरणों में अर्पित होने वाले हजारों नारियल, टनों फूल और प्रसाद सामग्री के पीछे अनेक किसान, परिवहनकर्ता और संबंधित वर्गों की भागीदारी रहती है। यदि गहराई से विचार करें, तो स्पष्ट होता है कि इस भक्तिभाव ने एक व्यापक और सशक्त आर्थिक श्रृंखला को जन्म दिया है।

गणेशोत्सव के दिनों में देश-विदेश से आने वाले भक्तों के कारण होटलों, रेस्टोरेंट्स, यात्री वाहनों और सेवा-उद्योगों में अत्यधिक मांग उत्पन्न होती है। एक ही मंदिर के माध्यम से इतने उद्योगों को गति मिलना एक अद्भुत बात है। स्वयं मंडल के कर्मचारियों से लेकर प्रतिदिन सामग्री आपूर्ति करने वाले विक्रेताओं तक - हजारों परिवारों की आजीविका को इस मंदिर ने सहारा दिया है। पुणे ही नहीं, बल्कि पूरे राज्य के आर्थिक विकास में इस मंदिर का महत्वपूर्ण योगदान स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

“सबका साथ, सबका विकास’ का नारा देने वाले भारत के प्रधानमंत्री श्री. नरेंद्र मोदी स्वयं यहां आकर विधिवत पूजा करते हैं और मंदिर के उपक्रमों की जानकारी लेते हैं। यह इस बात का संकेत है कि यहां श्रद्धा और भक्ति से परे कुछ असाधारण घटित होता है - एक समग्र, संतुलित और समावेशी विकास।

उदाहरण के तौर पर संगीत महोत्सव को ही देखिए - दस दिनों तक चलने वाले इस वार्षिक कार्यक्रम में मंच, प्रकाश व्यवस्था, ध्वनि प्रणाली, प्रसिद्ध कलाकारों का पारिश्रमिक और सह-कलाकारों की व्यवस्था - सभी कुछ अत्यंत पेशेवर और उदार भाव से किया जाता है। मंदिर परिसर में सुबह से रात तक भक्तों की भारी भीड़ हमेशा बाजार को जीवंत और चहल-पहल से भरा रखती है। ऐसा ही हर पहलू में देखने को मिलता है। श्रद्धा, अध्यात्म और मानव धर्म के साथ-साथ व्यावहारिक जीवन में संतुलन स्थापित करने वाले एक अत्यंत सुदृढ़ दीपस्तंभ के रूप में हम श्रीमंत श्री दगडूशेठ गणपति मंडल को आशा की किरण के रूप में देख सकते हैं।

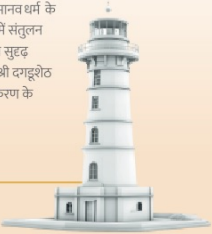

सर्वसाधारण लोगों की स्वर्णिम गाथा

१९७० के आसपास गरीब, वंचित और समाज के निचले तबके के लोगों को सहायता या ऋण के लिए बैंकों में भी जगह नहीं मिलती थी। यह सामाजिक असमानता तात्याजी के मन को गहराई से कचोटती थी। एक दिन वे यशवंतराव चव्हाण का 'सहकार से सर्वसामान्य का उत्थान' भाषण सुनने गए। उस विचारधारा ने उन्हें पूरी तरह प्रभावित कर दिया। उन्होंने यह दृढ़ संकल्प लिया कि गरीबों को आर्थिक शक्ति देने के लिए एक सहकारी बैंक स्थापित किया जाए। इस विचार को लेकर उन्होंने मामा रासने, आप्पा सूर्यवंशी, बुवा रासने और उल्हास शेडगे के साथ चर्चा की और सभी मिलकर इस कार्य में जुट गए।

लेकिन बैंक की स्थापना करना आसान काम नहीं था। रिज़र्व बैंक के नियमों के अनुसार सभी आवश्यक शर्तें पूरी करने के लिए बहुत मेहनत करनी पड़ी। लोगों के घर-घर जाकर बैंक का महत्व समझाना और उन्हें पांच रुपये के शेयर खरीदने के लिए प्रेरित करना पड़ा।

इन सभी प्रयासों के पीछे कोई व्यक्तिगत स्वार्थ नहीं था, बल्कि उद्देश्य केवल इतना था कि जरूरतमंद परिवारों को आर्थिक सहारा मिल सके।

इन्हीं के अथक प्रयासों से अंततः 'सुवर्णयुग सहकारी बैंक' की स्थापना हुई। यह बैंक मंडई के टपरीवालों, माथाड़ी मजदूरों, सब्जी विक्रेताओं जैसे आम लोगों का सहारा बना और धीरे-धीरे 'सर्वसामान्य का अपना बैंक' के रूप में पहचान बनाने लगा।

सुवर्णयुग सहकारी बैंक की नियोजित प्रशासकीय इमारत
बाजीराव रोड, पुणे

स्थापना के समय केवल ४५ लाख रुपये की पूंजी और मात्र १८-२० कर्मचारियों के साथ इस बैंक की शुरुआत बहुत साधारण स्तर से हुई थी। और आज स्थिति यह है कि बैंक में लगभग १७५ कर्मचारी, २३ से अधिक शाखाएं, हाईटेक प्रबंधन और करीब १५०० करोड़ रुपये का लगातार बढ़ता कारोबार है। आने वाले पांच वर्षों में पूरे महाराष्ट्र में शाखाओं का नेटवर्क फैलाने और ५००० करोड़ रुपये के कारोबार का लक्ष्य निर्धारित किया गया है।

सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि इस पूरे विस्तार के पीछे केंद्र में वही उद्देश्य है - कम आय वर्ग, महिला बचत समूह, मध्यमवर्गीय परिवार और छोटे व्यापारियों को तुरंत आर्थिक सहायता देना। यही इस बैंक की असली सामाजिक प्रतिबद्धता है।

इस यात्रा में बैंक ने कई उतार-चढ़ाव देखे और कठिन परिस्थितियों पर विजय पाई। जिनके लिए यह बैंक शुरु किया गया था, उन लाखों आम लोगों के आशीर्वाद और श्रीमंत दगडूशेठ गणपति की कृपा से यह हमेशा उनके साथ मजबूति से खड़ा रहा। वर्तमान में बैंक का नेतृत्व अध्यक्ष एवं विधायक श्री हेमंतभाऊ रासने के हाथों में है और उनके मार्गदर्शन में यह यात्रा सफलतापूर्वक आगे बढ़ रही है।

सुवर्णयुग सहकारी बैंक' की उपलब्धियों को देखें तो केवल लाभ नहीं, बल्कि सद्भावनाओं का भंडार दिखाई देता है - सैकड़ों परिवारों को मिला सहारा, अनेक बच्चों का संवरता भविष्य, अनगिनत लोगों के घर के सपने पूरे होना, छोटे-छोटे व्यवसायों का खड़ा होना, तथा महिलाओं और बचत समूहों के सशक्तिकरण के अनेक उदहरणों का अनमोल संचय इस बैंक की पहचान बन चुका है।

इन स्वर्णिम उपलब्धियों के संचय से सजी
इस संस्था का सार्थक नाम है -
'सुवर्णयुग सहकारी बैंक'।

परोपकार की अखंड ज्योति

प्रसिद्ध उद्योगपति जे.आर.डी. टाटा और रतन टाटा ने अपने जीवन में जिन मूलभूत सिद्धांतों को आधार बनाया, उनमें सबसे महत्वपूर्ण था सामाजिक प्रतिबद्धता। इसी मूलभूत सिद्धांत पर जो संस्था जीवनभर कार्यरत है, वह है "श्रीमंत दगडूशेठ हलवाई सार्वजनिक गणपति ट्रस्ट"। यह एक ऐसा गणपति मंडल है जो उपरोक्त अलिखित नियम का पालन करता है-संग्रहित आय का २५ प्रतिशत देवधर्म के लिए और ७५ प्रतिशत मानव सेवा के लिए ही खर्च किया जाता है!

शिक्षार्थी बच्चों के लिए स्कूल, युवाओं को अपना जीवन संवारने हेतु कौशल प्रशिक्षण केंद्र, छोटे बच्चों को सुरक्षित आश्रय देने वाले बाल संगोपन केंद्र, क्रियाशील तरुण पीढ़ी द्वारा उनके माता पिता होने के प्रेम से वंचित वरिष्ठ नागरिकों के लिए निर्मित आधुनिक वृद्धाश्रम - ये सभी उपक्रम मंडल की सामाजिक प्रतिबद्धता का प्रतिबिंब हैं।

स्वास्थ्य सेवा के क्षेत्र में लाखों लोगों को उपचार उपलब्ध कराने के लिए निःशुल्क जांच शिविर, जरूरतमंदों को दवाइयां, और यहां तक कि महंगी सर्जरी के लिए भी दिया जाने वाला सहयोग - यह "मानवता की सच्ची सेवा" है।

क्रीड़ा क्षेत्र में प्रतिभा को सही दिशा देते हुए, खिलाड़ियों को तैयार कर उन्हें अंतरराष्ट्रीय स्तर तक पहुंचाने का सपना साकार करने वाले उपक्रम संचालित करना, यहां तक कि विश्व कप विजेता सफल खिलाड़ियों ने भी इन सेवाओं का आधार लिया है। पृथ्वी के संरक्षण के लिए वृक्षारोपण, जलसंवर्धन और वनसंवर्धन जैसे पर्यावरण-प्रेमी उपक्रम मंडल का अभिन्न अंग बन चुके हैं।

कला और संस्कृति को जीवंत बनाए रखने के लिए गणेशोत्सव प्रतियोगिताओं तथा संगीत-कला महोत्सवों का आयोजन। अन्नदान सेवा, आपदा के समय त्वरित सहायता, जवानों के लिए शौर्यगौरव पुरस्कार - ऐसा हर अध्याय "मानवता ही सेवा धर्म है" को ही अधोरेखित करता है। आज भी नए उपक्रम, नए क्षितिज और नई संकल्पनाओं की ओर मंडल सजग है ... और उम्मीद पर खरा उतरने के लिए ऊर्जा, सामर्थ्य तथा व्यापक दृष्टि आज के मंडल की कार्यप्रणाली में स्पष्ट परिलक्षित हैं।

॥ किरणोत्सव ॥

कुछ बातें हमारी बुद्धि की समझ से परे होती हैं - इसीलिए वे चमत्कार प्रतीत होती हैं। किसी का इस पर अचल विश्वास हो या न हो, किसी को इसमें दैवी शक्ति का साक्षात् दर्शन होता हो या न होता हो; किंतु एक सत्य ऐसा है, जिसे हम अपनी आंखों से देख सकते हैं और स्वयं अनुभव भी कर सकते हैं। वह सत्य यह है कि विश्वभर के श्रद्धालुओं के आराध्य श्रीमंत दगडूशेठ गणपतिराय के दर्शन हेतु स्वयं सूर्यनारायण पधारते हैं और अपनी तेजस्वी स्वर्णिम किरणों से श्रीविग्रह का पवित्र अभिषेक करते हैं। यही है वह अद्भूत किरणोत्सव, जो श्रद्धा, आस्था के साथ ही दिव्यता का अनुपम संगम बन जाता है।

यह अद्भुत किरणोत्सव प्रतिवर्ष माघ मास में गणेश जयंती के आसपास, उत्तरायण काल में देखने को मिलता है। इस अवसर पर सूर्य की स्वर्णिम किरणें पहले श्रीगणेश की उत्सव मूर्ति के समक्ष स्थापित रजत प्रतिमा का अभिषेक करती हैं, तत्पश्चात देवी सिद्धि और देवी बुद्धि की रजत प्रतिमाओं का भी अभिषेक कर आलोकित करती हैं।

वर्ष १९८४ में निर्मित इस मंदिर के पश्चात पुणे में हुए विकास एवं तीव्र शहरीकरण और चारों ओर ऊंची इमारतों के बनने के बावजूद, आज भी इतनी चहल पहल वाले क्षेत्र में वर्ष के लगभग उसी समय सूर्यकिरणों का सीधे गर्भगृह तक पहुंचना किसी आश्चर्य से कम नहीं है। इसे दैवी चमत्कार नहीं तो और क्या कहें ? भारत के कुछ चुनिंदा जागृत देवस्थानों में ही प्रतिवर्ष नियत दिनों में ऐसा अद्वितीय किरणोत्सव देखने को मिलता है और श्रीमंत दगडूशेठ गणेश मंदिर एक जागृत देवस्थान होकर उनमें प्रमुख स्थान रखता है। यह किरणोत्सव प्रतिवर्ष लगातार दो से तीन दिन तक, लगभग दस से पंद्रह मिनट प्रतिदिन दिखाई देता है।

॥ अंगारकी चतुर्थी ॥

संकष्टी चतुर्थी जब मंगलवार के दिन आती है, तब उसे अंगारकी चतुर्थी कहा जाता है। इसके पीछे एक पौराणिक कथा प्रचलित है। अंगारक अर्थात मंगल ग्रह ने भगवान श्री गणेश की हजारों वर्षों तक कठोर तपस्या की थी। उनकी अखंड भक्ति से प्रसन्न होकर गणपति बाप्पा ने उन्हें यह वरदान दिया कि जिस दिन तुम्हारा वार अर्थात मंगलवार और चतुर्थी का संयोग होगा, वह संकष्टी चतुर्थी तुम्हारे नाम से अंगारकी चतुर्थी के नाम से जानी जाएगी।

अंगारकी चतुर्थी का विशेष धार्मिक महत्व माना जाता है। शास्त्रों के अनुसार, वर्षभर की सभी संकष्टी चतुर्थियों के व्रत का पुण्य केवल एक अंगारकी चतुर्थी के ही व्रत से प्राप्त हो जाता है। "श्रीमंत दगडूशेठ हलवाई गणपति मंदिर" में इस दिन का उत्सव अलौकिक होता है। आधी रात से ही प्रातः दर्शन के लिए श्रद्धालुओं की लंबी कतारें लग जाती हैं। मंदिर को सुगंधित पुष्पों से और भव्य रूप से सजाया जाता है। कलाकारों द्वारा निर्मित मोरों की आकर्षक प्रतिकृतियां ऐसी प्रतीत होती हैं, मानो वे राजस्थान से भगवान श्री गणपति के दर्शन के लिए साक्षात आए हों।

प्रातःकाल स्वराभिषेक कार्यक्रम के अंतर्गत शास्त्रीय संगीत की मधुर स्वरांजलि भगवान श्री गणेश के श्रीचरणों में अर्पित की जाती है। मंत्रोच्चार, ब्रह्मणस्पति (बृहस्पति) सूक्त, गणेश-याग तथा महाभिषेक से संपूर्ण वातावरण आध्यात्मिक ऊर्जा और भक्तिरस से सराबोर हो उठता है। पुष्पों की मनोहारी सजावट और दीपमाला की आलोकमय छटा से सुसज्जित मंदिर का दृश्य इस उत्सव को केवल एक पर्व नहीं, बल्कि श्रद्धा, साधना और गणपति बाप्पा की दिव्य कृपा के अद्वितीय संगम का अविस्मरणीय आध्यात्मिक अनुभव बना देता है।

" उन्होंने मेरी गोद के बच्चे को संभाल लिया, तभी तो मैंने पूरे संसार को ममता से बाहों में समेट लिया "

- पद्मश्री सिंधुताई सपकाळ

मैं विदर्भ की रहने वाली हूं। मेरी बेटी का जन्म गौशाला में हुआ था। घर-घर भीख मांगते हुए मेरे मन में विचार आया कि यूं रोते हुए जीवन बिताने से बेहतर है दूसरों के दुख तक पहुंचना और उनके लिए कुछ करना। मैंने ठान लिया, लेकिन अगले ही दिन संशय की स्थिति, मन ने पूछा - अपनी बेटी का क्या करोगी?

तभी मेरी आंखों के सामने "श्रीमंत दगडूशेठ हलवाई गणपति" का नाम आया। मैं उनके बारे में सुन चुकी थी। मैं पुणे पहुंची मुझे तात्या मिले, जिनका हृदय मां की ममता से परिपूर्ण था। मैंने उनसे कहा, "मैं चौथी तक पढ़ी हूं। मेरा कोई सहारा नहीं है। मेरी इच्छा है कि मेरी बेटी पुणे में पढ़े। उसे अपने संरक्षण में ले लीजिए, लेकिन किसी अनाथालय में मत भेजिए। उसके माता-पिता बनकर उसका भविष्य संवारिए, और उसे अच्छे संस्कार दिलवाइए।" तात्या ने मेरी बेटी का प्रवेश सेवासदन में कराया। उसकी पढ़ाई से लेकर हर महीने का पूरा खर्च ट्रस्ट उठाता रहा। हर हफ्ते उसकी कुशलक्षेम भी पूछी जाती थी; एक व्यक्ति उसकी पूछ ताछ करता - तुम्हें कोई कठिनाई है? कुछ चाहिए क्या ? पूछता था! यदि ट्रस्ट ने मेरी बेटी की जिम्मेदारी न ली होती और तात्या ने मेरी बेटी को माता-पिता का स्नेह ना दिया होता तो मैं अपनी बेटी में ही अटकी रहती। संस्था ने अपना पैसा खर्च कर के उसे पाला तभी तो दुनिया मुझे, यानि सिंधुताई सपकाळ को जान पाई। उन्होंने मुझे पूरे समाज की मां बनने का अवसर दिया। मेरी एक बेटी को "श्रीमंत दगडूशेठ हलवाई गणपति ट्रस्ट" ने संभाला, उसे माता पिता का प्यार दिया तभी तो मैं हजारों अनाथ बच्चों की माई बनी! मेरे जीवन की इस नई शुरुआत का सबसे बड़ा श्रेय "श्रीमंत दगडूशेठ हलवाई गणपति ट्रस्ट" को जाता है। आज तात्या की सेवा-परंपरा को अशोक उसी समर्पण के साथ आगे बढ़ा रहे हैं, ये अक्षरशः सत्य है। उसी तरह शंकरराव सूर्यवंशी की विरासत को महेश आगे ले जा रहे हैं। मुझे पूरा विश्वास है कि सेवा और मानवता की यह पताका सदा आसमान में ऊंचे लहराती रहेगी।

प्रेरणा के पदचिह्न, उम्मीद की किरण

समाज द्वारा उपेक्षित देवदासियों के अनाथ एवं पीड़ित बच्चों, कचरा बीननेवालों के बच्चों तथा आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों के बच्चों के लिए २० अक्टूबर १९८५ को कोंढवा में बाल संगोपन केंद्र की स्थापना की गई। प्रारंभिक ११ वर्षों तक इस केंद्र का संचालन ट्रस्टी काकासाहेब गावडे ने प्रबंधक के रूप में समर्पित भाव से संभाला।

यहां बालक और बालिकाएं आवासीय शिक्षा प्राप्त करते हैं। उनके व्यक्तित्व निर्माण और संस्कारों पर विशेष ध्यान दिया जाता है, ताकि वे समाज में सम्मानपूर्वक अपना स्थान बना

सकें। आज गर्व के साथ कहा जा सकता है कि इसी केंद्र के एक छात्र ने बारहवीं की परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त कर उल्लेखनीय सफलता हासिल की। वर्तमान में यह युवक केंद्र के अन्य विद्यार्थियों का मार्गदर्शन कर रहा है। इसी केंद्र के छात्र सुनील शेरेकर आज हिंजवड़ी स्थित कोर्टयार्ड मैरियट - पंचतारांकित होटल में चीफ शेफ के पद पर कार्यरत हैं। कई विद्यार्थियों ने एम.बी.ए. की शिक्षा प्राप्त कर बहुराष्ट्रीय कंपनियों में मुख्य कार्यकारी अधिकारी (CEO) जैसे महत्वपूर्ण पदों तक अपनी पहचान बनाई है, जबकि अन्य अनेक अपने स्वयं के व्यवसाय स्थापित कर आत्मनिर्भर बन चुके हैं। समाज के वंचित वर्गों से आए ये विद्यार्थी आज बाल संगोपन केंद्र के संस्कार, शिक्षा और मार्गदर्शन के बल पर समाज की मुख्यधारा में सफलतापूर्वक अपना स्थान बना चुके हैं।

वास्तव में, समाज के सबसे वंचित और संवेदनशील वर्गों के बच्चों को सशक्त एवं आत्मनिर्भर बनाने का जो पुनीत कार्य यह केंद्र कर रहा है वह अमूल्य है। जब नई पीढ़ी के बच्चे सक्षम, कर्मप्रधान और स्वावलंबी बनते हैं, तो देश का भविष्य स्वतः ही उज्ज्वल दिखाई देता है। यही कारण है कि यह केंद्र बहुत कम समय में हजारों बच्चों के लिए आशा की किरण बन गया।

केंद्र में बच्चों की सभी आवश्यकताओं का विशेष ध्यान रखा जाता है। उन्हें दिन में दो समय पौष्टिक भोजन, पढ़ाई के लिए कॉपियां और पुस्तकें, वस्त्र, व्यायाम का मार्गदर्शन तथा समृद्ध पुस्तकालय जैसी सुविधाएं उपलब्ध कराई जाती हैं। रसोईघर से लेकर छात्रावास तक स्वच्छता का विशेष ध्यान रखा जाता है तथा बच्चों के स्वास्थ्य की नियमित जांच और आवश्यक उपचार की भी समुचित व्यवस्था की जाती है।

इस केंद्र की गोद में पले-बढ़े अनेक बच्चे आज अपनी मेहनत और प्रतिभा के बल पर सम्मानपूर्वक जीवन जी रहे हैं, यही इस संस्था के यश की कुंजी है और आने वाली पीढ़ियों के लिए एक अमूल्य प्रेरणागाथा भी।

यहां बच्चों के बीच का निरागस स्नेह बंधन, एक-दूसरे का सहारा बनने की भावना और निःस्वार्थ मित्रता का यह अनुपम स्वरूप देखकर आँखें नम हुए बिना नहीं रहतीं। कौन कहाँ से आया, उसकी जाति, धर्म या पृष्ठभूमि क्या है - इससे किसी को कोई मतलब नहीं होता। यहां हर बच्चे के मन में "मानवता ही सबसे बड़ा धर्म है" का संस्कार गहराई से रोप दिया जाता है।

आज इस केंद्र से संस्कार प्राप्त कर जीवन में आगे बढ़े अनेक बच्चे कृतज्ञता से कहते हैं, "हमें यहां आने का अवसर मिला, यही हमारा सबसे बड़ा सौभाग्य है। वरना हमारा जीवन भटककर कहीं और ही चला जाता।"

उनके चेहरों पर झलकता संतोष, आत्मविश्वास से परिपूर्ण यौवन और उज्ज्वल भविष्य ही इस केंद्र के कार्य का वास्तविक सर्वोच्च प्रतिफल है।

इन बच्चों के उज्जवल यश का आलेख देख कर कार्यकारी मंडल का हृदय गर्व से भर जाता है। क्योंकि इस उपलब्धि के पीछे वर्षों की मेहनत, त्याग और अनगिनत व्यक्तिगत तथा पारिवारिक सुख सुविधाओं के साथ हुए समझौते छिपे हैं। लेकिन जब बच्चों को जीवन में ऊंची उड़ान भरते देखते हैं, तो सारी बलाएं क्षण भर में भूल जाते हैं।

यहाँ उज्ज्वल भविष्य के साथ अनगिनत नन्हीं कलियाँ नई आशा और नए सपनों के साथ खिल रही हैं।

॥ श्रीगणेश जयंती ॥ (माघ शुद्ध चतुर्थी)

माघ माह की विनायकी चतुर्थी के दिन भगवान श्रीगणेश का जन्म हुआ था। इसी कारण गणराय के इस दिव्य स्वरूप को “विनायक” भी कहा जाता है। भाद्रपद माह में मनाई जाने वाली गणेश चतुर्थी की भांति ही, माघ माह में मनाई जाने वाली गणेश जयंती भी सभी गणेश क्षेत्रों में अपार भक्तिभाव, उत्साह और श्रद्धा के साथ मनाई जाती है।

"श्रीमंत दगडूशेठ हलवाई गणपति मंदिर" में मनाया जाने वाला श्रीगणेश जन्मोत्सव अत्यंत पवित्र एवं भक्तिरसपूर्ण वातावरण में संपन्न होता है। इस मंगलमय अवसर पर सुहागनें पारंपरिक वेशभूषा में सज-धज कर बाल गणराय को पालने में विराजमान करती हैं - यह क्षण भक्तों के हृदय को स्पर्श करने वाला होता है। इस अवसर पर गणेश याग का आयोजन किया जाता है तथा श्रीगणेश की प्रतिमा पर ब्रह्मणस्पति सूक्त के अनुसार विधिपूर्वक अभिषेक भी किया जाता है।

ब्रह्मणस्पति सूक्त के अनुसार विधिपूर्वक अभिषेक

श्रीगणेश जन्म उत्सव

श्रीगणेश याग

श्रीगणेशजी की नगर प्रदक्षिणा शोभायात्रा

रंग-बिरंगे एवं सुगंधित पुष्पों से सुसज्जित गर्भगृह में विराजमान श्रीगणराय की अलंकृत प्रतिमा अत्यंत मोहक, कोमल और तेजस्वी प्रतीत होती है। इस पावन अवसर का एक विशेष आकर्षण मंदिर परिसर से घोष वाद्यों के साथ निकलने वाली श्रीगणेशजी की नगर परिक्रमा शोभायात्रा है, जिसमें हजारों श्रद्धालु भक्तिभाव से सहभागी होते हैं।

पारंपरिक वेशभूषा में सजे हुए श्रद्धालुओं द्वारा भक्तिगीतों और जयघोषों से संपूर्ण परिसर भक्ति, उल्लास और उत्सवमय भावनाओं से सराबोर हो उठता है। श्रीगणेश जयंती का यह उत्सव भक्तों को एक अविस्मरणीय एवं आध्यात्मिक अनुभूति प्रदान करता है।

ममता की छाँव, मानवता का मंदिर

सन २००० के आस-पास सूचना-प्रौद्योगिकी (आई. टी.) क्षेत्र के तेज़ी से विस्तार के साथ पुणे जैसे शहरों से अनेक युवक-युवतियां विदेश में बसने लगे। इस बदलाव के साथ एक पीड़ादायक सामाजिक समस्या भी धीरे-धीरे सामने आई - वृद्ध माता-पिता और वरिष्ठ नागरिकों का अकेलापन।

घर में अकेले रहने वाले या अपनों के बीच रहकर भी अकेलापन झेल रहे वरिष्ठ नागरिकों को सहारे की आवश्यकता थी। ऐसे बुजुर्गों की आवश्यकता थी एक वृद्धाश्रम, बुजुर्गों का आधार बनने की यह जिम्मेदारी "श्रीमंत दगडूशेठ हलवाई सार्वजनिक गणपति ट्रस्ट" ने उठाई।

महेश सूर्यवंशी की दूरदर्शी योजना से वर्ष २००१ में वृद्धाश्रम भवन का भूमिपूजन हुआ और मात्र दो वर्षों में 'पिताश्री' वृद्धाश्रम का उद्घाटन तत्कालीन मुख्य मंत्री सुशील कुमार शिंदे के हाथों संपन्न हुआ।

यह जिम्मेदारी महेश सूर्यवंशी को सौंपने के पीछे स्पष्ट कारण था। वे पेशे से अभियंता थे, और कुछ वर्ष पूर्व उन्होंने गणपति मंदिर परिसर के इर्द-गिर्द एक क्लस्टर विकास का उत्कृष्ट प्रारूप तैयार किया था।

इस योजना में भव्य मंदिर मध्य में तथा उसके साथ सात मंज़िला आवासीय परिसर, तीन ओर सड़कें, सभागार और व्यायामशाला जैसी सभी सुविधाएं शामिल थीं। तात्या ने उनकी इस क्षमता को पहचान रखा था, और उचित समय आने पर वृद्धाश्रम की जिम्मेदारी उनके सक्षम कन्धों पर सौंप दी।

दिन-रात के अथक प्रयासों से उन्होंने इस संपूर्ण संकल्पना को सफलता पूर्वक साकार किया। उनका मानना था कि "ये घर गणराय के हैं, इसलिए इन्हें राजमहल जैसा सुंदर होना चाहिए।" इसी सोच के साथ भवन में कलात्मक मेहराबों का समावेश किया गया, ताकि वरिष्ठ नागरिकों को उनके द्वारा की गई प्रगति पर आत्मिक संतोष का अनुभव हो। महेशजी के माध्यम से मानो स्वयं श्री गणेश ने अपने वरिष्ठ भक्तों के लिए राजमहल जैसा भव्य निवास निर्मित कराया।

प्रत्येक मंज़िल पर शुद्ध पेयजल की व्यवस्था है, तथा २४ घंटे सौर ऊर्जा से गर्म पानी उपलब्ध कराया जाता है। वरिष्ठ नागरिकों के मनोरंजन के लिए प्रत्येक मंज़िल पर टेलीविजन की सुविधा है, स्वतंत्र पुस्तकालय तो है ही, बाहर एक सुंदर उद्यान भी विकसित किया गया है। सप्ताह में एक बार बड़े पर्दे पर फिल्में दिखाई जाती हैं तथा वर्ष में दो बार धार्मिक स्थलों की यात्राएं आयोजित की जाती हैं।

प्रतिदिन सुबह-शाम स्पीकर्स द्वारा भक्तिगीतों का प्रसारण किया जाता है जिससे पूरा परिसर का वातावरण आनंददायक बना रहता है।

कोंढवा स्थित बाल संगोपन केंद्र के परिसर में ही वृद्धाश्रम बनाने के पीछे एक भावनात्मक और दूरदर्शी सोच थी - वरिष्ठों को बच्चों का स्नेह मिले और बच्चों को दादा-दादी / नाना-नानी का सान्निध्य। यह पहल किसी व्यक्तिगत लाभ के लिए नहीं, बल्कि समाजहित और मानवता की सेवा के लिए खड़ा किया गया एक आदर्श है।

आज यहां का वातावरण देखकर यह वृद्धाश्रम नहीं, बल्कि एक बड़ा संयुक्त परिवार प्रतीत होता है। यहां रहने वाले एक वरिष्ठ दंपति ने भावुक होकर कहा, “यहां रहना मानो चलते फिरते नंदनवन में रहना है।” उनके इन शब्दों में मार्मिक संतोष की गहरी अनुभूति झलकती है।

रोज़ शाम को पलकें बिछाये वृद्धजनों द्वारा नाती पोतों का इंतज़ार रहता है। उन्हें 'शुभंकरोति' और विभिन्न स्तोत्र सिखाते हुए मानो अपना बचपन फिर से जीने का सुख मिलता है। यहां प्रेम है, अपनापन है और ममता से भरा वातावरण है - फिर भला गणराय के इस घर में अपना शेष जीवन बिताना कौन नहीं चाहेगा?

यहां समय पर घर जैसा स्वादिष्ट भोजन, गरम चाय और नाश्ता मनुहार कर के परोसा जाता है। कर्मचारी भी परिवार के सदस्यों की तरह स्नेह और अपनत्व से सेवा करते हैं।

एक दादी ने मुस्कुराते हुए बड़े स्नेह से कहा, “आपके परिवार में शायद छह सदस्य होंगे, लेकिन मेरे परिवार में ६६ सदस्य हैं। यही मेरी सबसे बड़ी दौलत है और यही गणराय का सच्चा आशीर्वाद है।”

रोज़ सुबह कई बच्चे दादा-दादी / नाना-नानी को प्रणाम कर स्कूल जाते हैं। यही सच्चे संस्कार हैं। यहां के मंदिर में "श्रीमंत दगडूशेठ हलवाई गणपति" उत्सव की दूसरी श्रीगणेश प्रतिमा विराजमान है, जिसके दर्शन के लिए भी आसपास के श्रद्धालु आते हैं। आज यहां सैकड़ों वरिष्ठ नागरिक सुखपूर्वक निवास कर रहे हैं।

इसके पीछे एक ही कारण है - यहां कोई भी पराया नहीं है। सुख-दुःख के हर पल में मंडल के कार्यकर्ता उनके अपने बच्चों की तरह साथ खड़े रहते हैं।

हमारे कार्यकर्ताओं का मानना है कि वरिष्ठ नागरिकों की सेवा केवल एक जिम्मेदारी नहीं, बल्कि हमारी संस्कृति है।

॥ अंगूर महोत्सव ॥

फाल्गुन पूर्णिमा, अर्थात होली पूर्णिमा, के औचित्य को साधते हुए मंदिर परिसर तथा गणराय के पवित्र गर्भगृह में अंगूरों की अत्यंत मनोहारी और विशिष्ट सजावट की जाती है। इस अद्भुत सजावट के लिए लगभग ढाई हजार से तीन हजार किलोग्राम - इतनी प्रचंड मात्रा में ताज़े अंगूरों का उपयोग किया जाता है।

यह सजावट ऐसे प्राकृतिक और कलात्मक ढंग से की जाती है कि दर्शन करने वाले को क्षणभर ऐसा आभास होता है मानो हरे-भरे अंगूरों के अनंत बागान में अपने शांत, तेजस्वी और कृपालु रूप में बाप्पा स्वयं विराजमान हों। हरे अंगूरों की सघन पृष्ठभूमि पर पीले और लाल फूलों द्वारा की गई नाजुक एवं संतुलित रचना कलाकार की सूक्ष्म संवेदनशीलता और रंग- संगती के उत्कृष्ट संतुलन की साक्ष्य बन जाती है।

इन हरे-भरे रंगों की बिखरी छटा से मन को अद्भुत शांति और संतोष प्राप्त होता है। इस प्राकृतिक पृष्ठभूमि पर बाप्पा का तेज और भी अधिक खिल उठता है। दर्शन का प्रत्येक क्षण मन में संजोकर रखने योग्य एक गहन और अविस्मरणीय अनुभूति उत्पन्न करता है।

इसके बाद सभी अंगूर भक्तों में प्रसाद के रूप में वितरित किए जाते हैं। इस प्रकार सौंदर्य, भक्ति और प्रसाद का संगम स्थापित करने वाला यह अंगूर महोत्सव भक्तों के मन पर एक अमिट छाप छोड़ जाता है।

करुणामय उपचार

"श्रीमंत दगडूशेठ हलवाई ट्रस्ट" का अपना अस्पताल हो, यह तात्या की लंबे समय से हार्दिक इच्छा थी। लेकिन अस्पताल की स्थापना और उसका निरंतर संचालन व रखरखाव अत्यंत जिम्मेदारीपूर्ण और चुनौतीपूर्ण कार्य होने के कारण, मरीजों की सेवा के लिए वैकल्पिक एवं प्रभावी उपायों की तलाश शुरू हुई। इसी दौरान 'ससून अस्पताल' के डॉ. अजय चंदनवाले की अशोक गोडसे और महेश सूर्यवंशी से हुई मुलाकात निर्णायक साबित हुई। इस मुलाकात के तुरंत बाद ट्रस्ट ने अस्पताल में मरीजों के भोजन हेतु राशन सामग्री उपलब्ध कराने, रसोईघर का अत्याधुनिक तरीके से नवीनीकरण करने तथा मरीजों के परिजनों को आधी कीमत पर भोजन उपलब्ध कराने का प्रस्ताव रखा।

इसके साथ ही ट्रस्ट ने 'ससून अस्पताल' को प्रति घंटे १००० रोटियां बनाने वाली आधुनिक मशीन भेंट की। इससे मरीजों के भोजन में ब्रेड की जगह ताज़ी रोटियां शामिल हुईं। साथ ही भोजन वितरण के लिए ३६ नई ट्रॉलियां उपलब्ध कराई गईं, जिससे स्वच्छ, सुन्दर भोजनशाला बन गई, और भोजन व्यवस्था अधिक सुव्यवस्थित बन गई।

ट्रस्ट ने 'ससून अस्पताल' के लगभग ५,००० वर्गफुट क्षेत्र में फैले रसोईघर का पूर्ण नवीनीकरण कराया। वर्ष २०१३ से प्रतिदिन लगभग ३,२०० मरीजों को दो समय का पौष्टिक शाकाहारी भोजन, नाश्ता तथा चाय-बिस्किट उपलब्ध कराया जा रहा है। रसोई के लिए रोटी बनाने और सब्जियां काटने की आधुनिक मशीनें भी दान की गईं। साथ ही बाहर गांव से आने वाले मरीजों के परिजनों के लिए एक विश्रामगृह भी बनाया गया।

इस सेवा कार्य पर ट्रस्ट द्वारा प्रतिवर्ष लगभग ३ करोड़ रुपये खर्च किए जाते हैं।

मई २०१७ में "श्रीमंत दगडूशेठ गणपति ट्रस्ट" और "मुकुल माधव फाउंडेशन" (फिनोलेक्स) के सहयोग से ५९ बिस्तरों वाला अत्याधुनिक एन.आई.सी.यू. (नवजात शिशु गहन चिकित्सा इकाई) वार्ड स्थापित किया गया।

माइल्ड, मॉडरेट, क्रिटिकल और मोस्ट क्रिटिकल - सभी स्तरों की उपचार सुविधाओं के साथ में माताओं के लिए अलग प्रतीक्षालय तथा मदर मिल्क बैंक से युक्त यह महाराष्ट्र का पहला एन.आई.सी.यू. वार्ड बना। अत्याधुनिक चिकित्सा उपकरणों से सुसज्जित इस वार्ड को महाराष्ट्र के सर्वश्रेष्ठ एन.आई.सी.यू. वार्ड होने के लिए गौरान्वित किया गया है।

नवजात शिशुओं के लिए अत्याधुनिक गहन चिकित्सा इकाई (एन.आई.सी.यू.), ६६ बिस्तरों वाले पांच नवीनीकृत प्रसूति वार्ड तथा मरीजों के लिए ३०० अतिरिक्त बिस्तरों की व्यवस्था की गई। प्रसव के बाद माताओं को मूंगफली के लड्डू और आवश्यक दवाइयां निःशुल्क प्रदान की जाती हैं।

इन सभी प्रयासों से एक बात स्पष्ट होती है – "श्रीमंत दगडूशेठ हलवाई ट्रस्ट" के लिए सेवा केवल एक कार्य नहीं, बल्कि मूल्य निष्ठ प्रतिज्ञा है। नैतिकता, संवेदनशीलता और अनुशासित कार्यशैली के साथ हर पहल को बिना किसी समझौते के आगे बढ़ाया जाता है। यही समर्पित सेवा लोगों के मन में विश्वास जगाती है, और यही विश्वास आज लाखों लोगों के आशीर्वाद के रूप में ट्रस्ट के प्रत्येक कार्यकर्ता और विश्वस्त की सबसे बड़ी शक्ति बनकर उनके साथ खड़ा है।

देवेंद्र फडणवीस
मुख्यमंत्री, महाराष्ट्र राज्य

मरीजों के परिजनों के लिए विश्रामगृह, अत्याधुनिक एन.आई.सी.यू. वार्ड की स्थापना में सहयोग, महिला वार्डों का आधुनिकीकरण तथा आधुनिक रसोईघर जैसी परियोजनाओं के माध्यम से ट्रस्ट ने मरीजों के हित में उत्कृष्ट सामाजिक कार्य किया है। जनता से प्राप्त धन को ईश्वर के प्रसाद के रूप में पुनः जनसेवा में समर्पित करने का कार्य "श्रीमंत दगडूशेठ हलवाई गणपति ट्रस्ट" ने किया है। ऐसे अनुकरणीय कार्य के लिए मैं ट्रस्ट के अध्यक्ष एवं सभी विश्वस्तों का हृदय से अभिनन्दन करता हुं।

डॉ. अजय चंदनवाले
पूर्व अधिष्ठाता, ससून रुग्णालय, पुणे

डॉ. अजय चंदनवाले "ससून अस्पताल" की छवि को बेहतर बनाने, जनता का विश्वास मजबूत करने और मरीजों को उत्कृष्ट उपचार उपलब्ध कराने के लिए दिन-रात समर्पित भाव से कार्य कर रहे थे। ऐसे समय में "श्रीमंत दगडूशेठ हलवाई गणपति ट्रस्ट" का इस अभियान में आगे आना उनके लिए केवल सहयोग नहीं, बल्कि उनके ईमानदार प्रयासों को समाज द्वारा मिला भावनात्मक सम्मान था। यह सहयोग उनके संकल्प को नई शक्ति, प्रेरणा और विश्वास प्रदान करने वाला सिद्ध हुआ।

ससून सर्वोपचार अस्पताल में "जय गणेश रुग्णसेवा अभियान" के अंतर्गत नवीनीकृत रसोईघर के लोकार्पण समारोह के अवसर पर तत्कालीन स्वास्थ्य मंत्री विजयकुमार गावित एवं तत्कालीन उपमुख्यमंत्री अजित दादा पवार।

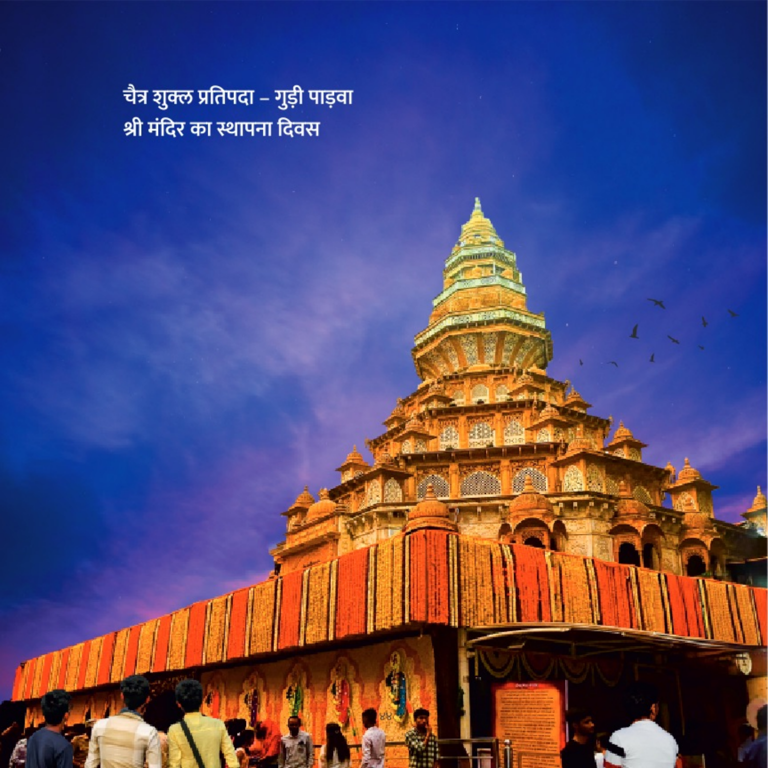
चैत्र शुक्ल प्रतिपदा – गुड़ी पाड़वा
श्री मंदिर का स्थापना दिवस

हिंदू नववर्ष का प्रथम दिवस और साढ़े तीन शुभ मुहूर्तों में से एक माना जाने वाला यह गुड़ी पाड़वा "श्रीमंत दगडूशेठ गणेश मंदिर" के स्थापना दिवस के रूप में भी अनोखा महत्व रखता है।

प्रातःकाल से ही मंदिर परिसर भक्तिरस से सराबोर हो उठता है। मधुर मंगलध्वनियों के बीच नववर्ष का स्वागत किया जाता है और वातावरण में पवित्रता, आशा तथा सकारात्मकता का भाव व्याप्त हो जाता है। ब्रह्मध्वज अर्थात् गुड़ी की स्थापना कर उसका विधिवत पूजन किया जाता है। नए वस्त्र और आभूषण धारण किए हुए भक्तगण अपार श्रद्धा और उत्साह के साथ बाप्पा के चरणों में नतमस्तक होते हैं।

मानो नववर्ष की शुभकामनाएं भगवान श्री गणेश स्वयं ही भक्तों को प्रदान कर रहे हों, ऐसा भाव प्रत्येक श्रद्धालु के मन में व्याप्त हो जाता है। दर्शन के लिए उमड़ी विशाल भीड़ केवल उपस्थिति नहीं, बल्कि लाखों श्रद्धालुओं के विश्वास, आशा और प्रेम की साक्षी होती है। एक-दूसरे को दी जाने वाली नववर्ष की शुभकामनाओं के साथ मंदिर परिसर में अपनत्व, सौहार्द और मंगलमय ऊर्जा का प्रवाह निरंतर बना रहता है।

इस पावन अवसर पर मंदिर में सजी भव्य, सुगंधित और रंग-बिरंगी पुष्प सज्जा मन को मंत्रमुग्ध कर देती है। गर्भगृह में श्री जी के सान्निध्य में साकार की गई विविध पुष्पों की कलात्मक सजावट केवल सौंदर्य का प्रदर्शन नहीं, बल्कि भक्तिभाव से उपजी एक अद्भुत कलाकृति प्रतीत होती है। वहीं, ताजे और स्वादिष्ट फलों से सुसज्जित समृद्ध अर्पण प्रकृति की समृद्धि और कृतज्ञता का प्रतीक बन जाता है।

संपूर्ण वातावरण में भक्ति, परंपरा, सौंदर्य और आनंद का अद्भुत संगम अनुभव किया जा सकता है। गुड़ी पड़वा के इस पावन अवसर पर श्रीमंत दगडूशेठ गणेश मंदिर में मनाया जाने वाला यह उत्सव केवल नववर्ष का आरंभ ही नहीं, बल्कि श्रद्धा, परंपरा और अटूट विश्वास का एक भावपूर्ण उत्सव बनकर भक्तगणों के हृदय में सदा के लिए घर कर जाता है।

मंदिर प्रबंधन

लाखों श्रद्धालुओं की अटूट आस्था का केंद्र रहे "श्रीमंत दगडूशेठ हलवाई गणपति" मंदिर का प्रबंधन केवल एक प्रशासनिक कार्य नहीं, बल्कि एक अत्यंत संवेदनशील, जिम्मेदारीपूर्ण और श्रद्धा से ओतप्रोत साधना है। यह प्रबंधन न तो किसी निजी संस्था की सीमाओं में समाता है और न ही किसी सरकारी व्यवस्था के कठोर ढांचे में। क्योंकि यह स्थान केवल एक मंदिर नहीं है, बल्कि लाखों भक्तों की भावनाओं, विश्वास और आशाओं का पवित्र अधिष्ठान है।

मंदिर में सैकड़ों कर्मचारी विभिन्न जिम्मेदारियों का निर्वहन करते हुए कार्यरत हैं - लेखा विभाग से लेकर सुरक्षा व्यवस्था तक, स्वच्छता से लेकर धार्मिक अनुष्ठानों का संचालन करने वाले संस्कारित एवं शिक्षित ब्राह्मणों तक, प्रत्येक व्यक्ति अपने कार्य के माध्यम से भक्ति का अनुभव कराता है। प्रातःकालीन मंगला आरती से लेकर देर रात तक निरंतर चलने वाले श्रद्धालुओं के प्रवाह, प्राप्त होने वाले दान, नकद राशि तथा पूर्व निर्धारित पूजा, अभिषेक और यज्ञ जैसे धार्मिक अनुष्ठानों का अत्यंत सुव्यवस्थित और सटीक योजना के साथ निर्धारित दिन और समय पर क्रियान्वयन किया जाता है। क्योंकि इन अनुष्ठानों के पीछे एक भक्त की आस्था, श्रद्धा और भावना जुड़ी होती है।

धार्मिक अनुष्ठानों के उपरांत श्रद्धालुओं के पते पर प्रसाद और बभूति भेजना तथा दानस्वरूप प्राप्त स्वर्ण-रजत आभूषणों का विधिवत अचूक लेखन करना - यह सब अत्यंत पारदर्शिता के साथ किया जाता है। विशेष बात यह है कि मंदिर में भक्तों द्वारा अर्पित आभूषणों की कभी नीलामी

नहीं की जाती क्योंकि उनमें आर्थिक मूल्य से कहीं अधिक श्रद्धा और भावनाओं का अमूल्य निधि निहित होता है। इसलिए इन आभूषणों को पिघलाकर पुनः गणराय के लिए नए अलंकार निर्मित किए जाते हैं - एक २४ कैरेट शुद्ध सोने जैसा निर्मल और पवित्र विचार!

गणराय के दैनिक परिधानों के लिए भी श्रद्धालुओं द्वारा पूर्व निर्धारित बुकिंग कराई जाती है।

किसी का जन्मदिन, किसी की विवाह वर्षगांठ या जीवन के किसी शुभ अवसर पर श्रद्धालुओं द्वारा अर्पित ये परिधान निर्धारित दिन पर विधिवत गणराय को चढ़ाए जाते हैं। इसके पश्चात ये परिधान संबंधित भक्तों के पते पर घर तक भेजे जाते हैं। यह केवल एक वस्त्र नहीं, बल्कि मंदिर की ओर से मिली एक अमूल्य स्मृति होती है, जिसे भक्त जीवनभर सहेजकर रखते हैं। सचमुच, यह विचार है रेशम की तरह कोमल, मुलायम भावनाओं से ओतप्रोत!

जब श्रद्धालु अपनी विवाह पत्रिका श्री गणराय के चरणों में अर्पित करने के लिए मंदिर में आते हैं, तब गुरुजी के माध्यम से उस पत्रिका को श्रद्धापूर्वक गणराय के चरणों में समर्पित किया जाता है। इसके पश्चात वह पत्रिका मंदिर कार्यालय में जमा होती है और कार्यालय की ओर से उस नवदंपति के पते पर "गणेश का आशीर्वचन" नामक एक अत्यंत सुंदर और भावस्पर्शी पत्र भेजा जाता है।

सुमंगल शुभाशीष

अपार भक्ति और श्रद्धा से ओतप्रोत, हृदय की आस्था से सजे आपके शुभ कार्य का स्नेहपूर्ण निमंत्रण प्राप्त हुआ।

मैं, शिव-गौरीनंदन, पाशांकुशधारी श्रीमंत दगडूशेठ गणपति, ऋद्धि, सिद्धि तथा अपने समस्त प्रिय गणों सहित विवाह स्थल पर उपस्थित रहूँगा, नवदंपति के नवजीवन पर मंगल और शुभाशीषों की वर्षा करने के लिए!

मैं साथ लेकर आऊंगा आनंद का आकाश, धन्यता की धरती, समृद्धि का सागर . . . सुख-शांति तथा संतोष से महकती जीवन-सुगंध। मानव सेवा के लिए अपार कार्यक्षमता प्रदान करूंगा और दसों दिशाओं के कलशों से अक्षय सफलता का अमृतमय शुभ वरदान दूंगा!

शुभकार्यम् निर्विघ्नम् भवतु!! कल्याणमस्तु!!!

मंदिर न्यास की ओर से यह पत्र प्राप्त होते ही नववधू और वर की आंखों में आनंदाश्रु न आएं ऐसा होना सचमुच आश्चर्य की बात होगी। क्योंकि इस पत्र के पीछे निहित भाव ही इतना अलौकिक है - मानो स्वयं श्री गणेश, ऋद्धि-सिद्धि और अपने समस्त गणों सहित उस मंगलमय विवाह समारोह में उपस्थित होकर नवदंपति को आशीर्वाद प्रदान करने वाले हों। केवल इस भावना का स्मरण मात्र ही मन को कृतार्थ भाव से भर देता है।

इसी कारण इस पत्र को लगभग प्रत्येक नवदंपति अपने घर में जीवनभर एक अमूल्य धरोहर के रूप में सहेजकर रखते हैं। इस पहल के माध्यम से मंदिर के न्यासियों की अपार सद्भावना, संवेदनशीलता और समाज के लिए निरंतर कुछ शुभ एवं मंगलकारी करने की भावना स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। अनगिनत लोगों के आशीर्वाद और असंख्य हृदयों में आनंद की लहर उत्पन्न करने वाला यह विचार वास्तव में आश्चर्यजनक और प्रेरणादायी है।

इन सभी प्रक्रियाओं का व्यवस्थित अभिलेखन और दस्तावेजीकरण किया जाता है। साथ ही, मंदिर द्वारा मानव सेवा के लिए दी जाने वाली सहायता और दान का उचित एवं पारदर्शी उपयोग सुनिश्चित करने के लिए निरंतर निगरानी रखी जाती है। बिना किसी समझौते के पारदर्शिता और विश्वास ही इस व्यवस्था की वास्तविक पहचान हैं।

सुरक्षा की दृष्टि से संपूर्ण मंदिर परिसर सीसीटीवी निगरानी में रहता है और संदिग्ध गतिविधियों पर सतत नजर रखी जाती है। आधुनिक तकनीक और उपकरणों के उपयोग हेतु कर्मचारियों को समय-समय पर प्रशिक्षण भी दिया जाता है। विशेष बात यह है कि मंदिर के सुरक्षा रक्षक परंपरागत रूप से आखाड़े से जुड़े पहलवान ही होते हैं। यह परंपरा श्रीमंत दगडूशेठ हलवाई की स्मृति में आज भी ससम्मान निभाई जा रही है, क्योंकि वे स्वयं भी अखाड़े में जाकर कुश्ती का अभ्यास करते थे।

इन सभी कार्यों में न्यासियों, पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं की दूरदृष्टि तथा मूल्यनिष्ठ सोच स्पष्ट दिखाई देती है। यही कारण है कि "श्रीमंत दगडूशेठ गणपति मंदिर" का प्रबंधन केवल सफल ही नहीं, बल्कि श्रद्धा, अनुशासन और संवेदनशीलता का एक प्रेरणादायी आदर्श भी है।

श्रद्धा की आध्यात्मिक यात्रा

महाराष्ट्र के "अष्टविनायक" भगवान श्रीगणेश के आठ पवित्र तीर्थस्थल हैं, जिनके दर्शन का विशेष आध्यात्मिक महत्व माना जाता है। यह यात्रा मनुष्य के आठ विकारों - काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर, ममता और अहंकार - पर विजय प्राप्त करने तथा भक्तों को गणराय की शरणागति की ओर प्रेरित करने के उद्देश्य से कराई जाती है। मान्यता है कि इन विकारों पर नियंत्रण के पश्चात ही गणेश चरणों में स्थान प्राप्त होता है। परंपरा के अनुसार यात्रा का आरंभ मोरेश्वर गणपति मंदिर से शुरू करके सभी गणेश मंदिर हो कर समापन भी मोरेश्वर मंदिर में ही किया जाता है। मंदिर के गर्भगृह की ओर जाते समय सर्वप्रथम श्री महालक्ष्मी माता और श्री नग्न भैरव के मनोहारी दर्शन होते हैं।

इसके पश्चात श्री गणेश परिवार की देवियां सिद्धि और बुद्धि तथा श्री लक्ष और लाभ के दर्शन होते हैं। मंदिर के गर्भगृह में गाणपत्य संप्रदाय के महान संत श्री मुद्गल और श्री भृशुंडी ऋषि, मोद-प्रमोद की प्रतिमाएं, मयूर, श्री, ओम, स्वस्तिक, सूर्य, चंद्र तथा पंचेश्वर सहित अनेक शुभ प्रतीक और देवताओं की मूर्तियां विराजमान हैं।

यहां अष्टविनायकों की कलात्मक रूप से रचित चांदी की प्रतिमाएं दर्शनीय हैं। नित्योपचार के लिए चांदी की अलंकृत मूर्ति स्थापित है तथा उसके पीछे स्वर्ण आसन पर १३४ वर्षों की परंपरा को संजोने वाले श्रीमंत दगडूशेठ हलवाई गणपति बाप्पा की वरदहस्त मुद्रा में विराजमान प्रतिमा स्थापित है। सभामंडप चांदी की नाजुक कलाकृतियों से सुसज्जित है तथा छत पर बनी आठ अलंकृत पंखुड़ियों के माध्यम से अष्टविनायक दर्शन की प्रतीकात्मक प्रस्तुति दिखाई देती है। भक्तों के सहयोग से मंदिर को वातानुकूलित बनाया गया है और इसकी छत विविध गणेश चिन्हों से अलंकृत है।

गाणपत्य शैली से वैशिष्ट्य पूर्ण मंदिर

मंदिर की अष्टकोणीय संरचना आठ विकारों पर नियंत्रण का प्रतीक मानी जाती है। लगभग ८१ फुट ऊंचा यह मंदिर मंगल कलशाकार शिखर से सुशोभित है। राजस्थानी कलाकारों की कुशल हस्तकला से साकार गाणपत्य शैली मंदिर को भव्यता के साथ आध्यात्मिक सौंदर्य भी प्रदान करती है। मंदिर के प्रत्येक भाग में गणेश प्रतीकों का कल्पकता पूर्ण उपयोग दृष्टिगोचर होता है।

शंकराचार्य का मंगल स्पर्श

गुड़ी पाड़वा के शुभ अवसर पर सन १९८४ में जगद्गुरु भारतीतीर्थ ने गणेश पूजन कर मंदिर को भक्तों के लिए समर्पित किया। उस दिन से अनेक शंकराचार्यों एवं संतों ने यहां आकर दर्शन किए, जिससे मंदिर की आध्यात्मिक परंपरा और अधिक सुदृढ़ हुई।

मंदिर के बाह्य स्वरूप की प्रतीकात्मकता

प्रवेश द्वार पर स्थापित चांदी के मोद-प्रमोद और मूषक के शिल्प श्रद्धालुओं का स्वागत करते हैं। लाल ग्रेनाइट की फर्श पृथ्वी तत्व का, जबकि पीला पत्थर सूर्य - आत्मतत्व का प्रतीक माना गया है। मंगल कलशाकार शिखर पर सुशोभित भगवा ध्वज "त्वमेव केवलं तत्त्वमसि" की भावना के अनुरूप सर्वव्यापी गणेशतत्त्व का स्मरण कराता है। परिसर की दीवारों पर किया गया उत्कीर्णन मंदिर की सुंदरता को बढ़ाता है।

भक्त के नाम से प्रकट गणेशतत्त्व

अष्टविनायकों में श्री बल्लाळेश्वर मंदिर के संबंध में ऐसी श्रद्धा है कि भगवान गणेश भक्त बल्लाळ के नाम से प्रकट हुए थे। उसी प्रकार महान गणेशभक्त दगडूशेठ हलवाई की भक्ति की स्मृति में यहां गणपति की पूजा "श्रीमंत दगडूशेठ हलवाई गणपति" के नाम से की जाती है। यह परंपरा भक्ति और आराध्य के अद्वैत संबंध को रेखांकित करती है। आज देश-विदेश से असंख्य श्रद्धालु यहां दर्शन के लिए आते हैं।

चैत्र शुक्ल द्वितीया
वल्लभेश मंगलम्

जब स्वानंदनाथ को बहुरूप में प्रकट होने की इच्छा हुई, तब उस इच्छा की पूर्ति के लिए उन्होंने अपनी योगमाया का आवाहन किया। यही दिव्य योगमाया "देवी वल्लभा" के नाम से जानी जाती हैं। मोरया की अत्यंत प्रिय होने के कारण उन्हें "वल्लभा" कहा जाता है। देवी वल्लभा के पावन प्राकट्य तथा मोरया द्वारा उनके साथ अलंकार धारण कर साकार हुए इस दिव्य ऐक्य की तिथि के रूप में चैत्र शुक्ल द्वितीया का विशेष महत्व माना जाता है।

इस मंगलमय दिन भगवान श्री गणेश और देवी वल्लभा का विवाहोत्सव अत्यंत राजसी वैभव, भक्तिभाव और अपार उत्साह के साथ मनाया जाता है। हिंदू संस्कृति में विवाह का सबसे पवित्र और महत्वपूर्ण संस्कार मानी जाने वाली सप्तपदी के दर्शन हेतु भक्तगण उत्सुकतापूर्वक प्रतीक्षा करते हैं। भगवान श्री गणेश और देवी श्रीवल्लभा की सप्तपदी के साक्षी बनना भक्तों के लिए एक अविस्मरणीय आध्यात्मिक अनुभव होता है। इस अवसर पर विविध सुगंधित और रंग-बिरंगे पुष्पों से सुसज्जित भव्य एवं

आकर्षक विवाह मंडप का निर्माण किया जाता है। चारों ओर की मनोहारी पुष्प सज्जा सभी का मन मोह लेती है। शहनाई और चौघड़े (चार नगाड़ों का संचय) की मंगलमय स्वर लहरियों से संपूर्ण वातावरण भक्तिरस से ओत-प्रोत हो उठता है। ऐसा यह अद्वितीय, दिव्य और भावपूर्ण विवाहोत्सव भक्तों के लिए वास्तव में एक अनुपम अनुभूति बन जाता है।

॥ चैत्र वद्य पंचमी ॥ (चैत्र कृष्ण पंचमी) (मोगरा महोत्सव)

नवसंवत्सर में आने वाली पहली वद्य पंचमी के इस अत्यंत पावन और मंगलमय दिन पर "श्रीमंत दगडूशेठ हलवाई गणपति मंदिर" में मनाया जाने वाला "मोगरा महोत्सव" भक्ति, सौंदर्य और कलात्मकता का एक अनुपम उत्सव बन जाता है। "वसंतिक उटी" के नाम से भी प्रसिद्ध यह महोत्सव मानो वसंत ऋतु की प्रसन्नता और पवित्रता का साक्षात दर्शन कराता है। इस महोत्सव की तैयारियाँ तीन से चार दिन पहले ही प्रारंभ हो जाती हैं। लगभग १०० से १५० महिलाएं और ८० से १०० पुरुष कारीगर, जो अपनी - अपनी कला में निपुण हैं, अत्यंत श्रद्धा और एकाग्रता के साथ फूलों की भव्य सजावट तैयार करते हैं। इस सजावट में उपयोग किए जाने वाले फूलों की संख्या और उनकी विविधता को देखकर इस आयोजन की विराटता, और अद्भुत स्वरूप का सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है।

इस भव्य सजावट के लिए लगभग ५० लाख मोगरे के फूलों का उपयोग किया जाता है। इसके साथ ही तीन से साढ़े तीन हजार गुलाब की गड्डियां, डेढ़ से दो हजार लिली की गड्डियां, लगभग दो हजार किलोग्राम गेंदे के फूल, दो हजार किलोग्राम गुलदाउदी के फूल, बीस हजार चंपा के फूल, सौ किलोग्राम गुलाब की पंखुड़ियां, तथा कमल, जाई, जूही, गुड़हल और लगभग एक हजार रजनीगंधा की गुलछड़ियों का अत्यंत कलात्मक और संतुलित ढंग से उपयोग किया जाता है।

इन सभी पुष्पों की सुगंधमयी छटा के सानिध्य में विराजमान मोरया की रजत प्रतिमा पर उटी (उबटन) का लेपन किया जाता है। इस अवसर पर मंदिर में उटी का भजन प्रस्तुत किया जाता है, जिसके मधुर स्वरों में घुला भक्तिभाव और भी अधिक गहराता चला जाता है।

फूलों की नक्काशी, रंग-संयोजन और सूक्ष्म कारीगरी की अद्भुत कलात्मकता यूं जमती है जैसे यह सजावट कारीगरों की कसौटी की एक परीक्षा ही हो। हर दृष्टिकोण से यह दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर देती है।

मोगरे के फूलों की मनमोहक सुगंध चारों ओर फैल जाती है। वातावरण इतना आनंददायक और मनोहारी हो जाता है कि मानो हम किसी दिव्य और सुगंधित पुष्पवाटिका में विचरण कर रहे हों। भक्तों का मन शांत, प्रसन्न और भक्तिरस से ओतप्रोत हो उठता है।

“श्रीमंत दगडूशेठ गणपति मंदिर” का "मोगरा महोत्सव" केवल एक उत्सव नहीं, बल्कि नूतनता, अलग पहचान और कलात्मकता का त्रिवेणी संगम है। प्रत्येक उत्सव के माध्यम से भक्तों को कुछ नया, कुछ विलक्षण और अत्यंत भावस्पर्शी अनुभव प्रदान करवाने वाली यह परंपरा मंदिर की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का तेजस्वी दर्शन कराती है।

नव संजीवनी

पुरंदर तालुका से लगातार दो वर्षों तक बरसात ने मुंह फेर लिया था। पूरा क्षेत्र सूखे की चपेट में आ गया था। पीने के पानी की भारी कमी हो गई थी और खेतों की जमीन सूखकर गहरी दरारों से भर गई थी। पानी और चारे के अभाव में पशुधन भी बेहाल था। निराशा, बेबसी और नकारात्मकता के गुबार लोगों के मन में घर कर गए थे।

पिंगोरी गांव के बांध की स्थिति भी इससे अलग नहीं थी। वर्षों से जमा गाद के कारण उसमें पानी ठहर नहीं पाता था और फिर उसके जमीन में रिसने का तो सवाल ही नहीं उठता था। ऐसे में इस क्षेत्र के बाबा शिंदे ने यह भयावह स्थिति महेश सूर्यवंशी के संज्ञान में लाई। उन्होंने बिना एक क्षण की भी देरी किए इस विषय को सीधे ट्रस्ट के समक्ष रखा। ट्रस्ट के अध्यक्ष अशोक गोडसे तथा अन्य पदाधिकारियों ने तुरंत वहां पहुंच कर गांव और बांध का प्रत्यक्ष मुआईना किया।

इसके बाद "श्रीमंत दगडूशेठ हलवाई गणपति ट्रस्ट" के पदाधिकारी तत्कालीन विभागीय आयुक्त प्रभाकर देशमुख से मिलने पहुंचे। इस विषय पर विस्तृत चर्चा हुई। हर दो-तीन वर्षों में फिर से उत्पन्न होने वाले इस संकट का समाधान अस्थायी उपायों से संभव नहीं है, बल्कि इसका स्थायी समाधान निकालना ही होगा, ऐसा दृढ़ निर्णय लिया गया। इस दीर्घकालिक समाधान की योजना की जिम्मेदारी ट्रस्ट ने स्वयं अपने ऊपर ली।

इस उद्देश्य से पिंगोरी गांव का चयन किया गया। पहाड़ी क्षेत्र में स्थित यह गांव और यहां का बांध दोनों, जलसंचय बढ़ाने की दृष्टि से एक बड़ी संभावना प्रस्तुत करते थे। पिछले लगभग चालीस वर्षों से बांध में जमी गाद निकालने का कोई कार्य नहीं हुआ था। इस कार्य के लिए लाखों रुपये की आवश्यकता थी। ट्रस्ट ने यह जिम्मेदारी भी अपने कंधों पर उठाई।

इस कार्य से गांव के लोगों को ही रोजगार मिले और उन्हें नए अवसर प्राप्त हों, इस उद्देश्य से स्थानीय लोगों की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित की गई। इस कार्य के लिए विशालकाय मशीनरी और उपकरण मंगवाए गए।

इस पहल का निरीक्षण करने पहुंचे तत्कालीन मुख्यमंत्री देवेंद्रजी फडणवीस ने इसे 'जलयुक्त शिवार' योजना के अंतर्गत उत्कृष्ट कार्य बताते हुए ट्रस्ट का सम्मान किया।

गांव के किसान और खेतिहर मजदूर दिन-रात अथक परिश्रम करने लगे। बाबा शिंदे ने लोगों को एकजुट कर कार्य की उचित योजना बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। पुरंदर की तत्कालीन तहसीलदार सीमा होळकर का भी इस अभियान को महत्वपूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ।

इन सामूहिक प्रयासों से धीरे-धीरे नकारात्मकता, सकारात्मक ऊर्जा में बदल गई। राजनीति और मतभेदों को भुलाकर गांव में एकता का माहौल बन गया। ग्रामीणों, किसानों और मजदूरों ने इस कार्य को 'गणपति बाप्पा का प्रसाद' मानकर दिन-रात मेहनत की। परिणामस्वरूप, जिस बांध में पहले अधिकतम २९ करोड़ लीटर पानी ही संग्रहित हो पाता था, उसकी क्षमता बढ़कर ५१ करोड़ लीटर हो गई।

पानी की उपलब्धता सुनिश्चित होने से किसानों के लिए वर्ष में दो फसलें लेना संभव हो गया। जल के भूगर्भ में समाने से पूरा क्षेत्र फिर से हरियाली से भर उठा और वनस्पति पुनः लहलहाने लगी। इतना अच्छा जल संचय हो गया कि वह अगले दो वर्षों के लिए भी पर्याप्त था। इसके परिणामस्वरूप अब इस क्षेत्र के ग्रामीणों ने दुग्ध व्यवसाय, औषधीय पौधों की खेती तथा अन्य पूरक व्यवसाय शुरू कर दिए हैं।

पिंगोरी की तत्कालीन सरपंच पल्लवी भोसले ने इस पहल के लिए ट्रस्ट का हृदय से आभार व्यक्त किया और अन्य गांवों से भी इसी प्रकार एकजुट होकर सहयोग करने का आह्वान किया। इसके बाद आसपास के गांवों में 'पानी बचाओ, पानी संजोओ', नालों की खुदाई और ड्रिप सिंचाई जैसे अभियानों को भी बढ़ावा मिला।

ट्रस्ट ने जब यह जिम्मेदारी अपने कंधों पर उठाई, उसी क्षण से गांववासियों के मन में एक नया विश्वास जाग उठा कि अब पानी की यह समस्या हमेशा के लिए समाप्त हो जाएगी। क्योंकि ट्रस्ट द्वारा हाथ में लिया गया कोई भी कार्य कभी अधूरा नहीं रहता, यही उसकी सच्ची पहचान थी। यह पहल गांव के लिए केवल एक योजना नहीं, बल्कि अंधकारमय जीवन में मिली एक नई संजीवनी साबित हुई। इसके परिणामस्वरूप पूरे गांव में सामाजिक परिवर्तन की नई सुबह का उदय हुआ और निराशा की जगह आशा, उत्साह और नवचेतना से भरा वातावरण विकसित हुआ।

इस पहल ने गांव को केवल पानी ही नहीं दिया, बल्कि उससे भी अधिक मूल्यवान चीज़ दी - जीवन के प्रति नया विश्वास। इसलिए यह केवल जल संरक्षण का अभियान नहीं था, बल्कि पूरे समाज को नई ऊर्जा, आशा और नवचेतना से प्रेरित करने वाला एक ऐतिहासिक कदम साबित हुआ।

॥ पुष्टिपति विनायक जयंती ॥ (डाब महोत्सव)

भगवान शिव और माता पार्वती के पावन गृह से वैशाख शुक्ल पूर्णिमा के शुभ अवसर पर प्रकट हुए इस विनायक अवतार ने अधर्म के अंधकार का अंत किया। पृथ्वी, पाताल और स्वर्गलोक में आतंक फैलानेवाले दुर्मति राक्षस के संहार हेतु, माता पार्वती को दिए गए वरदान के अनुसार भगवान श्री गणेश ने विनायक रूप धारण कर अधर्म का नाश किया। इसी कारण यह पावन दिवस श्रद्धापूर्वक 'पुष्टिपति विनायक जयंती' के रूप में मनाया जाता है।

यहां भक्तिभाव से परिपूर्ण " डाब / कच्चे नारियल का महोत्सव" आयोजित होता है। किसानों की ओर से उत्तम वर्षा की कामना के साथ बाप्पा को अर्पित किए जाने वाले ५,००० नारियलों का महानैवेद्य मानो प्रकृति से संवाद साधने वाली प्रार्थना का प्रतीक है। हरे नारियलों, पत्तों की शान्तिदाई सजावट और टहनियों - पत्तों से सुशोभित नारियल वृक्षों के बीच विराजमान गणराय की शांत एवं प्रसन्न प्रतिमा भक्तों को एक दिव्य अनुभूति से भर देती है।

प्राकृतिक तत्वों से साकार की गई यह सजावट "श्रीमंत दगडूशेठ गणपति मंदिर" की एक विशिष्ट पहचान है। यहां के त्यौहार की प्रत्येक सजावट केवल आंखों को ही नहीं, बल्कि हृदय को भी स्पर्श करती है।

इसके पीछे कला दिग्दर्शकों से लेकर कार्यकर्ताओं तक सभी की अथक साधना और समर्पण है - जिसका बखान शब्दों में संभव नहीं है । इस विविध कल्पनाशीलता, भिन्न भिन्न उत्सवों और उनके आशयपूर्ण प्रस्तुतीकरण मंदिर के ट्रस्टी एवं कार्यकर्ताओं की सृजनशीलता का जीवंत प्रमाण है। ऐसे पावन अवसरों पर मंदिर में श्री गणेश यज्ञ, बृहस्पति सूक्त अभिषेक तथा प्रातःकालीन स्वराभिषेक के गुंजन के साथ ही भक्तों के भक्तिरस से वातावरण सराबोर हो जाता है। अगले दिन इन नारियलों का प्रसाद ससून अस्पताल के मरीजों में वितरित किया जाता है, जहां भक्ति सेवा का रूप धारण कर गणराय के करुणामयी स्वरुप को और अधिक उजागर करती है।

इतिहास का वह काला दिन

करोड़ों श्रद्धालुओं की आस्था का केंद्र, प्रत्येक भक्त के हृदय में अटल स्थान रखने वाले "श्रीमंत दगडूशेठ हलवाई गणपति" बाप्पा पर वर्ष १९८८ में कुछ विघटनकारी और दुष्ट प्रवृत्ति के लोगों ने ऐसा कृत्य किया जिसकी किसी ने कल्पना भी नहीं की थी।

जैसे ही यह घटना लोगों तक पहुंची, पूरे पुणे में आक्रोश फैल गया और देखते ही देखते इसकी लहर से पूरा महाराष्ट्र संतप्त हो उठा। जगह - जगह आगजनी की वारदातें हो रही थीं। तत्कालीन सरकार के सामने स्थिति को नियंत्रित करना बड़ी चुनौती बन गई। हर किसी के मन में एक ही प्रश्न था- "पुणे जैसे संस्कारित शहर में ऐसा कैसे हो सकता है?" इस घटना से व्यक्ति मात्र का भयभीत होना स्वाभाविक ही था।

ऐसी अत्यंत तनावपूर्ण और कठिन परिस्थिति में भी "श्रीमंत दगडूशेठ हलवाई सार्वजनिक गणपति मंडल" के विश्वस्त और कार्यकर्ता बिना विचलित हुए दृढ़ता से स्थिति का सामना करते रहे। सबसे पहले मंदिर की साफ-सफाई की गई, तथा भगवान गणपति की प्रतिमा का विधिवत शुद्धिकरण कर मंदिर को पुनः श्रद्धालुओं के दर्शन के लिए खोल दिया गया। वहीं दूसरी ओर पूरे राज्य में फैली हिंसा थमने का नाम नहीं ले रही थी, जिसके कारण राज्य रिज़र्व पुलिस बल और केंद्र से अतिरिक्त सुरक्षा बल बुलाने पड़े।

इसी पृष्ठभूमि में तात्या, मामा रासने, आप्पा सूर्यवंशी और बुवा रासने ने एक दृढ़ निर्णय लिया। हिंदू समाज और गणेशोत्सव कार्यकर्ताओं को संगठित कर इस संकट का स्थायी समाधान खोजने का संकल्प लिया गया। ज्योतिर्भास्कर जयंतराव साळगावकर की उपस्थिति में पुणे में एक महत्वपूर्ण सभा आयोजित की गई, जिसमें उसी दिन "राष्ट्रीय गणेशोत्सव महामंडल" की स्थापना हुई। गणेशोत्सव के सुव्यवस्थित आयोजन हेतु आप्पा सूर्यवंशी ने सुस्पष्ट एवं विचारपूर्वक मापदंडों वाली ४० सूत्रीय आचार संहिता तैयार की।

४० सूत्रीय आचार संहिता

१. महाराष्ट्र के सभी स्थानों पर एक ही शुभ मुहूर्त में भगवान श्रीगणेश की स्थापना करें।

२. भगवान श्रीगणेश की आरती प्रातः तथा सायंकाल ८ बजे सभी स्थानों पर एक ही समय पर करें।

३. यह उत्सव हिंदू धर्म का उत्सव है।

४. अपने धर्म पर गर्व करें।

५. गर्व से कहें - हम हिंदू हैं।

६. फिल्मी संगीत, पाश्चात्य संगीत, रंबा-सांबा, ब्रेक डांस आदि जैसी अशोभनीय प्रवृत्तियों से बचें।

७. भक्ति गीत एवं मधुर भारतीय संगीत को अपनाएं।

८. कर्णभेदी ध्वनि पर नियंत्रण रखें तथा शोभायात्राओं में लाउडस्पीकर के स्थान पर सीमित रूप से पारंपरिक वाद्ययंत्रों का उपयोग करें।

९. उत्सव के दौरान कृपया मद्यपान का पूर्णतः त्याग करें।

१०. उत्सव के दौरान कृपया जुए जैसी गतिविधियों से दूर रहें।

११. अपने उत्सव को राष्ट्रीय स्वरूप प्रदान करें।

१२. उत्सव को पूर्णतः धार्मिक स्वरूप में मनाएं।

१३. संपूर्ण महाराष्ट्र में गणेशोत्सव को समाजोन्मुख बनाएं।

१४. सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन करें।

१५. गणेशोत्सव को लोक शिक्षा एवं जन जागरण का प्रभावी माध्यम बनाने का प्रयास करें।

१६. मानवसेवा का व्रत अपनाएं और सदैव यह भावना बनाए रखें कि ईश्वर सर्वोपरि हैं।

१७. दीन-दुखियों, दिव्यांगजनों, आर्थिक रूप से कमजोर, विधवाओं तथा परित्यक्त महिलाओं की सहायता करें।

१८. समाजहित के प्रकल्पों को अपनाएं।

१९. महाराष्ट्र के ऐतिहासिक दुर्गों एवं प्राचीन मंदिरों के जीर्णोद्धार में योगदान दें।

२०. अपने क्षेत्र के मंदिरों की पवित्रता व प्रसन्नता बनाये रखें।

२१. उत्सव के दौरान समाज प्रबोधन पर आधारित झांकियां प्रस्तुत करें।

२२. उत्सव के दौरान किसी की भी भावनाओं को आहत न करें।

२३. गणेशोत्सव हेतु प्राप्त सहयोग, दान एवं सदस्यता राशि से अतिवृष्टि/ बाढ़ एवं सूखा प्रभावित बंधुओं की सहायता करें।

२४. पीड़ित एवं जरूरतमंद रोगियों की सहायता करें।

२५. समाज के सभी बंधुओं एवं वर्गों के साथ उत्सव मनाएं।

२६. विसर्जन शांति पूर्वक एवं अनुशासन पूर्वक करें। आइये, गणेशोत्सव सहित सभी उत्सवों को डॉल्बी-मुक्त मनाते हैं।

२७. विसर्जन के दौरान अशोभनीय एवं विडंबनात्मक गतिविधियों पर रोक लगाएं।

२८. पवित्र वातावरण से शोभायात्रा की गरिमा बढ़ाएं।

२९. ऐसा उत्सव मनाएं जो सभी को आनंद प्रदान करे।

३०. शोभायात्रा में प्राप्त सहयोग, दान एवं सदस्यता राशि देने वालों, मातृशक्ति, प्रतिष्ठित नागरिकों को सहभागी करें तथा सभी का आदर करें।

३१. विद्यार्थियों से प्रतिदिन प्रातःकाल अथर्वशीर्ष स्तोत्र के आवर्तन कराएं।

३२. उत्सव मंडप में राष्ट्रगुरु लोकमान्य तिलक एवं छत्रपति शिवाजी महाराज के चित्र लगाएं।

३३. उत्सव मंडप पर श्री संत ज्ञानेश्वर महाराज एवं श्री संत तुकाराम महाराज की भगवा पताका फहराएं।

३४. उत्सव के दौरान अशोभनीय प्रथाओं का त्याग करें।

३५. अपने आराध्य देव श्रीगणेश की पवित्रता बनाए रखें।

३६. अपने मंडल को मानवसेवा का स्थायी मंदिर बनाएं।

३७. अपने क्षेत्र में व्यायामशाला प्रारंभ करें।

३८. गरीब विद्यार्थियों के लिए निःशुल्क अध्ययन केंद्र प्रारंभ करें।

३९. व्यक्ति से बड़ा समाज है और समाज से बड़ा राष्ट्र है, इस भावना के प्रति सदैव जागरूक रहें।

४०. प्रतिकूल परिस्थितियों से संघर्षरत मेधावी विद्यार्थियों के अभिभावक बनें।

इतने भयावह, नकारात्मक और अस्थिर समय में भी विश्वस्तों ने तात्या के नेतृत्व में महामंडल की स्थापना की, यह वास्तव में अद्भुत और प्रेरणादायक कदम था। क्योंकि महामंडल द्वारा प्रसारित यह आचार संहिता भक्तों की आहत भावनाओं, सामाजिक अस्थिरता और राजनीतिक दबाव जैसी परिस्थितियों के बीच तैयार की गई थी। ऐसी चुनौतीपूर्ण परिस्थिति में भी नकारात्मकता को सकारात्मक और दूरदर्शी कार्यों में बदलना, विश्वस्त मंडल की परिपक्वता और धैर्य का प्रमाण था।

इस आचार संहिता में आने वाले समय के गणेशोत्सव के स्वरूप का सर्वांगीण रूप से परिवर्तन करने की क्षमता थी। समाज में एक संस्कारित, अनुशासित और आदर्श उत्सव संस्कृति के निर्माण के लिए आज यह आचार संहिता मार्गदर्शक बनी हुई है। यदि सभी सार्वजनिक गणेशोत्सव मंडल इसे अपनाएं, तो गणेशोत्सव आने वाली पीढ़ियों के लिए एक आदर्श उत्सव बन सकता है।

गाणपत्य संप्रदाय में जैसे भाद्रपद और माघ मास का विशेष महत्व है, वैसे ही ज्येष्ठ शुक्ल चतुर्थी पर मनाया जाने वाला श्री शेषात्मज गणेश जन्मोत्सव भी अत्यंत पावन और महत्वपूर्ण माना जाता है। यह दिन केवल एक तिथि न होकर धर्म की स्थापना हेतु भगवान गणेश के दिव्य अवतार की स्मृति का प्रतीक पर्व है।

सृष्टि की रचना में लीन भगवान ब्रह्मा अपनी ही सृष्टि पर मोहित हो गए। उसी मायामय अवस्था में उनकी नासिका से एक बालक उत्पन्न हुआ। उसे देखकर उन्होंने इस संतति का नाम 'मायाकर' रखा और उस पर कृपा वर्षाकर अनेक वरदानों से उसे परिपूर्ण बना दिया।

काल के प्रवाह के साथ राक्षस विप्रचिति ने मायाकर को राक्षसों का राजा घोषित किया। वरदानों के बल पर उसने पृथ्वी और स्वर्ग पर अधिकार कर लिया। सामर्थ्य और अहंकार बढ़ने पर उसने पाताल लोक पर भी आक्रमण कर दिया। उसके अपार सामर्थ्य के सामने सभी देवता असहाय हो गए। अंततः भगवान शेष ने पूर्ण श्रद्धा से भगवान गणेश का स्मरण किया।

भगवान शेष की ध्यानमग्न अवस्था में ही, उनकी कठोर तपस्या से प्रसन्न होकर भगवान श्रीगणेश 'श्री शेषात्मज' के दिव्य स्वरूप में ज्येष्ठ शुक्ल चतुर्थी तिथि को मध्याह्न काल में प्रकट हुए। यह अवतार अधर्म के विनाश और धर्म की रक्षा के लिए प्रकट हुए साक्षात चैतन्यस्वरूप भगवान का दिव्य प्राकट्य माना जाता है।

इसी अवतार में आगे चलकर गजासुर नामक राक्षस के संहार के लिए भगवान श्रीगणेश ने ब्रह्मा, विष्णु, महेश, देवी और सूर्य - इन पंचेश्वरों की शक्तियों से युक्त मूषक को अपना वाहन बनने की आज्ञा दी। उस दिव्य मूषक पर आरूढ़ होकर उन्होंने गजासुर का वध किया। इसी कारण उनके इस अवतार को 'श्री मूषकग' के पावन नाम से जाना जाता है।

इस प्रकार श्री शेषात्मज गणेश जन्मोत्सव केवल एक पौराणिक प्रसंग नहीं बल्कि भक्ति, शरणागति और दैवी कृपा का अद्भुत प्रतीक है। यह पर्व अधर्म पर धर्म की विजय, अहंकार पर भक्ति के सामर्थ्य की विजय के साथ साथ संकट के समय गणराय की कृपा पर अटूट विश्वास का संदेश देता है। इस अवसर पर "श्रीमंत दगडूशेठ गणपति मंदिर" में विधि-विधान से गणेश यज्ञ तथा सहस्रावर्तन पाठ का आयोजन किया जाता है। भगवान गणेश को विविध फलों की भव्य सजावट के मध्य विराजमान किया जाता है तथा उन्हें ज़री वस्त्रों से श्रृंगारित करके अलंकरण युक्त पूजन किया जाता है। उस दिन विशेष रूप से पगड़ी के आकार का कलात्मक मुकुट और उस पर सुशोभित स्वर्णाभूषण बाप्पा के दिव्य स्वरूप की शोभा को और बढ़ा देते हैं।

यह उत्सव केवल दर्शन तक सीमित नहीं रह कर भक्तों को अनेक धार्मिक परंपराओं से परिचित कराते हुए उसके आध्यात्मिक महत्व का अनुभव भी कराता है। एक ही मंदिर में इतने विविध, शास्त्रसम्मत और कलात्मक उत्सवों का आयोजन वास्तव में दुर्लभ योग है। इसके पीछे ट्रस्टियों की दूरदृष्टि, कार्यकर्ताओं की कर्तव्यनिष्ठा और सेवा-भाव की सशक्त परंपरा प्रमुखता से परिलक्षित होती है। यही कारण है कि 'श्री शेषात्मज गणेश जयंती' केवल एक उत्सव नहीं, बल्कि "श्रीमंत दगडूशेठ हलवाई सार्वजनिक गणपति मंडल" की समृद्ध परंपरा, गहन भक्ति और व्यवस्थापन कौशल्य का गौरवशाली प्रतीक बन गया है।

मंदिर में सहस्रावर्तन का पाठ

॥ अक्षय तृतीया ॥ (आम महोत्सव)

साढ़े तीन शुभ मुहूर्तों में से एक अत्यंत पावन और महत्वपूर्ण मुहूर्त अक्षय तृतीया का माना जाता है। इस पावन अवसर पर श्रीमंत दगडूशेठ गणेश मंदिर में भगवान श्री गणराय को ११,००० आमों का भव्य महाभोग अर्पित किया जाता है। केसरिया आमों के ढेरों के मध्य विराजमान बाप्पा का स्वरूप और भी अधिक तेजस्वी, प्रसन्न तथा दिव्य प्रतीत होता है। पीछे स्थित स्वर्ण-रजत मेहराब पर पड़ने वाली आमों की केसरिया आभा संपूर्ण सजावट को कोमल, सुनहरी-केसरिया रंग से आलोकित कर देती है।

पीले-केसरिया आमों की छटा से सजा, हरे पत्तों का मनोहारी मंडप और उस पर लाल गुलाबों की आकर्षक किनारी-यह रंग-संयोजन इतना मनमोहक होता है कि मन पलभर में ही उसकी अनुपम सुंदरता में खो जाता है।

मंदिर का यह दृश्य ऐसा प्रतीत होता है, मानो बाप्पा हरी-भरी आम्रवाटिका में विहार कर रहे हों। इस दिव्य दर्शन के लिए लाखों श्रद्धालु उत्सुक रहते हैं। परंपरा के अनुसार बाद में सभी आम प्रसाद स्वरूप भक्तों में वितरित किए जाते हैं। इस अवसर पर स्वराभिषेक, भजन और कीर्तन का आयोजन भी होता है। यह संपूर्ण भव्य सजावट और उसकी व्यवस्था कला निर्देशक, सहयोगी कलाकारों तथा कार्यकर्ताओं की अथक मेहनत का प्रतीक है।

दूसरे दिन ये सभी आम प्रसाद के रूप में श्रद्धालुओं, अस्पतालों के मरीजों, वृद्धाश्रमों के बुजुर्गों तथा दिव्यांगजनों में वितरित किए जाते हैं।

श्री शारदेश मंगलम्

गाणपत्य संप्रदाय में भगवान श्रीगणेश की दो दिव्य शक्तियों - देवी सिद्धि और देवी बुद्धि - की पूजा की जाती है। भगवान की क्रियाशील शक्तियों को देवी सिद्धि तथा देवी बुद्धि - शरद ऋतु में प्रकट होने के कारण देवी बुद्धि - को 'शारदा' कहा जाता है। शरद ऋतु के समान प्रसन्नता देने वाली देवी शारदा और भगवान श्रीगणेश के इस दिव्य मिलन के मंगलोत्सव को "श्री शारदेश मंगलम्" कहा जाता है।

अक्षय तृतीया के पावन अवसर पर "श्रीमंत दगडूशेठ हलवाई गणपति मंदिर" में भगवान श्रीगणेश और देवी शारदा का राजसी विवाहोत्सव श्रद्धा और भक्ति के साथ मनाया जाता है। शहनाई की मधुर धुन और मंगलाष्टकों के उद्घोष के बीच विवाह वेदी पर दोनों की प्रतिमाएं प्रतिष्ठित की जाती हैं। उन्हें भव्य वस्त्रों और बहुमूल्य आभूषणों से अलंकृत कर विविध मिठाइयों एवं पंचपक्वान्नों का नैवेद्य अर्पित किया जाता है।

फूलों की मनोहारी मालाएं, तोरण और प्रवेश द्वार पर सजे केले के स्तंभ संपूर्ण सजावट को अत्यंत भव्य और आकर्षक बना देते हैं। इस अवसर पर नवविवाहित दंपति भगवान श्रीगणेश और देवी शारदा की प्रतिमाओं को हाथों में लेकर आशीर्वाद कार्यक्रम को सम्पन्न करते हैं। 'शुभ मंगल सावधान' के उद्घोष तथा मंगलाष्टक गीतों के गायन के साथ विवाह संस्कार विधिपूर्वक संपन्न होता है। यह अनूठी परंपरा इतनी आकर्षक है कि इसके दिव्य दर्शन के लिए विदेशी श्रद्धालु भी विशेष रूप से उपस्थित होते हैं, क्योंकि ऐसे अद्भुत धार्मिक अनुष्ठान, समारोह और सजावट और कहीं दिखाई नहीं पड़ते।

पंडित जी के मार्गदर्शन में यह संपूर्ण विवाह समारोह भव्यता के साथ एवं विधिपूर्वक संपन्न होता है। इस दिव्य उत्सव के साक्षी बनने के लिए असंख्य श्रद्धालु उपस्थित रहते हैं। इसके पश्चात भगवान श्रीगणेश और देवी शारदा की भक्तिभाव से आरती की जाती है। इस राजसी विवाहोत्सव के अवसर पर की गई पुष्प-सज्जा भी अपनी भव्यता और आकर्षण के लिए विशेष प्रशंसनीय होती है।

मानव सेवा अभियान

वृक्षारोपण

पंढरपुर वारी के मार्ग, अष्टविनायक यात्रा मार्ग तथा महाराष्ट्र के प्रमुख राजमार्ग हरियाली और समृद्धि से आच्छादित हों, इस उद्देश्य से "श्रीमंत दगड़ूशेठ हलवाई गणपति ट्रस्ट" द्वारा ५० लाख पौधों का रिकॉर्ड 'वृक्षारोपण अभियान' चलाया गया। इस अभियान के अंतर्गत अनेक स्थानों पर पौधों के संरक्षण के लिए सुरक्षात्मक जालियों की भी व्यवस्था की गई।

बड़, पीपल, इमली और आम जैसे दीर्घायु एवं पर्यावरण-अनुकूल वृक्षों का रोपण किया गया। इस अभियान का मुख्य उद्देश्य राज्य की सड़कों और राजमार्गों के दोनों ओर हरित पट्टी विकसित करना तथा पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देना है।

विशेष रूप से पालकी मार्ग पर लगभग ५० हजार पौधों का रोपण कर इस पावन पथ को हरियाली का अनुपम उपहार दिया गया।

जय गणेश आपत्ति निवारण अभियान

चारा वितरण

सूखे की स्थिति में केवल तात्कालिक राहत तक सीमित न रहते हुए, दीर्घकालिक समाधान की आवश्यकता को ध्यान में रखकर "श्रीमंत दगड़ूशेठ हलवाई गणपति ट्रस्ट" द्वारा पुरंदर तहसील के दस गांवों में गुणवत्तापूर्ण चारे का वितरण किया गया। ग्रामीणों ने भी इसे सेवा का कार्य मानते हुए पूरे सहयोग से इस अभियान को सफल बनाया।

इस अभियान के अंतर्गत पशुओं के लिए गन्ना, हरा चारा और मक्के का चारा उपलब्ध कराया गया। साथ ही, वनीकरण और ड्रिप सिंचाई जैसी स्थायी उपायों की भी योजना बनाई गई।

सूखाग्रस्त क्षेत्रों के पशुओं के लिए ट्रस्ट द्वारा उपलब्ध कराया जाने वाला निःशुल्क चारा केवल सहायता नहीं, बल्कि उनके जीवन का एक महत्वपूर्ण सहारा साबित हो रहा है।

निमगांव केतकी – ओलावृष्टि प्रभावित खेत मजदूरों के लिए आश्रय

इंदापुर तहसील के निमगांव केतकी में ओलावृष्टि से प्रभावित खेतिहर मजदूरों के लिए "श्रीमंत दगडूशेठ हलवाई गणपति ट्रस्ट" द्वारा ३०० वर्ग फुट के पक्के घर बनाकर दिए गए। इस पहल से उन्हें केवल एक घर ही नहीं, बल्कि बाप्पा की कृपा से सुरक्षित और सम्मानपूर्ण जीवन का नया आश्रय स्थल मिला।

यह सहायता केवल घर उपलब्ध कराने तक सीमित नहीं रही, बल्कि उनके जीवन में नई आशा, आत्मविश्वास और स्थिरता लेकर आई। नज़रनिहाल बाप्पा की उपस्थिति के प्रमाण स्वरूप ट्रस्ट की इस पहल ने संकट से जूझ रहे परिवारों के जीवन में उम्मीद का उज्ज्वल दीप प्रज्वलित किया।

निःशुल्क एम्बुलेंस सेवा

वर्ष १९८९ में "श्रीमंत दगडूशेठ हलवाई गणपति ट्रस्ट" द्वारा पुणे महानगरपालिका क्षेत्र के मरीजों के लिए निःशुल्क एम्बुलेंस सेवा शुरू की गई। इस सेवा का मुख्य उद्देश्य जरूरतमंदों को आपातकालीन स्थिति में समय पर चिकित्सा सहायता उपलब्ध कराना है। पुणे महानगरपालिका और पिंपरी-चिंचवड़ महानगरपालिका क्षेत्र के नागरिकों के लिए यह एम्बुलेंस सेवा २४ घंटे पूर्णतः निःशुल्क उपलब्ध है। वहीं, इन क्षेत्रों के बाहर के नागरिक केवल डीजल का खर्च वहन कर इस सेवा का लाभ उठा सकते हैं।

साल भर १२ सुसज्ज एम्बुलेंस इस सेवा में तत्पर रहती हैं और हजारों मरीजों के लिए जीवनरक्षक बनी हैं। मानवता की भावना से शुरू हुई यह सेवा आज भी निरंतर समाजसेवा का एक प्रेरणादायी उदाहरण बनी हुई है।

सूखाग्रस्त क्षेत्रों के लिए जीवनदायी उपक्रम

जल टैंकर सुविधा

सूखाग्रस्त क्षेत्रों में पानी की गंभीर आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए "श्रीमंत दगडूशेठ हलवाई गणपति ट्रस्ट" द्वारा पुणे जिले की पुरंदर तहसील की घाटियों और बस्तियों में प्रतिदिन लगभग एक लाख लीटर निःशुल्क जलापूर्ति की जाती है। इस पहल से पेयजल संकट से जूझ रहे अनेक परिवार पेय जल की उपलब्धता के प्रति आश्वस्त हो गए हैं।

इसी जल टैंकर सुविधा के माध्यम से वारी / यात्रा मार्ग, प्रमुख सड़कों, राजमार्गों तथा पालकी पड़ावों पर लगाए गए पौधों को नियमित रूप से पानी दिया जाता है, जिससे हरित अभियान को निरंतर संबल मिलता है। पुरंदर तहसील के सूखाग्रस्त क्षेत्रों में प्रतिदिन एक लाख लीटर निःशुल्क जलापूर्ति कर ट्रस्ट ने मानव, प्रकृति और आस्था - तीनों के प्रति समान संवेदनशीलता का आदर्श उपक्रम खड़ा किया है।

प्रतिदिन १ लाख लीटर पानी का वितरण किया जाता है

जय गणेश जलसंवर्धन अभियान

पथप्रदर्शक उपक्रम

वर्ष २०१५ में पुणे शहर को जलापूर्ति करने वाले खड़कवासला बांध से गाद निकालने के कार्य का शुभारंभ "श्रीमंत दगडूशेठ हलवाई गणपति ट्रस्ट" ने ३५० गणेश मंडलों के सहयोग तथा ग्रीन थीम के कर्नल श्री सुरेश पाटिल के मार्गदर्शन में किया।

इस अभियान के अंतर्गत गाद निकालने के साथ-साथ वृक्षारोपण, श्रमदान और जनजागरण जैसे अनेक कार्य किए गए। इन प्रयासों से बांध की जलसंग्रहण क्षमता बढ़ी और पुणे शहर के लिए लगभग एक माह के अतिरिक्त जल भण्डारण की क्षमता उपलब्ध हो सकी। इस अभिनव उपक्रम को केंद्र सरकार ने पथप्रदर्शक पहल के रूप में मान्यता दी, जिसके बाद देशभर के अनेक बांधों में से गाद निकालने के अभियान प्रारंभ हुए।

पुणे को एक माह के अतिरिक्त जल भण्डारण की क्षमता उपलब्ध हुई

कौशल से आत्मनिर्भरता की ओर

औद्योगिक प्रशिक्षण केंद्र

अगस्त २००४ में "श्रीमंत दगडूशेठ हलवाई गणपति ट्रस्ट" द्वारा पुणे के कोंढवा में आईएसओ प्रमाणित औद्योगिक प्रशिक्षण केंद्र की स्थापना की गई। केंद्र एवं राज्य सरकार से मान्यता प्राप्त यह संस्थान ग्रामीण क्षेत्रों के बेरोजगार युवाओं को कौशल-आधारित प्रशिक्षण प्रदान कराता है।

इस केंद्र में लघु उद्योगों के लिए आवश्यक सैद्धांतिक एवं प्रात्यक्षिक प्रशिक्षण दिया जाता है। यहां एक समय में लगभग १०० विद्यार्थियों के प्रशिक्षण की व्यवस्था है और अब तक लगभग २००० विद्यार्थी आत्मनिर्भर बन चुके हैं।

विद्यार्थियों को व्यावहारिक कार्यानुभव, आधुनिक प्रशिक्षण पद्धतियों और उद्योगोन्मुख कौशल प्रदान करने के उद्देश्य से यह औद्योगिक प्रशिक्षण केंद्र निरंतर कार्यरत है तथा रोजगार सृजन का एक प्रभावी माध्यम बन गया है।

सपनों को पंख दिए गए

यूपीएससी अभ्यर्थियों का मार्गदर्शन

महाराष्ट्र के विद्यार्थियों की केंद्रीय सिविल सेवाओं (UPSC) में भागीदारी बढ़ाने के उद्देश्य से "श्रीमंत दगडूशेठ हलवाई गणपति ट्रस्ट" एवं " ज्ञानदीप अकादमी" के संयुक्त तत्त्वावधान में निःशुल्क यूपीएससी प्रशिक्षण कक्षाएं संचालित की जा रही हैं।

इस पहल के अंतर्गत प्रवेश परीक्षा एवं साक्षात्कार के माध्यम से प्रतिभाशाली और होनहार विद्यार्थियों का चयन किया जाता है। मराठी विद्यार्थियों को 'आईएएस' व 'आईपीएस' जैसे उच्च प्रशासनिक पदों तक पहुंचने का अवसर मिले और भविष्य में अधिक से अधिक अधिकारी देशसेवा के लिए तैयार हों, इसी उद्देश्य से यह मार्गदर्शी उपक्रम संचालित किया जा रहा है।

आस्था की यात्रा को स्वास्थ्य का निरंतर साथ

आषाढ़ी वारी / यात्रा चिकित्सा सेवा

वर्ष १९८९ से "श्रीमंत दगडूशेठ हलवाई गणपति ट्रस्ट" द्वारा आषाढ़ी वारी / यात्रा के दौरान यात्रिओं / जातरुओं के लिए चल चिकित्सालय, विशेषज्ञ चिकित्सक, दवाइयां और एम्बुलेंस सेवा निरंतर उपलब्ध कराई जा रही है। यह सेवा डॉ. बालासाहेब परांजपे के मार्गदर्शन में संचालित की जाती है।

आज संत ज्ञानेश्वर महाराज, संत तुकाराम महाराज और संत सोपानदेव महाराज की पालकी यात्राओं के मार्गों पर यह संपूर्ण चिकित्सा सेवा पूर्णतः निःशुल्क उपलब्ध कराई जाती है। इसके साथ ही वारकरियों के लिए निःशुल्क नेत्र परीक्षण तथा चश्मों का वितरण भी किया जाता है।

आस्था की इस पावन यात्रा में स्वास्थ्य का सशक्त सहारा बनकर ट्रस्ट की यह सेवा लाखों यात्रिओं / जातरुओं के लिए राहत का आधार बनी हुई है।

यात्रा के दौरान अन्नदान की निःस्वार्थ सेवा

जय गणेश अन्नदान सेवा

आषाढ़ी वारी / यात्रा के अवसर पर पंढरपुर की ओर प्रस्थान करने वाली संत ज्ञानेश्वर महाराज और संत तुकाराम महाराज की पालकियों का पुणे स्थित मंदिर के समीप पुष्पवर्षा के साथ आत्मीय स्वागत किया जाता है। इस भक्तिमय अवसर पर यात्रिओं / जातरुओं को प्रेमपूर्वक बूंदी का प्रसाद वितरित किया जाता है। इसके अतिरिक्त, पुणे में यात्रा प्रवास के दिन प्रातः लगभग २०,००० यात्रिओं / जातरुओं को नाश्ता वितरित किया जाता है। वहीं, वाल्दे ग्राम में ठहरे २५,००० यात्रिओं / जातरुओं के लिए 'सुवर्णयुग तरुण मंडल' द्वारा अपार श्रद्धा के साथ बाप्पा का महानैवेद्य अर्पित करवा के यात्रा में आत्मिक बलवृद्धि को बढ़ावा दिया जाता है। यह अन्नदान सेवा ट्रस्ट की समाज के प्रति निःस्वार्थ प्रेम और भक्तिभावपूर्ण योगदान को अधोरेखित करती है।

मानवता की पहचान

जय गणेश आपदा राहत अभियान

बाढ़, भूकंप और सूखे जैसी विभिन्न आपदाओं के समय मानवता का परिचय देते हुए "श्रीमंत दगडूशेठ हलवाई गणपति ट्रस्ट" ने हमेशा सहायता का हाथ बढ़ाया है। कोयना और पानशेत के भूकंप, लातूर-किल्लारी के भूकंप, मोवाड में बाढ़ तथा कोंकण, विदर्भ और आंबेगांव के आपदाग्रस्त क्षेत्रों में ट्रस्ट ने समय- समय पर भोजन, पेयजल, राहत शिविर और आर्थिक सहायता उपलब्ध कराई।

आपदाग्रस्तों की सहायता के लिए मुख्यमंत्री राहत कोष में ५१ लाख रुपये का योगदान दिया गया तथा कुपोषित आदिवासी भाइयों-बहनों के लिए भी विशेष सहायता उपलब्ध कराई गई। संकट चाहे कोई भी हो, सही समय पर संवेदनशीलता के साथ सहायता पहुंचाना ही ट्रस्ट की पहचान है। भोजन, वस्त्र और राहत सामग्री के माध्यम से आपदाग्रस्तों की सेवा उसका मानवीय संकल्प है।

शौर्य गौरव पुरस्कार

शौर्य का गौरव, कृतज्ञता का उत्सव

देश और समाज की सुरक्षा के लिए समर्पित जवानों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए " श्रीमंत दगडूशेठ हलवाई गणपती ट्रस्ट" ने उन्हें सदैव अपना माना है। वर्ष २०१० में ट्रस्ट के उपक्रमों से जुड़े बच्चों ने जवानों को राखियां भेजकर अपनी कृतज्ञता प्रकट की।

'मराठा बटालियन' के २०० शहीद जवानों की वीर माताओं और वीर पत्नियों को, प्रत्येक को ₹२५,००० की सहायता, साड़ी-चोली तथा 'जीवन गौरव पुरस्कार' देकर सम्मानित किया गया। इस पहल ने सैनिकों और ट्रस्ट के बीच सम्मान, स्नेह और कृतज्ञता का अटूट संबंध स्थापित हुआ जो आज भी उतना ही दृढ़ है।

यह पहल केवल सम्मान तक सीमित नहीं, बल्कि संवेदनशील और कृतज्ञ समाज के निर्माण की प्रेरणादायी मिसाल बन गई है।

शहीद जवानों की वीर माताओं और वीर पत्नियों, प्रत्येक को रुपये २५,००० एवं साडी-चोली दे कर सम्मानित किया जाता है।

पोलियो उन्मूलन अभियान

टीका है जीवन का आधार

वर्ष १९८९-९० की महामारी के बाद ग्रामीण क्षेत्रों से पोलियो उन्मूलन के लिए '"श्रीमंत दगडूशेठ हलवाई गणपति ट्रस्ट" ने अग्रणी भूमिका निभाई। पुणे जिले में लगभग १८ वर्षों तक ट्रस्ट ने इस अभियान में निरंतर महत्वपूर्ण योगदान दिया। दुर्गम एवं पहाड़ी क्षेत्रों, जहां सरकारी वाहन नहीं पहुंच पाते थे, वहां टीकाकरण पहुंचाने के लिए ट्रस्ट ने 'टाटा ६०८' वाहन उपलब्ध कराये।

यह सेवा भीमाशंकर, जुन्नर, खेड़ और पानशेत जैसे अति दुर्गम क्षेत्रों तक प्रभावी रूप से पहुंची। ट्रस्ट के सक्रिय सहयोग से पोलियो उन्मूलन अभियान को उल्लेखनीय सफलता मिली, और इस मुहीम की सफलता का आंकड़ा ५० से ९५ प्रतिशत पहुंचने में ट्रस्ट की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। हज़ारों आदिवासी व मजदूरों के बच्चों के लिए यह योजना जीवन दायिनी सिद्ध हुई।

कुष्ठरोगी आत्मनिर्भरता केंद्र

कौशल से आत्मनिर्भरता

पुणे के येवलेवाड़ी स्थित 'डॉ. जाल मेहता मेमोरियल अपंग द्वार औद्योगिक सहकारी संस्था' को "श्रीमंत दगडूशेठ हलवाई गणपति ट्रस्ट" द्वारा लगभग ६० लाख रुपये का सहयोग प्रदान किया गया। इस केंद्र में टाटा ट्रकों के पुर्जों के निर्माण के अलावा 'ससून हॉस्पिटल ' एवं 'येरवडा मेंटल हॉस्पिटल' के लिए बैंडेज तैयार किए जाते थे।

ट्रस्ट के सहयोग से यह फैक्टरी पुनः शुरू हुई, जिससे लगभग ३०० परिवार आत्मनिर्भर बने। इस पहल ने उनके सामाजिक और आर्थिक सशक्तिकरण को बड़ा आधार दिया।

भक्ति का स्वर्णिम स्पर्श

- दाजीकाका गाडगीळ

दाजीकाका गाडगीळ और पु. ना. गाडगीळ ने गणपति के इन आभूषणों को केवल गढ़ा ही नहीं, बल्कि उन्हें अपनी भक्ति से साकार किया; गणपति और तात्या के प्रति दाजीकाका का गहरा प्रेम उनके प्रत्येक शब्द में सहज परिलक्षित है।

"'दगडूशेठ हलवाई गणपति के आभूषण आप ही तैयार कीजिए'- ऐसा संदेश लेकर उस समय के सांसद विठ्ठलराव गाडगीळ हमारे पास आए थे। तभी से इस गणपति के कानों के आभूषण, सूंडहार से लेकर पीतांबर तक के सभी स्वर्णाभूषण हमने ही तैयार किए हैं। वास्तव में वही हमें सब देने वाले हैं। हमने यह कार्य सदैव सेवा-भाव से किया है। गणपति बाप्पा की कृपा ही से हमारा सब कुछ सुचारु रूप से चल रहा है। तात्या गोडसे अत्यंत महान गणेशभक्त थे। उनकी कीर्ति दूर-दूर तक फैली हुई थी और व्यक्तिगत रूप से भी मेरे मन में उनके प्रति अपार सम्मान था। मैं उनसे मज़ाक में कहा करता था - 'तात्या, यदि किसी दिन आप बीमार पड़ जाएँ और डॉक्टर आपका एक्स-रे लें, तो उसमें उन्हें केवल गणपति ही दिखाई देंगे'! बाप्पा के ये अलंकार भक्तों द्वारा श्रद्धापूर्वक अर्पित किए गए सोने-चांदी से ही निर्मित किए जाते हैं। यह भक्तों की अटूट आस्था और समर्पण का सर्वोच्च सम्मान है।

॥ गणेशोत्सव ॥
(भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी – अनंत चतुर्दशी)

महाराष्ट्र के सांस्कृतिक और आध्यात्मिक जीवन में गणेशोत्सव केवल एक उत्सव नहीं, बल्कि श्रद्धा, समर्पण और सामूहिक चेतना का जीवंत प्रतीक है। पुण्यनगरी पुणे में तो इस उत्सव का अनुभव और भी अधिक गहन आध्यात्मिक भावों से ओत-प्रोत होता है। श्रीमंत दगडूशेठ हलवाई गणपति का गणेशोत्सव केवल पुणे शहर तक सीमित नहीं है, बल्कि देश-विदेश में श्रद्धा, अनुशासन, सेवाभाव और उत्कृष्ट व्यवस्थापन के आदर्श के रूप में प्रतिष्ठित है। इस दिव्य उत्सव की तैयारियां प्रत्यक्ष गणपति प्रतिमा के आगमन से कई दिन पहले ही प्रारंभ हो जाती हैं। प्रत्येक क्षण में तपस्या का भाव होता है, प्रत्येक निर्णय में दूरदृष्टि और प्रत्येक कार्य में अटूट भक्ति समाहित होती है।

जिस मंडप में अगले दस दिनों तक करोड़ों श्रद्धालुओं की आस्था और प्रार्थनाएं एकत्रित होने वाली होती हैं, उसके विधिवत भूमिपूजन के साथ ही पूरा वातावरण पवित्रता से अनुप्राणित हो उठता है।

पूज्य मंगलमूर्ति का भव्य रूप से सजे रथ में मंगलवाद्यों की गूंज के बीच आगमन होता है। उस क्षण पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं के चेहरों पर झलकने वाला आनंद शब्दों से परे होता है।

भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी के शुभ प्रभात में श्री गणराय की प्राण-प्रतिष्ठा संपन्न होती है। प्रत्येक वर्ष परंपरा के अनुसार किसी आध्यात्मिक विभूति के करकमलों से यह मंगलमय विधि संपन्न की जाती है। उस पावन क्षण प्रत्येक भक्त के हृदय में ऐसा भाव जागृत होता है मानो स्वयं बाप्पा विराजमान हो गए हों। समाज में शांति, सुव्यवस्था, एकता और सद्भाव बना रहे, इसी पवित्र संकल्प के साथ प्रार्थना की जाती है और गणराय के दर्शन भक्तों के लिए खोल दिए जाते हैं।

जटोली शिव मंदिर, हिमाचल प्रदेश

॥ अथर्वशीर्ष पाठ ॥ (उत्सव का दूसरा दिन – ऋषि पंचमी)

उत्सव में महिलाओं की अधिकाधिक भागीदारी बढ़ाने के उद्देश्य से वर्ष १९८७ से आयोजित "सामूहिक अथर्वशीर्ष पाठ" श्रद्धा का अनुपम संगम बन गया है। हजारों महिलाओं द्वारा एक स्वर में किया गया पाठ पूरे वातावरण को भक्तिमय बना देता है। वर्ष २०२५ में लगभग ३५ हजार महिलाओं ने इस पावन आयोजन में सहभागिता की, जो इसकी आध्यात्मिक महत्ता का प्रमाण है। यह वास्तव में एक अद्भुत आध्यात्मिक आयोजन माना जाता है।

ऋषि पंचमी की भोर से पहले ही पुण्यनगरी पुणे में एक अद्भुत आध्यात्मिक ऊर्जा का संचार होने लगता है। रात के दो बजे से ही पारंपरिक वेशभूषा में सजी महिलाएं शांत कदमों और अटूट श्रद्धा के साथ इस पावन साधना के लिए एकत्र होने लगती हैं। यह केवल भीड़ नहीं, बल्कि हजारों श्रद्धालु हृदयों की सामूहिक साधना होती है। जब "ॐ गं गणपतये नमः" का जयघोष अथर्वशीर्ष के मंत्रोच्चार में विलीन होता है, तब पूरा वातावरण भक्तिरस से भर उठता है। उस क्षण नारी केवल भक्त नहीं रहती, बल्कि साधिका बन जाती है। सामूहिक अथर्वशीर्ष पाठ का दिव्य नाद गूंजते ही श्रद्धा, साधना और नारीशक्ति का अद्भुत संगम साकार हो उठता है। प्रत्येक महिला के चेहरे पर एक अलौकिक तेज झलकता है। यह सौंदर्य बाहरी नहीं, बल्कि अंतर्मन से प्रस्फुटित होता है। गणेश नाम के अखंड जाप में उनकी आंखों में भक्ति, होंठों पर मंत्र और मन में निःस्वार्थ प्रार्थना होती है। यह केवल उत्साह नहीं, बल्कि आत्मिक शांति और संतोष का दिव्य अनुभव होता है।

इस अनुपम साधना को "इंडिया स्टार वर्ल्ड रिकॉर्ड" द्वारा सम्मानित किया गया और डॉ. दीपक हरके के करकमलों से इस पावन आयोजन को प्रमाणपत्र प्रदान किया गया। किंतु इस साधना का वास्तविक सम्मान प्रत्येक महिला के अंतर्मन में अनुभव होने वाली शांति और आध्यात्मिक संतोष में निहित है।

दगडूशेठ गणपति के उत्सव मंडप से नाना वाड़ा तक का पूरा परिसर मानो एक विशाल यज्ञकुंड बन जाता है, जहां हजारों महिलाएं अपनी श्रद्धा की आहुति अर्पित करती हैं। भक्तिमय वातावरण में जब आरती के साथ इस आयोजन का समापन होता है, तो समय मानो ठहर जाता है, रोम-रोम पुलकित हो उठता है और आंखें स्वतः ही नम हो जाती हैं।

पुणे के साथ-साथ मुंबई, लातूर, कोल्हापुर, नाशिक, कोंकण तथा महाराष्ट्र के विभिन्न क्षेत्रों से बड़ी संख्या में महिलाओं की सहभागिता इस साधना के व्यापक आध्यात्मिक स्वरूप को दर्शाती है। नारीशक्ति की उपासना का यह पावन आयोजन वर्षों से निरंतर जारी है और प्रत्येक वर्ष अधिक भव्य, अधिक प्रेरणादायी तथा अधिक दिव्य रूप में विकसित होता जा रहा है।

प्रत्येक कर्म के पीछे बुद्धि और विवेक का आधार होता है। यह साधना हमें सिखाती है कि हर कार्य सजगता और सूझबूझ के साथ किया जाए। बदलते समय में महिलाओं के लिए अपनी आंतरिक शक्ति को जागृत करना अत्यंत आवश्यक है। यही कारण है कि इस पावन पहल की देश-विदेश में व्यापक सराहना की जाती है।

गणेश यज्ञ

इन दस दिनों के दौरान गणेश यज्ञ सहित अनेक धार्मिक अनुष्ठानों का आयोजन होता है। श्री गणेश की प्रतिष्ठापना के उपरांत गणेश यज्ञ का शुभारंभ होता है, जो पारंपरिक वैदिक तथा दक्षिण भारतीय पद्धति से संपन्न किया जाता है।

बृहस्पति सूक्त अभिषेक

भगवान गणेश को प्रिय बृहस्पति सूक्त के मंत्रों से अभिषेक करने की परंपरा है। गणेशोत्सव के दसों दिनों में प्रतिदिन प्रातःकाल वेदमूर्ति धनंजय घाटगे गुरुजी एवं उनके सहयोगियों द्वारा यह अभिषेक श्रद्धा और भक्तिभाव के साथ संपन्न किया जाता है।

अभिषेक

उत्सव मंडप में दसों दिनों तक प्रतिदिन प्रातःकाल से सायंकाल तक भगवान गणेश का अभिषेक श्रद्धापूर्वक संपन्न किया जाता है।

इन दस दिनों के दौरान गणेश यज्ञ सहित अनेक धार्मिक एवं आध्यात्मिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। बच्चों के लिए सूर्यनमस्कार एवं अथर्वशीर्ष पाठ, वरिष्ठ नागरिकों के लिए अग्निहोत्र का प्रदर्शन और उसका महत्व, तथा विभिन्न धार्मिक-आध्यात्मिक विषयों पर कार्यक्रमों के माध्यम से समाज को जागरूक किया जाता है। इन सभी आयोजनों का उद्देश्य भक्ति को केवल पूजा तक सीमित न रखकर उसे जीवन का अभिन्न अंग बनाना है।

अथर्वशीर्ष पाठ

बचपन से ही अथर्वशीर्ष पाठ का संस्कार विकसित हो, इस उद्देश्य से गणेशोत्सव के दसों दिनों में स्कूली विद्यार्थी श्रद्धापूर्वक अथर्वशीर्ष का पाठ करते हैं। इस मंत्रोच्चार से एकाग्रता, स्मरणशक्ति और बुद्धि का विकास होता है। गणेशभक्त राजेशजी सावला के सहयोग से सभी विद्यार्थियों को दसों दिनों तक श्रद्धापूर्वक प्रसाद वितरित किया जाता है।

सूर्यनमस्कार

सूर्यनमस्कार हमारी सांस्कृतिक विरासत का एक सर्वांगपूर्ण एवं वैज्ञानिक व्यायाम है। इसके माध्यम से शरीर, श्वास और मन का सुंदर समन्वय स्थापित होता है। इस गौरवशाली परंपरा को जीवंत बनाए रखने और नई पीढ़ी को इसके स्वास्थ्यवर्धक महत्व से परिचित कराने के उद्देश्य से गणेशोत्सव के दौरान सैकड़ों स्कूली विद्यार्थियों से श्रद्धापूर्वक सूर्यनमस्कार कराए जाते हैं।

अग्निहोत्र

हमारी वैदिक एवं सांस्कृतिक परंपरा में प्रातः और सायंकाल अग्निहोत्र का विशेष महत्व है। अग्नि को नारायण का प्रतीक मानकर दी जाने वाली आहुतियां केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि पर्यावरण की शुद्धि, मानसिक प्रसन्नता और आध्यात्मिक उन्नति का माध्यम मानी जाती हैं। मंत्रोच्चार के साथ संपन्न अग्निहोत्र से वातावरण पवित्र, सात्त्विक और ऊर्जावान बनता है।

इस महान परंपरा का महत्व नई पीढ़ी तक पहुंचे और लोग इसके आध्यात्मिक तथा सांस्कृतिक स्वरूप को समझ सकें, इसी उद्देश्य से गणेशोत्सव के दौरान अग्निहोत्र का सजीव प्रदर्शन आयोजित किया जाता है। यह प्रात्यक्षिक प्राचीन ऋषि परंपरा की वैज्ञानिक दृष्टि, प्रकृति के साथ हमारे संबंध और आध्यात्मिक साधना के महत्व को प्रभावी रूप से प्रस्तुत करता है। अग्नि, मंत्र और श्रद्धा का यह संगम पूरे वातावरण को शांति, पवित्रता और दिव्यता से भर देता है।

श्री मोरया गोसावी पालकी का भावपूर्ण स्वागत

श्री मोरया गोसावी विनायकी चतुर्थी के अवसर पर मोरगांव में दर्शन के लिए जाया करते थे। एक बार मयूरेश्वर ने उन्हें दृष्टांत देकर कहा कि अब तुम्हारे कष्ट मुझसे देखे नहीं जाते, इसलिए मैं स्वयं तुम्हारे घर आऊंगा। इस दिव्य संकेत के अनुसार चिंचवड स्थित गणेश कुंड में प्रति मयूरेश्वर (श्री मंगलमूर्ति) की मूर्ति प्राप्त हुई और श्री मोरया गोसावी ने उसे अपनी हवेली में स्थापित किया। तभी से माघ और भाद्रपद मास में यह मूर्ति पालकी के माध्यम से मोरगांव स्थित श्री मयूरेश्वर के दर्शन के लिए जाती है। भाद्रपद मास की यह पावन पालकी परंपरा लौटते समय प्रतिवर्ष श्रीमंत दगडूशेठ हलवाई गणपति उत्सव मंडप में आती है और यह दिव्य उत्सव अत्यंत भावपूर्ण एवं अविस्मरणीय अनुभव बन जाता है।

गंगा आरती

वाराणसी तथा गंगा के पावन घाटों पर प्रतिदिन सायंकाल होने वाली गंगा आरती का भव्य, दिव्य और भावस्पर्शी आयोजन केवल एक धार्मिक विधि नहीं, बल्कि आत्मिक शुद्धि, भक्ति और सनातन परंपरा का जीवंत अनुभव है।

मंत्रोच्चार, शंखनाद, दीपों की पंक्तियां और लयबद्ध आरती की गतियों से पूरा वातावरण श्रद्धा और शांति से भर उठता है। दूर-दूर से आने वाले श्रद्धालुओं के लिए यह दिव्य आयोजन एक अविस्मरणीय आध्यात्मिक आकर्षण बन जाता है।

इस पवित्र परंपरा के संवाहक, वाराणसी में नियमित रूप से गंगा आरती करने वाले हिमांशू शुक्ला एवं उनके सहयोगी प्रतिवर्ष उत्सव के अवसर पर मंडप में उपस्थित रहते हैं।

वे यहां अत्यंत अनुशासित, भक्तिभावपूर्ण और वैदिक परंपरा के अनुसार गंगा आरती प्रस्तुत करते हैं। इस आरती के माध्यम से मानो गंगा की पवित्रता और वाराणसी का आध्यात्मिक तेज उत्सव मंडप में अवतरित हो जाता है। दीपज्योति का प्रकाश, मंत्रों का नाद और भक्तों की श्रद्धा का संगम पूरे वातावरण को शांत, पवित्र और दिव्य अनुभूति से भर देता है।

मंत्रजागर / सत्यविनायक पूजा

वेदों - ऋचाओं के पाठ से देवी देवताओं को प्रसन्नता प्राप्त होती है, इसलिए शुभ एवं मंगल अवसरों पर ब्रह्मवृंद द्वारा मंत्रजागर करने की प्राचीन परंपरा रही है। गणेशोत्सव के दौरान मंडप में भक्तिभावपूर्ण मंत्रजागर का आयोजन किया जाता है। सत्यविनायक पूजन भगवान गणेश की उपासना एवं व्रत के रूप में माना जाता है। जिस प्रकार भगवान विष्णु के लिए सत्यनारायण पूजा की जाती है, उसी प्रकार भगवान गणेश के लिए सत्यविनायक पूजन किया जाता है। गणेश भक्तों में इस पूजन का अधिक प्रसार हो, इस उद्देश्य से उत्सव मंडप में श्रद्धालुओं के लिए सत्यविनायक पूजन की व्यवस्था की जाती है।

महाआरती

उत्सव के दौरान प्रतिदिन सायंकाल होने वाली महाआरती एक अलौकिक और आत्मिक अनुभूति प्रदान करती है। हजारों श्रद्धालुओं की उपस्थिति में आरंभ होने वाली यह आरती कुछ ही क्षणों में लाखों भक्तों के हृदय से जुड़ जाती है। सड़कें, चौक और गलियां भक्तों से भरी दिखाई देती हैं। “सुखकर्ता दुःखहर्ता” के जयघोष से आंखें भावनाओं के अश्रुओं से नम हो जाती हैं। इस दिव्य क्षण को व्यक्त करने के लिए शब्द भी कम पड़ जाते हैं; यह केवल अनुभव करने और हृदय में संजोकर रखने वाला पल होता है।

श्रीमंत दगडूशेठ हलवाई सार्व. गणपती ट्रस्ट, पुणे
सुवर्णयुग तरुण मंडळ
सर्व गणेश भक्तांचे सहर्ष स्वागत
जय गणेश
जय गणेश

श्रद्धा और शौर्य का संगम

'श्रीमंत दगडूशेठ हलवाई गणपति ट्रस्ट' की ओर से प्रतिवर्ष गणेशोत्सव के दौरान देश की सुरक्षा के लिए सीमा पर दिन-रात तैनात रहने वाले जवानों और उनके परिवारों को दगडूशेठ गणपति के दर्शन के लिए विशेष निमंत्रण दिया जाता है। 'इंडियन आर्मी सदर्न कमांड' के अधिकारी एवं सैनिक अपने परिवार सहित श्रद्धाभाव से उपस्थित होकर इस पावन समारोह में सहभागी होते हैं। इस अवसर पर देश की रक्षा और सुरक्षा के लिए विशेष प्रार्थना की जाती है।

इस दौरान भक्तिमय वातावरण में सभी की ओर से आरती संपन्न होती है। देश के लिए अपना सर्वस्व समर्पित करने वाले जवानों के साथ अपने आराध्य देव की आरती करने का यह क्षण अत्यंत हृदयस्पर्शी होता है। देशभक्ति की भावना को सशक्त बनाने के लिए ट्रस्ट द्वारा यह उपक्रम वर्षों से निरंतर आयोजित किया जा रहा है। इसके माध्यम से ट्रस्ट और भारतीय सेना के जवानों के बीच का अटूट संबंध और अधिक मजबूत होता दिखाई देता है।

भक्ति, सम्मान और सुरक्षा की प्रार्थना

प्रतिवर्ष गणेशोत्सव के दौरान एक दिन श्रीमंत दगडूशेठ हलवाई गणपति के दर्शन और आरती का सम्मान तृतीयपंथी किन्नर समुदाय को श्रद्धापूर्वक प्रदान किया जाता है। समाज में उन्हें भी सम्मानजनक स्थान मिले, इसी भावना से यह परंपरा निभाई जाती है। पुराणों में भी यक्ष-किन्नरों की पूजा का उल्लेख मिलता है। विभिन्न आभूषणों से सुसज्जित और पारंपरिक वेशभूषा में सजे किन्नर अत्यंत भक्तिभाव से गणराय के दर्शन कर आरती करते हैं। इस अवसर पर देश की महिलाओं और बेटियों की सुरक्षा तथा समाज की प्रत्येक स्त्री को संरक्षण और सम्मान प्राप्त हो, ऐसी हृदय से प्रार्थना बाप्पा के चरणों में की जाती है। इसके साथ ही, किन्नर समुदाय गणराय के चरणों में यह विनम्र प्रार्थना भी करता है कि भविष्य में भी उन्हें यह पावन आरती करने का सौभाग्य निरंतर प्राप्त होता रहे।

॥ अनंत चतुर्दशी ॥

ये दस दिन कैसे बीत जाते हैं, इसका पता ही नहीं चलता। अनंत चतुर्दशी का दिन आता है और कार्यकर्ताओं के मन में एक अनकही-सी व्याकुलता और भावुकता उमड़ने लगती है।

विसर्जन के लिए श्री गणेश की मूर्ति को विशेष रूप से सजाए गए रथ पर विराजमान किया जाता है।

"गणपति बाप्पा मोरया... अगले वर्ष जल्दी आइए..." के जयघोष से पूरा वातावरण गूंज उठता है और अत्यंत भावुक माहौल में विसर्जन शोभायात्रा का शुभारंभ होता है। अपने लाडले बाप्पा के दर्शन के लिए मार्ग के दोनों ओर लाखों श्रद्धालु खड़े रहते हैं - कोई छतों पर, कोई बालकनी में तो कोई पेड़ों पर चढ़कर दर्शन करता है।

केवल एक क्षण का दर्शन मिल जाए, तो जीवन धन्य हो गया, ऐसी भावना प्रत्येक भक्त के मन में उमड़ उठती है। भक्तों के नमन को स्वीकारते हुए और उनकी आंखों में उमड़े भावनाओं के आंसू देखते हुए यह शोभायात्रा विसर्जन स्थल तक पहुंचती है। अत्यंत भावुक हृदय से पूजित गणेश प्रतिमा का विसर्जन किया जाता है।

मूर्ति मंडप से बाहर जाते ही वातावरण इतना शांत और गंभीर हो जाता है कि एक खालीपन-सा महसूस होने लगता है। जहां से जाने का मन नहीं करता था, वहीं अब एक अनामिक रिक्तता निर्माण होती है; लेकिन उसी में अगले वर्ष बाप्पा के पुनः आगमन की आशा छिपी होती है।

इस गणेशोत्सव के अवसर पर मंडल द्वारा आयोजित सामाजिक, सांस्कृतिक एवं जनजागरण से जुड़े उपक्रम इस उत्सव की आत्मा हैं। भक्ति के साथ समाज निर्माण, संस्कार, सेवा और एकता का संदेश देने वाला यह गणेशोत्सव श्रद्धा का महोत्सव, संस्कृति का उत्सव और आत्मिक उन्नति का मार्ग है।

माटी से मानवता तक

दूसरों के लिए सुंदर घर और भव्य इमारतें बनाने वाले, जो दिन-रात कड़ी मेहनत करके ईंटें तैयार करते थे, उन्हीं के सिर पर अपनी खुद की छत नहीं थी।

यह बेहद दुखद और पीड़ादायक सच था। ईंट- भट्टों के मजदूरों को अपमान सहना पड़ता था, समय पर मजदूरी नहीं मिलती थी और पानी जैसी मूलभूत सुविधाओं से भी वंचित रखा जाता था। अन्याय की यह श्रृंखला उनके जीवन पर रोज़ आघात कर रही थी।

यह सब अपनी आंखों से देखकर शंकरराव मडके और तत्कालीन ट्रस्टी 'अप्पा' (मुरलीधर लोंढे) ने इन मजदूरों का जीवन बदलने का संकल्प लिया। गणेशभक्त होने के नाते शंकरराव मडके का "श्रीमंत दगडूशेठ गणपति मंदिर" में नियमित आना-जाना था और तात्या, अप्पा सूर्यवंशी तथा मामा रासने से उनके घनिष्ठ संबंध थे। उन्होंने मजदूरों की यह पीड़ा सीधे उनके सामने रखने का निर्णय लिया।

मजदूर जिस झुग्गी बस्ती में रहते थे, उसी जगह उन्हें पक्के घर मिलें, इसके लिए 'सुवर्णयुग बैंक' के माध्यम से ऋण योजना का प्रस्ताव ट्रस्ट के समक्ष रखा गया। लेकिन विचार करने पर यह प्रश्न सामने आया कि अल्प आय वाले ये मजदूर ऋण और उसका ब्याज कैसे चुका पाएंगे? आखिर उनकी कमाई इतनी नहीं थी कि वे इस बोझ को उठा सकें।

तभी एक अत्यंत उदात्त निर्णय लिया गया- "ऋण की चिंता मत कीजिए। पूरा प्रकल्प हम ही तैयार करेंगे। आपको केवल एक काम करना होगा - इस गृह-संकुल का नाम 'गणपति नगर' रखना होगा।"

वह क्षण मानो ईंट-भट्टा मजदूरों के लिए भगवान के द्वार खुलने जैसा था। तात्या, अप्पा सूर्यवंशी और मामा रासने उनके लिए देवदूत बनकर आए। न कोई स्वार्थ, न प्रसिद्धि की चाह - सिर्फ मानवता की सच्ची भावना थी।

यह कार्य आसान नहीं था। मडकेकाका ने अथक प्रयासों से सभी अनुमतियां, दस्तावेज़ और सरकारी प्रक्रियाएं पूरी की। आखिरकार एक छोटा-सा सपना एक भव्य वास्तविकता के रूप में साकार हुआ और कुछ ही समय में 'गणपति नगर' नाम का सुंदर गृह-संकुल बनकर तैयार हो गया।

'गणपति नगर' के घरों का पट्टा वितरण तत्कालीन मुख्य मंत्री शिवाजीराव पाटील की उपस्थिति में किया गया

इसके बाद वास्तव में परिवर्तन आया। आज उस बस्ती के अनेक बच्चे उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं, कई लोगों ने अपने व्यवसाय शुरू किए हैं। और अन्य अनेक सम्मानजनक पदों पर कार्यरत हैं।

इसी 'गणपति नगर' के अमर चव्हाण आज अपनी विज्ञापन कंपनी चला रहे हैं और पांच-छह लोगों को रोजगार दे रहे हैं। यही सामाजिक परिवर्तन की सच्ची सफलता है।

आज उस बस्ती का हर मुस्कुराता चेहरा इस कार्य का सबसे बड़ा पुरस्कार है। इन चेहरों को देखकर मन गर्व से फूलता नहीं, अपितु कृतज्ञता से नतमस्तक हो जाता है।

यह कहानी केवल घरों की नहीं, बल्कि मानवता की है।

जिन हाथों ने दूसरों के आशियाने बनाए, उनको सम्मान पूर्ण जीवन जीने का मौका देना ही इस कार्य का यश और साफल्य है।

उत्सव प्रबंधन

उत्सव प्रबंधन का आदर्श माने जाने वाले और आज देश-विदेश में अपनी विशिष्ट पहचान बना चुके "श्रीमंत दगडूशेठ हलवाई गणपति मंदिर" के गणेशोत्सव को वास्तव में एक अद्वितीय आयोजन कहा जा सकता है। इस भव्य और सफल उत्सव के पीछे योजना और कुशल प्रबंधन के अनेक महत्त्वपूर्ण आयाम हैं। आइए, उन पर एक दृष्टि डालते हैं।

प्रतिवर्ष अगस्त-सितंबर में आयोजित होने वाले इस उत्सव की तैयारियां कई महीने पहले ही शुरू हो जाती हैं। न्यास मंडल और उत्सव समिति की बैठकों में विभिन्न कार्यों के लिए जिम्मेदार सदस्यों की नियुक्ति की जाती है। प्रत्येक कार्य की स्पष्ट जिम्मेदारी तय होने से व्यवस्थाएं सुचारु रहती हैं और भ्रम की स्थिति नहीं बनती।

सुरक्षा व्यवस्था, सजावट, सांस्कृतिक कार्यक्रमों की रूपरेखा, प्रसाद वितरण एवं दान का नियोजन, दैनिक पूजन-अर्चन तथा सबसे महत्त्वपूर्ण - भक्तों की भीड़ का सुव्यवस्थित प्रबंधन - इन सभी व्यवस्थाओं का अत्यंत सावधानी और अनुशासन के साथ संचालन किया जाता है।

उत्सव के दौरान श्रद्धालुओं की भीड़ और यातायात व्यवस्था का प्रबंधन सबसे चुनौतीपूर्ण कार्य होता है। दस दिनों में लगभग डेढ़ से दो करोड़ श्रद्धालु श्री के दर्शन के लिए आते हैं, अर्थात प्रतिदिन लगभग १५-२० लाख भक्त दर्शन करते हैं। इतनी विशाल भीड़ के सुव्यवस्थित संचालन का दायित्व कार्यकर्ता, पुलिस, प्रशासन और विभिन्न सामाजिक संस्थाओं के स्वयंसेवक मिलकर सफलतापूर्वक निभाते हैं।

दर्शन के लिए आने वाले लाखों श्रद्धालुओं को कम से कम असुविधा हो, उन्हें शीघ्र और सहज दर्शन प्राप्त हों तथा वे संतुष्ट होकर लौटें - इसी उद्देश्य से कार्यकर्ताओं की पूरी टीम निरंतर सेवा में जुटी रहती है। यही मंडल की पहचान होने के कारण उन्हें श्रद्धालुओं से व्यवहार, संवाद और सहायता का विशेष प्रशिक्षण दिया जाता है। उत्सव आरंभ होते ही अनेक कार्यकर्ता लगातार दस दिनों तक दिन-रात सेवा में लगे रहते हैं। ऋषिपंचमी पर होने वाले अथर्वशीर्ष के सामूहिक पाठ से लेकर प्रत्येक धार्मिक अनुष्ठान तक, हर व्यवस्था पूर्वनियोजित होती है। इन सभी व्यवस्थाओं के लिए आवश्यक विभिन्न अनुमतियां जैसे, पुलिस प्रशासन, अग्निशमन विभाग, पुणे महानगरपालिका तथा विद्युत उपयोग से संबंधित विशेष स्वीकृतियां, आदि, का समस्त दस्तावेज़ी कार्य और नियोजन पहले ही पूरा कर लिया जाता है।

उत्सव के दौरान किसी भी आपदा या चिकित्सकीय आपात स्थिति से प्रभावी ढंग से निपटने के लिए विशेष रूप से प्रशिक्षित कार्यकर्ताओं की टीमें सदैव तैयार रहती हैं। मंदिर परिसर में अत्याधुनिक चिकित्सा सुविधाओं से युक्त एक अति दक्षता विभाग (आईसीयू) स्थापित किया जाता है, जहां वेंटिलेटर सहित सभी आवश्यक उपकरणों के साथ डॉक्टर और नर्सें २४ घंटे उपलब्ध रहते हैं। आवश्यकता पड़ने पर मरीजों को तत्काल एम्बुलेंस द्वारा अस्पताल पहुंचाने की भी समुचित व्यवस्था रहती है। इतने विशाल उत्सव के लिए आवश्यक आर्थिक सहयोग सुनिश्चित करने हेतु प्रायोजकों से संवाद, मुलाकातें और बैठकें भी तैयारियों के प्रारंभिक चरण से ही शुरू कर दी जाती हैं।

आगमन और विसर्जन समारोह के लिए एक अलग समिति कार्यरत रहती है। शोभायात्रा के रथ का निर्माण, ढोल-ताशा दलों का समन्वय, ध्वजाएं, कार्यकर्ताओं की वेशभूषा एवं पगड़ियां, विद्युत सज्जा तथा जेनेरेटरों के वाहनों की व्यवस्था - इन सभी पहलुओं की व्यवस्था गहनता से की जाती है, ताकि प्रत्येक समारोह निर्विघ्न और सुव्यवस्थित रूप से संपन्न हो।

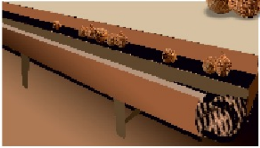

विश्वस्तों और कार्यकर्ताओं की दूरदर्शिता का उत्कृष्ट उदाहरण है नारियलों के स्थानांतरण के लिए स्थापित स्वचालित कन्वेयर बेल्ट प्रणाली। श्रद्धालु मकरंद सावगावकर के सहयोग से यह व्यवस्था शुरू की गई। श्रीचरणों में अर्पित नारियल मात्र १० से १५ सेकेंड में इस बेल्ट के माध्यम से मंदिर के पिछले द्वार तक पहुंच जाता है और वहांसे सीधे मालवाहक वाहन में लाद दिया जाता है।

पहले नारियलों के ढेर छत तक लग जाते थे, जिससे स्थान की कमी और प्रबंधन में कठिनाइयां उत्पन्न होती थीं। लेकिन इस स्वचालित व्यवस्था के लागू होने से पूरी प्रक्रिया सरल, सुव्यवस्थित और अधिक तेज़ हो गई है। गणेशोत्सव के दौरान लाखों नारियल अर्पित होने के बावजूद दर्शन के लिए आने वाले श्रद्धालुओं को किसी प्रकार की असुविधा नहीं होती, बल्कि उत्कृष्ट व्यवस्था के कारण उन्हें संतोष और सात्त्विक अनुभूति प्राप्त होती है।

इतनी विशाल व्यवस्था के केंद्र में सबसे महत्त्वपूर्ण शक्ति है श्रीमंत दगडूशेठ गणपति का आशीर्वाद। प्रत्येक निर्णय के लिए आवश्यक बुद्धि और हर कार्य के लिए मिलने वाली ऊर्जा स्वयं गणराय ही प्रदान करते हैं - यह अटूट विश्वास सभी कार्यकर्ताओं के हृदय में सदैव बना रहता है।

अत्यंत अनुशासित नियोजन, अटूट संगठन शक्ति और निःस्वार्थ भक्तिभाव के अद्भुत समन्वय से साकार हुआ श्रीमंत दगडूशेठ हलवाई गणेशोत्सव आज केवल एक धार्मिक उत्सव नहीं, बल्कि मूल्य-आधारित उत्कृष्ट प्रबंधन का ओजपूर्ण आदर्श बन चुका है। यहां प्रत्येक निर्णय के पीछे दूरदृष्टि, प्रत्येक व्यवस्था के पीछे अनुभव और प्रत्येक कार्य के पीछे गणराय के श्रीचरणों में समर्पित सच्ची सेवा का भाव निहित है।

लाखों श्रद्धालुओं की आस्था के बीच भी यहां कहीं अव्यवस्था या अहंकार नहीं, बल्कि अनुशासन, समन्वय और सेवाभाव ही दिखाई देता है। कार्यकर्ताओं के लिए यह उत्सव केवल दायित्व नहीं, बल्कि एक संकल्पित पावन व्रत है। यहां थकान महसूस नहीं होती, क्योंकि प्रत्येक क्षण बप्पा की सेवा में परिवर्तित हो जाता है। यहां व्यवस्थापन केवल यंत्रवत न होकर मानवता, संवेदनशीलता तथा करुणा के बल से पल्लवित होता रहता है।

यह उत्सव निरंतर एक सशक्त संदेश देता है कि महानता साधनों से नहीं, बल्कि विचारों से जन्म लेती है। जब नियोजन, अनुशासन और भक्ति का समन्वय होता है, तब कोई भी कार्य असाधारण ऊंचाइयां प्राप्त कर सकता है। यही कारण है कि श्रीमंत दगडूशेठ हलवाई गणेशोत्सव केवल एक उत्सव नहीं, बल्कि समाज को दिशा देने वाला, पीढ़ियों को प्रेरित करने वाला और 'सेवा ही सच्ची उपासना है' के सिद्धांत को साकार करने वाला एक प्रेरणादायी अध्याय बन गया है।

विद्यालय जाने वाले बच्चों में बढ़ती आत्महत्याओं की खबरों ने महेश सूर्यवंशी को गहराई से व्यथित कर दिया था। उन्हें महसूस हुआ कि एक ट्रस्ट के रूप में इस गंभीर समस्या पर कोई ठोस पहल करना आवश्यक है। समाज के प्रति कितनी संवेदनशील थी उनकी यह सोच! गहन चिंतन और सूक्ष्म अवलोकन के बाद उन्होंने समझा कि परवरिश के लिए पोषक वातावरण का नहीं होना, मानसिक तनाव और उचित संस्कारों का अभाव इस समस्या के प्रमुख कारण हैं। इसी विचार से, कि यदि विद्यार्थियों को सर्वांगीण विकास, परामर्श, बेहतर स्वास्थ्य और अपनी बात व्यक्त करने का मंच मिले, तो वे नकारात्मकता पर विजय पा सकते हैं; 'संस्कार वर्ग' और 'बाप्पा को पत्र' जैसी अभिनव पहल का जन्म हुआ। इस अभियान को लागू करने के लिए विद्यालयों का चयन प्रारंभ किया गया। महेश सूर्यवंशी की इस संवेदनशील सोच को अशोक गोडसे का भी सशक्त सहयोग मिला। विचारों की यह एकरूपता "१ + १ = ११" जैसे सार्थक समीकरण में बदल गई। इसके बाद दोनों ने इस संकल्पना को तात्या के समक्ष प्रस्तुत करने की तैयारी की। तात्या ने कहा, "जिस बाप्पा की कृपा से यह योजना साकार होने जा रही है, उसी बाप्पा का नाम इस अभियान को दीजिए।"

लगभग ३७ विद्यालयों का चयन कर मुख्याध्यापकों से मुलाकात की गई। इस योजना के अंतर्गत विद्यालयों में पत्रपेटियां लगाई गईं, ताकि विद्यार्थी अपने मन की बातें गणपति बाप्पा को लिखे पत्र के माध्यम से व्यक्त कर सकें। इन पत्रों से विद्यार्थियों की भावनाओं और समस्याओं को समझकर उनके समाधान के लिए प्रयास किए गए। इसी सोच से "जय गणेश ज्ञानवर्धन अभियान" की शुरुआत हुई। पहले ही वर्ष में ५०० गरीब प्रतिभाशाली विद्यार्थियों का चयन कर उनकी शिक्षा से लेकर दैनिक आवश्यकताओं तक की पूरी जिम्मेदारी ट्रस्ट ने संभाली।

डॉ. अ. ल. देशमुख

शिक्षण विशेषज्ञ डॉ. अ. ल. देशमुख इस योजना के मार्गदर्शक थे। वे बताते हैं कि तात्या के मन में हमेशा यह विचार रहता था कि समाज के निम्नतम वर्ग के बच्चों को शिक्षा का अवसर और उचित वातावरण मिलना चाहिए।

डॉ. भरत देसाई

डॉ. भरत देसाई बताते हैं कि 'समुपदेशन' (परामर्श) शब्द आज भी कई लोगों के लिए अपरिचित है। भागदौड़ भरे जीवन में जब बड़े लोग भी सही दिशा नहीं खोज पाते, तो मासूमियत की उम्र में बच्चों के लिए अपनी समस्याओं को पहचानना तो शायद बहुत ही मुश्किल है। जय गणेश ज्ञानवर्धन अभियान के द्वारा बच्चों के इन जटिल प्रश्नों पर उचित मार्गदर्शन मिल सके, इस उद्देश्य से ट्रस्ट ने परामर्श की जिम्मेदारी डॉ. भरत देसाई को सौंपी।

डॉ. संजीव डोळे

डॉ. संजीव डोळे 'पुणे होमिओपॅथी असोसिएशन' के अध्यक्ष तथा नारायणगांव स्थित 'मोहन ठुसे नेत्र रुग्णालय व अनुसंधान संस्था' के प्रबंधकीय विश्वस्त हैं। वे अपने चिकित्सा कार्य के साथ सामाजिक प्रतिबद्धता निभाते हुए निष्ठापूर्वक नेत्रसेवा का कार्य कर रहे हैं।

जय गणेश ज्ञानवर्धन अभियान के चिकित्सा प्रकल्प की जिम्मेदारी उनके पास है। डॉ. विनायक रुपनवर के माध्यम से उनसे संपर्क स्थापित किया गया था।

अरुण भालेराव

विद्यार्थियों में छिपी प्रतिभाओं को विकसित करना, उनका आत्मविश्वास बढ़ाना और उनके संपूर्ण व्यक्तित्व का विकास करना, यही इस संस्कार वर्ग का उद्देश्य था। इसी दृष्टिकोण से अरुण भालेराव ने इन वर्गों की रूपरेखा तैयार की।

इस उपक्रम के सकारात्मक परिणाम एक वर्ष में ही दिखाई देने लगे। दसवीं-बारहवीं के विद्यार्थियों ने उल्लेखनीय सफलता हासिल की। इसे देखते हुए तात्या ने मंदिर के पीछे की इमारत इस कार्य के लिए उपलब्ध कराई, जिसे "गणपति सदन" नाम दिया गया। यहां UPSC और MPSC के विद्यार्थियों के लिए भी निःशुल्क शिक्षा तथा ५० से अधिक कंप्यूटर और इंटरनेट सुविधा उपलब्ध कराई।

२०१२ में इस अभियान की सफलता बारहवीं के परिणामों में भी दिखाई दी। इस वर्ष अभियान के सभी विद्यार्थियों का १०० % परिणाम रहा। सात विद्यार्थियों ने ८० % से अधिक अंक प्राप्त किए। वहीं 'गणपति सदन' में निर्मित अध्ययन कक्ष प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी करने वाले विद्यार्थियों के लिए वरदान साबित हो रही है।

२००४ में शुरू किए गए आईटीआई में 'इलेक्ट्रिकल', 'फिटर', 'वेल्डिंग' और 'टर्नर' जैसे पाठ्यक्रम उपलब्ध हैं। टाटा, बजाज, एलजी जैसी प्रतिष्ठित कंपनियों ने कैंपस इंटरव्यू के माध्यम से यहां विद्यार्थियों को १०० % प्लेसमेंट दिया है।

इसके साथ ही कोंढवा स्थित 'जय गणेश वोकेशनल जूनियर कॉलेज', ई-लर्निंग सुविधा, ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यालयों में तकनीक आधारित शिक्षा, और शुद्ध पेयजल की व्यवस्था जैसे बहुआयामी उपक्रमों से शिक्षा की गुणवत्ता, विद्यार्थियों की संख्या और अभिभावकों का विश्वास उल्लेखनीय रूप से बढ़ा है।

आज तक 'जय गणेश ज्ञानवर्धन अभियान' के अंतर्गत पुणे के साढ़े पांच सौ से अधिक प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को सर्वांगीण सहायता प्रदान की गई है, वहीं लगभग एक से डेढ़ हजार विद्यार्थी उच्च शिक्षा प्राप्त कर आत्मनिर्भर बने हैं। पारंपरिक पाठ्यक्रमों से लेकर आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस जैसे आधुनिक पाठ्यक्रमों तक, निःशुल्क या अल्प शुल्क में शिक्षा के अवसर प्रदान करते हुए यह अभियान निरंतर विस्तार कर रहा है। एक संवेदनशील विचार के रूप में अंकुरित हुआ यह उपक्रम आज असंख्य जिंदगियों में ज्ञान का प्रकाश फैलाने वाला तेजोमय दीप बन गया है।

“सात दशकों की भक्ति, स्वरों की अर्चना और गणपति से जुड़ा रिश्ता...”

- भारतरत्न लता मंगेशकर

“श्रीमंत दगडूशेठ हलवाई गणपति” इच्छापूर्ति करने वाले, मनोकामनाएं पूर्ण करने वाले और अपने मनमोहक स्वरूप से क्षणभर में भक्तों का मन जीत लेने वाले लाडले स्वरूप के गणपति हैं। मुझे पिछले सात दशकों से अधिक समय से उनके दर्शन का सौभाग्य प्राप्त हो रहा है।

सन् १९४१ में मेरे पिता पंडित दीनानाथ मंगेशकर का गणेशोत्सव में बाहुली के हौद के पास कार्यक्रम था। वहीं मेरी पहली मुलाकात तात्या गोडसे से हुई। उसके बाद पुणे के कार्यक्रमों के दौरान हमारा मिलना - जुलना निरंतर बना रहा। तात्या मुझे गणपति की आरती के लिए स्नेहपूर्वक आमंत्रित करते और मैं भी बिना चूके उपस्थित रहती।

सन् १९९२ में “श्रीमंत दगडूशेठ हलवाई गणपति” के शताब्दी महोत्सव में बीकानेर राजमहल की भव्य प्रतिकृति बनाई गई थी। उसके सामने बने फव्वारे का उद्घाटन मेरे हाथों हुआ। उस अवसर पर माई और हम सभी मंगेशकर भाई-बहन तात्या के स्नेहवश विशेष रूप से उपस्थित रहे। मुझे याद आता है कि उनके आग्रह पर मैंने वहां एक भजन भी प्रस्तुत किया था। उस महोत्सव में द्वारका पीठ के शंकराचार्य सबको आशीर्वाद देने पधारे थे। वह महोत्सव तात्या ने न भूतो न भविष्यति ऐसा मनाया था। तात्या ने गणपति के माध्यम से छह-सात दशकों तक जिस समर्पण और श्रद्धा से समाजसेवा की, वह आने वाली अनेक पीढ़ियों को प्रेरित करती रहेगी। उनके सहयोगियों ने भी उसी सेवा-परंपरा को आगे बढ़ाकर उनके कार्य को नई ऊंचाइयां दी हैं।

सुरलहरियों की मधुर यात्रा

श्रमिकों का सम्मान और पुनर्वास ही सेवा की अंतिम सीमा नहीं है, यह तात्या भली-भांति जानते थे। उनका मानना था कि समाज की भौतिक आवश्यकताओं के साथ उसकी सांस्कृतिक उन्नति भी उतनी ही आवश्यक है। इसी सोच से, १९८० के दशक में उन्होंने उन आर्थिक रूप से वंचित लोगों तक भी संगीत का आनंद पहुंचाने का संकल्प लिया, जो संगीत महोत्सवों में शामिल नहीं हो पाते थे।

यह भावना वर्ष १९८४ में साकार हुई 'श्रीमंत दगडूशेठ संगीत महोत्सव' से, ताकि आमजन उच्चकोटि के संगीत का आनंद निःशुल्क ले सकें।

बुधवार पेठ स्थित दत्त मंदिर के सामने के प्रांगण से दगडूशेठ हलवाई संगीत महोत्सव का शुभारंभ हुआ। प्रारंभ से ही पंडित भीमसेन जोशी जैसे विश्वविख्यात कलाकारों की उपस्थिति ने इस महोत्सव की गौरवशाली परंपरा को नई ऊंचाइयां प्रदान कीं।

उत्सव को गुड़ी पाड़वा से रामनवमी तक आयोजित करने का निर्णय लिया गया। १९८४ से २०२५तक इस मंच पर संगीत जगत के अनेक अंतरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त गायक, वादक और नर्तकों ने अपनी कला का प्रदर्शन किया। इनमें पं. अल्लारखा एवं उस्ताद ज़ाकिर हुसैन, लता मंगेशकर, हृदयनाथ मंगेशकर, पंडित जसराज, पंडित शिवकुमार शर्मा, सुधीर और श्रीधर फडके, आशा खाडिलकर सहित अनेक प्रतिष्ठित कलाकार शामिल हैं।

शुरुआत में बुधवार पेठ स्थित श्री दत्त मंदिर के सामने सड़क पर आयोजित होने वाला यह महोत्सव बाद में शनिवार वाड़ा के प्रांगण और अब अत्याधुनिक सभागार में आयोजित किया जाता है। स्थान बदलते रहे, लेकिन संगीतप्रेमियों का उत्साह कभी कम नहीं हुआ। संगीत के प्रति मंडल की व्यापक दृष्टि, उसका असीम समर्पण और नई पीढ़ी द्वारा इस विरासत को आगे बढ़ाने का संकल्प सचमुच मन को भावविभोर कर देता है।

अभिजात, नाट्य और भाव गीतों की मधुर परंपरा इस महोत्सव के माध्यम से पुणे के घर-घर तक पहुंची। विशेष उल्लेख १९९२ में आयोजित शताब्दी महोत्सव का करना होगा, जो पुणे के सांस्कृतिक इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित है। सामान्यतः पांच-छह दिन चलने वाला यह संगीत महोत्सव उस वर्ष पूरे आठ सप्ताह तक चला और मानो पूरा पुणे शहर संगीतमय हो उठा।

संभवतः उस समय यह महोत्सव 'गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स' में भी दर्ज हो सकता था। अपनी भव्यता, साहसिक आयोजन और अभूतपूर्व स्वरूप के कारण संगीत जगत ने भी इसकी मुक्तकंठ से सराहना की और इसे "न भूतो न भविष्यति" कहकर सम्मानित किया।

इस संगीत महोत्सव से प्रेरित होकर आज की युवा पीढ़ी में संगीत के प्रति गहरा आकर्षण उद्‌भुत हुआ है। अनेक युवा तबला, हारमोनियम, सितार जैसे वाद्य सीख रहे हैं, और कई शास्त्रीय संगीत की विधिवत शिक्षा अपने गुरुओं से ग्रहण कर रहे हैं। अब संगीत केवल सुनने का नहीं, बल्कि उसे आत्मसात करने और उसके सूक्ष्म नादों का अनुभव करने का माध्यम बन रहा है। यही संस्कार आगे चलकर परिपक्व और सच्चे 'कानसेन' भी तैयार कर रहे हैं।

यही वास्तव में श्रीमंत दगडूशेठ हलवाई गणपती मंडल के ट्रस्टियों और उनके सहयोगियों के स्वप्न की सार्थकता है। संगीत की परंपरा निरंतर फलती-फूलती रहे, नई पीढ़ी सशक्त बने और पुणे की धरती से उठने वाले स्वर पुनः विश्वभर में गूंजें - आज यह सपना साकार होता दिखाई देता है। संगीत जगत में उभरते असंख्य प्रतिभाशाली कलाकारों की सफलता में इस महोत्सव का उज्ज्वल योगदान स्पष्ट झलकता है।

संगीत की विरासत अगली पीढ़ी तक पहुँचे, और आज वह साकार होती दिखाई दे रही है। पुणे से संगीत जगत में अनेक नए प्रतिभाशाली कलाकार सितारों के सामान जगमगा रहे हैं। इसका श्रेय निश्चित रूप से श्रीमंत दगडूशेठ गणपति ट्रस्ट को जाता है। जिस समर्पण और तन्मयता के साथ आज की युवा पीढ़ी संगीत साधना में जुटी है, वही इस पहल की सबसे बड़ी और सार्थक उपलब्धि है।

मंडल की प्रत्येक पहल नए अवसरों का सृजन कर रही है, अनेक रोजगार और व्यावसायिक संभावनाओं के द्वार खोल रही है तथा उत्साही युवा पीढ़ी को समाजसेवा से जोड़ रही है। यही आज मंडल के कार्यकर्ताओं की सबसे बड़ी उपलब्धि है।

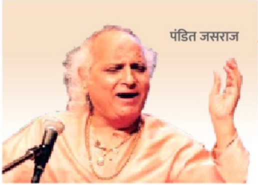

पंडित जसराज

१९९२ के शताब्दी महोत्सव में भारत का शायद ही कोई प्रतिष्ठित कलाकार रहा हो जिसने यहां प्रस्तुति न दी हो। उस अवसर पर अद्भुत संगीत सभाएं आयोजित हुईं। पूज्य शंकराचार्य भी उपस्थित थे। मैंने भी पूरे मन से गायन किया। प्रस्तुति के बाद तात्या ने मुझे गले लगाकर कहा, "ऐसे ही गाते रहो!"

हृदयनाथ मंगेशकर

पिछले ३२ वर्षों से दगडूशेठ हलवाई संगीत महोत्सव का समापन मेरे कार्यक्रम से होता आ रहा है। तात्या गोडसे मुझसे कहा करते थे, "हिंदुस्तान का कितना भी बड़ा गायक या वादक इस महोत्सव में आए, लेकिन समापन तुम्हारे ही कार्यक्रम से होगा।" उन्होंने पूरे ३२ वर्षों तक अपने इस वचन को निभाया।

श्रीधर फडके

१९९२ में मैंने इस महोत्सव में पहली बार गायन किया। कार्यक्रम से एक दिन पहले रात में मेरे पेट में तेज़ दर्द शुरू हो गया था। दवा लेकर ही मैं मुंबई से पुणे पहुंचा। मुझे आधी रात के आसपास प्रस्तुति देनी थी, लेकिन उससे पहले दर्द इतना बढ़ गया कि मैं तड़पने लगा। रामभाऊ ने चिंता से पूछा, "क्या हुआ?" मैंने बताया कि पेट में बहुत दर्द है। उन्होंने कहा, "चिंता मत करो, गणपति से प्रार्थना करो, सब ठीक हो जाएगा।" मैंने श्रद्धापूर्वक गणपति बाप्पा से प्रार्थना की और मैं पूरे विश्वास के साथ कहता हूं कि उसी क्षण मेरा दर्द पूरी तरह थम गया। इसके बाद मेरा गायन अत्यंत सुंदर और बिना किसी बाधा के संपन्न हुआ।

१९८७ में दगडूशेठ हलवाई संगीत महोत्सव में पहली बार प्रस्तुति देने के बाद से आज तक बिना किसी खंड के गाने का सौभाग्य मुझे मिला है। यह सेवा करने का अवसर ईश्वर की कृपा ही है।

मुझे एक महफ़िल आज भी याद है, जिसमें मैंने लगातार पांच घंटे तक गायन किया। रात के तीन बजे तक कार्यक्रम चला, फिर भी श्रोता अपनी जगह से नहीं उठे। वर्षों से मिले इस अपार प्रेम के लिए मैं सभी रसिकों की कृतज्ञ हूँ।

तात्या, मामा, आप्पा और बुवा के समय हम कलाकारों को जो स्नेह और अपनापन मिलता था, वही प्रेम और सम्मान आज ट्रस्ट की नई पीढ़ी भी देती है। इसी समर्पण के साथ यह महोत्सव आज भी उसी भव्यता से आयोजित हो रहा है। इसलिए हमारा और इस महोत्सव का रिश्ता आज एक अटूट बंधन बन चुका है।

मेरे लिए दगडूशेठ हलवाई गणपती मंडल मेरा मायका है। मैं हमेशा कहती हूं कि यहां के सभी लोग मेरे मायके के परिवार जैसे हैं। तात्या ने ट्रस्ट की नई पीढ़ी को भी ऐसे उत्कृष्ट संस्कार दिए हैं कि आज वे भी उसी निस्वार्थ भावना और समर्पण के साथ इस सेवा कार्य को आगे बढ़ा रहे हैं जो कि वास्तव में अभिमानास्पद है।

॥ गणेश जयंती - उमांगमलज ॥
(कार्तिक शुक्ल चतुर्थी)

अंतःकरण से अहंकार और ममता का मल दूर होने पर जो शुद्ध, निर्मल और शांत परमात्मा का साक्षात्कार होता है, उसे ही 'उमांगमलज' कहा जाता है।

पुराणों के अनुसार, देवी पार्वती ने अपने अंग के मल से एक बालक की रचना की, जिसे बाद में गजमुख प्राप्त हुआ और वह श्री गजानन के रूप में विख्यात हुए। इस अवतार में भगवान गणेश का नाम 'उमांगमलज' माना जाता है। इस कथा का आध्यात्मिक संदेश यह है कि हमारी बुद्धि ही पार्वती का स्वरूप है और उस पर चढ़ा अहंकार तथा ममता ही वास्तविक मल है। जब यह मल दूर हो जाता है, तब शुद्ध चेतना का उदय होता है।

मन का प्रतीक है फूल और बुद्धि का प्रतीक है नारियल। जिस प्रकार नारियल पर शिखा होती है, उसके भीतर कठोर कवच होता है और उस पर तीन नेत्र बने होते हैं, उसी प्रकार हमारे मस्तिष्क की भी संरचना है। इसलिए नारियल को मानव मस्तिष्क और उसमें स्थित बुद्धि का प्रतीक माना गया है। यह उत्सव अहंकार से मुक्त, निर्मल बुद्धि को श्री गजानन के चरणों में अर्पित करने की प्रेरणा देता है।

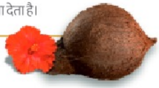

॥ श्री नग्नभैरव जन्मोत्सव ॥
(कार्तिक कृष्ण अष्टमी)

कार्तिक कृष्ण अष्टमी गाणपत्य परंपरा का अत्यंत मंगल एवं आध्यात्मिक दृष्टि से महत्वपूर्ण दिवस माना जाता है। इसी दिन भगवान श्री नग्नभैरव का अवतार प्रकट हुआ था। भगवान श्रीगणेश की कार्यशक्ति एवं मानसपुत्र माने जाने वाले श्री नग्नभैरव माया के बंधनों से पूर्णतः मुक्त, परम चैतन्य स्वरूप हैं।

अर्थात, जिनके ऊपर से माया रूपी आवरण पूर्णतः हट चुका हो, उन्हें 'नग्न' कहा जाता है। भगवान श्री नग्नभैरव का स्वरूप ऐसा ही होने के कारण उनके नाम में 'नग्न' शब्द का प्रयोग किया गया है।

'भैरव' शब्द 'भय' और 'रव' इन दो संकल्पनाओं से बना है। जिनके दिव्य चैतन्य के प्रभाव से देव, दानव और मानव सहित समस्त सृष्टि भयवश नहीं, बल्कि अनुशासित नियमों के अनुसार अपने-अपने कर्तव्यों का पालन करती है, उस सर्वव्यापी एवं अपार शक्ति को 'भैरव' कहा जाता है। श्री नग्नभैरव माया के प्रत्येक स्वरूप से परे स्थित हैं, इसलिए उन पर किसी भी प्रकार का बंधन प्रभाव नहीं डालता।

भगवान श्री मयूरेश की अखंड सेवा में सदैव लीन रहने के कारण उन्हें 'मयूरेश्वर' भी कहा जाता है। साथ ही, धर्मनिष्ठ गणेशभक्तों की सर्वत्र रक्षा करने तथा उन्हें प्रत्येक संकट से सुरक्षित रखने के कारण वे 'धर्मनिष्ठों के संरक्षक' माने जाते हैं।

इस पावन जन्मोत्सव के अवसर पर मंदिर में प्रातःकाल से ही

भगवान श्री नग्नभैरव की विधि-विधानपूर्वक पूजा-अर्चना की जाती है। पंचपक्वान्न का नैवेद्य अर्पित कर भक्तिभाव से आरती की जाती है। इस अवसर पर हजारों श्रद्धालु दर्शन के लिए उपस्थित होते हैं। रविवार उनकी उपासना का विशेष दिन माना जाता है तथा २१ उनकी प्रिय संख्या है। गुड़ और नारियल का नैवेद्य उन्हें विशेष प्रिय माना जाता है।

भगवान श्री नग्नभैरव की कृपा से सांसारिक जीवन में सुख, संतोष और समृद्धि के साथ-साथ आध्यात्मिक उन्नति भी प्राप्त होती है। इसी कारण वे भक्तों को भोग एवं ऐश्वर्य प्रदान करने वाले 'भुक्ति-प्रदाता' तथा मोक्ष का मार्ग दिखाने वाले 'मुक्ति-प्रदाता' के रूप में पूजनीय हैं। भुक्ति और मुक्ति का अद्वितीय संगम ही भगवान श्री नग्नभैरव हैं।

परंपरा की विरासत

“श्रीमंत दगडूशेठ हलवाई गणपति "बाप्पा" श्रद्धा, परंपरा और सामाजिक चेतना का एक तेजस्वी केंद्र है। यह गणपति केवल पूजनीय ही नहीं, बल्कि १३४ वर्षों से संजोई गई भक्तिमय परंपराओं के साक्षी भी हैं। दगडूशेठ हलवाई महान भक्त थे जिनका नाम बाप्पा के साथ जुड़ गया - यही उनकी भक्ति का सच्चा प्रतिफल है।

बाप्पा की प्रतिमा की प्राण-प्रतिष्ठा के उस पावन क्षण से ही मंदिर की आध्यात्मिक परंपरा का शुभारंभ हुआ। तभी से अथर्वशीर्ष पाठ, गणेश यज्ञ, महाभिषेक, सत्यविनायक पूजा, सहस्रावर्तन तथा अतिरुद्र महायज्ञ जैसे पवित्र अनुष्ठान श्रद्धा और विधि-विधान के साथ निरंतर संपन्न होते आ रहे हैं। यही कारण है कि मंदिर में प्रवेश करते ही श्रद्धालु सकारात्मक ऊर्जा और आध्यात्मिक स्पंदनों का दिव्य अनुभव करते हैं। इन अनुष्ठानों से मंदिर का संपूर्ण परिसर आध्यात्मिक ऊर्जा और दिव्य चेतना से ओत-प्रोत हो उठता है।

१८९३ : एक दिव्य परंपरा का प्रारंभ

सद्गुरु माधवनाथ महाराज की प्रेरणा से वर्ष १८९३ में श्रीमंत दगडूशेठ हलवाई ने गणेश भक्ति की जिस पावन परंपरा का शुभारंभ किया था, वह आज एक विशाल वटवृक्ष का रूप धारण कर चुकी है। १३४ वर्षों की यह गौरवशाली परंपरा आज इतनी व्यापक हो गई है कि वर्षभर करोड़ों श्रद्धालु श्रीमंत दगडूशेठ बाप्पा के दर्शन के लिए यहां आते हैं।

परंपरा लोकमान्य के विचारों की

इसी ऐतिहासिक वर्ष लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने सार्वजनिक गणेशोत्सव की आधारशिला रखी। स्वतंत्रता, सामाजिक एकात्मता और जनजागरण - इन तीन मूल सिद्धांतों पर आधारित यह परंपरा आज विश्व के १७५ देशों तक पहुंच चुकी है।

समाज प्रबोधन की अखंड ज्योति

"श्रीमंत दगडूशेठ हलवाई गणपति ट्रस्ट" ने लोकमान्य के समाज जागरण के अभियान को समयानुकूल और अधिक व्यापक स्वरूप प्रदान किया। चातुर्मास प्रवचनमाला, गणेश माहात्म्य पर स्वानंद पुंड शास्त्री के प्रवचन, वारी तथा शिवजयंती व्याख्यानमाला जैसे विविध माध्यमों के द्वारा पिछले १३४ वर्षों से समाज के अवचेतन मन को जागृत रखने का यह पुण्य कार्य निरंतर अविरत रूप से चल रहा है।

विश्व को जोड़ने वाली उत्सव की परंपरा

आज गणेशोत्सव केवल पुणे या महाराष्ट्र की पहचान भर नहीं रह गया है। इस उत्सव के माध्यम से संपूर्ण विश्व गणेश भक्ति के एक अदृश्य भावसूत्र में बंध जाता है। यहां भाषा, देश और संस्कृति की सभी सीमाएं स्वतः ही विलीन हो जाती हैं।

सृजनशील कला की परंपरा

"श्रीमंत दगडूशेठ हलवाई गणपति ट्रस्ट" गणेशोत्सव की एक विशिष्ट पहचान भारत के विभिन्न मंदिरों की भव्य प्रतिकृतियां हैं। नेत्रदीपक रोशनाई, बारीक कलाकारी और कल्पनाशीलता से सुसज्जित यह सजावट केवल एक दृश्य नहीं, बल्कि एक अविस्मरणीय अनुभव बन जाती है। बच्चे हों या बुजुर्ग, हर वर्ष लाखों श्रद्धालु इस अनुपम सौंदर्य का आनंद लेते हैं और यह कलात्मक परंपरा निरंतर समृद्ध होती जा रही है। इस पहल के माध्यम से भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण हो रहा है तथा राष्ट्रभावना को नई शक्ति मिल रही है।

भक्ति परंपरा का परम क्षण

श्री गणेश की प्राणप्रतिष्ठा प्रतिवर्ष आध्यात्मिक क्षेत्र के मान्यवरों के हाथों संपन्न होती है। ऋषिपंचमी के दिन हजारों महिलाएं एकत्र होकर सामूहिक अथर्वशीर्ष पाठ और बाप्पा की महाआरती करती हैं, जो भक्ति का परम क्षण बन जाता है। आज यह परंपरा महाराष्ट्र के अनेक गणेश मंडलों ने अपनाई है, जिससे सामूहिक उपासना की शक्ति और उसकी आवश्यकता का महत्त्व अधोरेखित होता है।

महाविसर्जन : एक वैभवशाली परंपरा

विसर्जन का दिन भक्ति, सौंदर्य और संस्कृति का अद्भुत संगम होता है। रोशनाई से सजे भव्य रथ में दगडूशेठ बाप्पा का आगमन जुलूस का चरमोत्कर्ष होता है। दस बैलों की जोड़ी से खींचा जाने वाला यह रथ हमारी कृषि संस्कृति का प्रतीक है, जिसकी परंपरा सौ वर्षों से अधिक समय से निरंतर चली आ रही है। पारंपरिक वाद्यों से गणेशभक्ति का यह उत्सव और भी भव्य बन जाता है। कार्यकर्ताओं के जयघोष के नाद से गणेश भक्ति के उत्सव में मानो बहार आ जाती है।

परंपरा सुर और ताल की

बंडोपंत सोलापूरकर का 'प्रभात बैंड', इकबालभाई दरबार का 'दरबार बैंड', नगाड़ावाले देवळेकर बंधु और शहनाई वादक प्रमोदजी गायकवाड - इन सभीकी तीसरी - चौथी पीढ़ी आज भी विसर्जन जुलूस में शामिल होती है। इससे यह उत्सव सभी जाति धर्मों का है ये कथन न रह कर कृति में अनुभव किया जा सकता है।

भावनात्मक संबंध

मनोकामना पूर्ण होने पर श्रीफल अर्पित करना, स्वर्ण अर्पण करना - श्रद्धा की ये परंपराएं आज भी उतनी ही निष्ठा और आस्था के साथ जारी हैं। यह भक्ति केवल एक विधि नहीं, बल्कि एक भावनात्मक संबंध है।

कार्यकर्ताओं की अखंड सेवा

'सुवर्णयुग मंडल' के कार्यकर्ता इस परंपरा के सच्चे आधारस्तंभ हैं। तात्यासाहेब गोडसे, मामासाहेब रासने, आप्पासाहेब सूर्यवंशी और आप्पासाहेब रासने की पीढ़ी से लेकर आज की चौथी पीढ़ी तक सेवा का यह क्रम निरंतर जारी है। समाज से प्रेरित और समाज के लिए समर्पित यह सेवा-परंपरा देश की मंदिर व्यवस्था में एक विशिष्ट उदाहरण है।

परंपरा, जो समय की सीमाओं से परे है

"श्रीमंत दगडूशेठ हलवाई गणपति" बाप्पा केवल एक इतिहास नहीं हैं - वे एक जीवंत विरासत हैं। श्रद्धा, भक्ति, विचार, कला और सेवा के संगम से सुसज्जित यह परंपरा समय की सीमाओं से परे जाकर भी सदैव उतनी ही तेजस्वी बनी रहेगी।

॥ ऊर्जा का दिव्य प्रक्षेपण (अतिरुद्र महायज्ञ) ॥

समस्त विश्व में शांति, सद्भाव और संतुलन की स्थापना के पवित्र संकल्प के साथ अतिरुद्र महायज्ञ का आयोजन किया जाता है। यह केवल एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि वेदों के अनुसार दिव्य आध्यात्मिक ऊर्जा का प्रभावशाली प्रक्षेपण है। इसके प्रभाव से व्यक्ति, परिवार और समाज आदि सभी स्तरों पर शुद्धता, संतुलन तथा सकारात्मकता का संचार होता है। जहां यह महायज्ञ संपन्न होता है, वहां का वातावरण पवित्र बनता है और मानवीय चेतना, एकाग्रता तथा कार्यक्षमता में वृद्धि होती है।

वेद परंपरा के अनुसार ११ ब्रह्मवृंदों द्वारा ११ बार किए गए रुद्रपाठ को लघुरुद्र, ११ लघुरुद्रों को महारुद्र और ११ महारुद्रों को मिलाकर अतिरुद्र कहा जाता है। यह अत्यंत व्यापक एवं शक्तिशाली महायज्ञ है जो की वायुमंडल का शुद्धिकरण कर नकारात्मकता का नाश करता है, तथा जीवमात्र के कल्याण को बढ़ावा देता है। इसे सामूहिक आध्यात्मिक जागरण का सर्वोच्च अनुष्ठान माना जाता है, जिसके सकारात्मक प्रभाव गांव, शहर से ले कर राष्ट्र के स्तर तक दूरगामी परिणाम करने वाले अनुभव किये जाते हैं। पर्यावरण मे संतुलन, प्राकृतिक आपदाओं की तीव्रता में कमी तथा विश्व में शांति और सद्भाव की स्थापना - इस महायज्ञ के महत्त्वपूर्ण लाभ हैं।

इसी पवित्र उद्देश्य से "श्रीमंत दगडूशेठ गणपति मंदिर" में आयोजित ११ दिवसीय महोत्सव के दौरान रुद्र हवन, गणेश यज्ञ, महालक्ष्मी हवन तथा श्रीसूक्त पाठ जैसे अनेक वैदिक अनुष्ठान संपन्न किए जाते हैं। मंदिर के सभामंडप में भव्य होमकुंड की स्थापना कर वेदमूर्ति नटराज शास्त्री के मार्गदर्शन में ६५ ब्रह्मवृंदों की सहभागिता से यह महायज्ञ विधिवत संपन्न होता है।

यज्ञ में ३३ करोड़ देवताओं का आवाहन कर, विविध यागकर्म तथा हव्यद्रव्यों और वनौषधियों के विधीपूर्वक उपयोग कर के पूर्णाहुति दी जाती है।

इस अवधि में गंगा, यमुना, इंद्रायणी, पंचगंगा, अष्टविनायक क्षेत्र की पवित्र नदियों, रामेश्वर के ज्योतिर्लिंग के तथा २१ पवित्र कुंडों के मंत्रोच्चारित जल का उपयोग किया जाता है। साथ ही २१ आयुर्वेदिक औषधियों से हवन संपन्न होता है। इन पवित्र जलों से भगवान श्री गणेश का जलाभिषेक कर विश्वकल्याण और स्वस्थ समाज की प्रार्थना की जाती है। विविध धार्मिक अनुष्ठानों के शीर्ष स्थान, अर्थात अतिरुद्र महायज्ञ भक्तों के लिए एक अनुपम आध्यात्मिक अनुभूति बन जाता है।

॥ तुलसी विवाह ॥

यह पावन तुलसी विवाह समारोह "श्रीमंत दगडूशेठ हलवाई सार्वजनिक गणपति ट्रस्ट" द्वारा आयोजित किया जाता है। प्रातःकाल श्रीमंत दगडूशेठ गणपति मंदिर में भगवान श्रीकृष्ण की प्रतिमा का पूजन करने के बाद पारंपरिक शोभा यात्रा निकाली जाती है। तुलसी वृंदावन और श्रीकृष्ण की प्रतिमा को सुसज्जित रथ में वाद्य-घोष के साथ लाया जाता है तथा पूरा मार्ग रंगोली से सजाया जाता है। यह शोभा यात्र मंदिर से निकलकर मंडी में स्थित साखरे महाराज मठ पहुंचती है, जहां पारंपरिक रीति-रिवाजों और मंगलमय वातावरण में भक्तिभाव से तुलसी विवाह संपन्न होता है।

मान्यता है कि भगवान विष्णु को तुलसी अत्यंत प्रिय है। तुलसी विवाह एक महत्वपूर्ण व्रत है और प्रबोधिनी एकादशी को तुलसी का शालिग्राम (भगवान विष्णु के प्रतीक) अथवा उनके अवतार श्रीकृष्ण के साथ विवाह कराने की यह प्राचीन धार्मिक परंपरा है। इसी दिन कोजागिरी पूर्णिमा से आरंभ हुई मंदिर की काकड़ आरती के काकड़े की समाप्ति हो जाती है, अर्थात, मंगला आरती योग की पूर्णता हो जाती है। इस शुभ अवसर पर आरती मंडल की सैकड़ों गृहिणियां श्रद्धा और उत्साह के साथ इस मंगल समारोह में सहभागी बनती हैं।

अन्नकूट (त्रिपुरारी पूर्णिमा)

कार्तिक मास की पावन पूर्णिमा, जिसे त्रिपुरारी पूर्णिमा के नाम से जाना जाता है, के शुभ अवसर पर मंदिर में अन्नकूट का भव्य एवं मनोहारी उत्सव मनाया जाता है। इस दिन श्री गणराय को ५२१ प्रकार के मसालेदार - मीठे एवं स्वादिष्ट व्यंजनों का महानैवेद्य अर्पित किया जाता है। विविध प्रकार के व्यंजनों के साथ रंग-बिरंगे और आकर्षक फलों की नेत्रदीपक सजावट भी की जाती है।

यह नैवेद्य श्रद्धालु अपनी श्रद्धा, भक्ति और हर्षोल्लास के साथ स्वेच्छा से अर्पित करते हैं, जो भगवान के प्रति उनकी अटूट आस्था और समर्पण का प्रतीक है।

इसी अवसर पर मंदिर में दीपों की अलौकिक सजावट विशेष आकर्षण का केंद्र होती है। मंदिर के शिखर से लेकर गर्भगृह तक लगभग १ लाख २५ हजार दीपों की जगमगाती रोशनी संपूर्ण परिसर को आलोकित कर देती है। दीपों की आभा से प्रकाशित मंदिर, मनोहारी रंगोलियां और सुगंधित पुष्पमालाओं से सजा प्रांगण ऐसा दिव्य वातावरण निर्मित करता है, मानो स्वर्ग का कोई राजमहल धरती पर उतर आया हो।

संध्या आरती के पश्चात इस महानैवेद्य का प्रसाद श्रद्धालुओं में भक्तिभाव से वितरित किया जाता है। श्रद्धा, सौंदर्य, समृद्धि और भक्ति का अद्भुत संगम प्रस्तुत करने वाला यह अन्नकूट महोत्सव भक्तों के हृदय में चिरंतन आनंद का संचार करता है।

हेमंत रासने (विधायक)

महासचिव - श्रीमंत दगडूशेठ हलवाई सार्वजनिक गणपति ट्रस्ट

मैं सुवर्णयुग तरुण मंडल के माध्यम से पहले से ही सामाजिक कार्यों में सक्रिय था। मंदिर की स्थापना के लगभग बीस वर्ष बाद इसके विस्तार का निर्णय लिया गया। इस विस्तार कार्य का शुभारंभ विजयादशमी (दशहरा) के पावन मुहूर्त पर किया गया। प्रारंभ में मंदिर को उसके पुराने स्थान के समीप, मज़दूर अड्डे की भूमि पर स्थापित करने का प्रयास किया गया; किंतु कुछ बाधाओं के कारण यह प्रस्ताव आगे नहीं बढ़ सका। इसके बाद उस समय फरासखाना के समीप स्थित भूमि को एक वैकल्पिक स्थान के रूप में चुना गया।

उस समय मैं नगर निगम में पार्षद के रूप में कार्यरत था और इसी क्षेत्र का प्रतिनिधित्व कर रहा था। इसलिए इस भूमि से संबंधित प्रस्ताव को नगर निगम से स्वीकृत करवाने की जिम्मेदारी तात्या ने मुझे सौंपी। सभागार में सभी सदस्यों की सर्वसम्मति से मैं उस प्रस्ताव को पारित करवाने में सफल रहा, यह सब बाप्पा की ही कृपा थी। इस पुण्य कार्य के लिए बाप्पा ने मुझे चुना, यह मेरे लिए अत्यंत सौभाग्य की बात है और इसके लिए मैं स्वयं को धन्य मानता हूं।

राजू शेठ सांकला

अध्यक्ष और प्रबंध संचालक - सिद्धिविनायक समूह

वर्ष १९७१ में 'श्री' पत्रिका में तात्यासाहेब गोडसे का एक साक्षात्कार प्रकाशित हुआ था, जिसमें उन्होंने श्रीमंत दगडूशेठ गणपति के बारे में विस्तार से बताया था। उसे पढ़ने के बाद मैं धीरे-धीरे इस देवस्थान से जुड़ता चला गया।

निर्माण व्यवसाय शुरू करने के बाद चिंचवड़ के बिजली नगर प्रोजेक्ट का एक भी फ्लैट नहीं बिक रहा था। आर्थिक संकट और प्रतिष्ठा खोने का भय सताने लगा था। तभी मैं गणेशोत्सव के दौरान बप्पा के दर्शन के लिए आया। कुछ ही सप्ताह बाद एक कंपनी ने अपने कर्मचारियों के लिए एक साथ सौ फ्लैट बुक कर लिए और शेष फ्लैट भी शीघ्र ही बिक गए। मैं इसे केवल बाप्पा की कृपा मानता हूं। ऐसे अनेक उदहारण मैं बता सकता हूं।

मेरे जीवन का सबसे बड़ा सौभाग्य तब मिला, जब ट्रस्ट ने मंदिर के पुनर्निर्माण की जिम्मेदारी मुझे सौंपी। हम सैकड़ों लोगों के घर बना कर उनके सपनों को आकर देते हैं, लेकिन स्वयं श्रीगणेश के स्थायी निवास का मंदिर बनाने का अवसर मिलना कुछ ऐसा था, जैसे की स्वयं भगवन गणपति ने ही मुझे ये जिम्मेदारी दी हो - ऐसी मेरी भावना हुई। जीवन की सकारात्मक ऊर्जा मुझे यहीं से मिलती है और आज जो कुछ भी हूं, वह श्रीमंत दगडूशेठ गणपति बाप्पा की ही कृपा है।

देवमंदिर से मानव सेवा के महामंदिर तक

'श्रीमंत दगडूशेठ हलवाई सार्वजनिक गणपति ट्रस्ट' द्वारा सामाजिक सेवा के क्षेत्र में निरंतर चल रही इस यात्रा के आप सभी साक्षी हैं। हमें दृढ़ विश्वास है कि गणराय की कृपा से यह सेवा-यात्रा भविष्य में और भी अधिक समृद्ध तथा व्यापक होती जाएगी।

भविष्य में श्रद्धालुओं की निरंतर बढ़ती संख्या को ध्यान में रखते हुए अत्याधुनिक दर्शन-व्यवस्था, पार्किंग, भक्त निवास, सभी धार्मिक पूजा-सेवाएं तथा ऑनलाइन दर्शन जैसी सुविधाओं का विस्तार किया जाएगा। साथ ही, पुरंदर तालुका के वारवडी में ३६ एकड़ भूमि पर 'अंडर वन रूफ' की संकल्पना के अंतर्गत बाप्पा का अंतरराष्ट्रीय संग्रहालय, स्पिरिच्युअल सेंटर, वेदपाठशाला, गोशाला, वृद्धाश्रम तथा बाल कल्याण, स्वास्थ्य एवं शिक्षा संबंधी सुविधाओं से युक्त एक समग्र सेवा परिसर स्थापित करने का संकल्प है।

'श्रीगणेशा' की सेवा में विविध कार्य करने का अवसर मिलना हम सभी के लिए गणराय का महान आशीर्वाद है। हमारी प्रार्थना है कि भविष्य में भी हमसे ऐसे ही निस्वार्थ भाव से सेवा-कार्य निरंतर होते रहें।

श्रीमंत दगडूशेठ हलवाई सार्वजनिक गणपति ट्रस्ट एवं
सुवर्णयुग तरुण मंडल, पुणे

संस्थापक अध्यक्ष
स्वर्गीय प्रतापराव (तात्यासाहेब) गोडसे

वर्तमान न्यासीगण

अध्यक्ष : श्री. सुनिलभाऊ रासने

उपाध्यक्ष : श्री. माणिकदादा चव्हाण

उपाध्यक्ष : डॉ. श्री. रामचंद्र परांजपे (एम.डी.)

कोषाध्यक्ष : श्री. महेशभाऊ सूर्यवंशी, बी.ई. (सिव्हिल)

मुख्य सचिव : श्री. हेमंतभाऊ रासने, आमदार

संयुक्त सचिव : श्री. अमोल केदारी

उत्सव प्रमुख : श्री. अक्षय गोडसे

न्यासी : श्री. उत्तमराव गावडे

श्रद्धा की महकती सुगंध

सन १८९३ में श्रीमंत दगडूशेठ हलवाई ने गणेशोत्सव के माध्यम से श्रद्धा और भक्ति का जो बीज बोया था, वह आज एक विशाल वटवृक्ष का रूप धारण कर चुका है। उसकी महकती दिव्य सुगंध देश-विदेश के कोने-कोने तक पहुँच चुकी है। यह देखकर हृदय गर्व से भर उठता है। श्रद्धा की यह महकती सुगंध मंडल की वैचारिक समृद्धि, कलात्मक संवेदनशीलता, सामाजिक प्रतिबद्धता और आध्यात्मिक साधना का अभिन्न अंग बन चुकी है। इस भक्तिरस की सुगंध का मूल स्रोत अंततः श्रीमंत दगडूशेठ गणराय के श्रीचरण ही हैं - यही शाश्वत सत्य है। और यही दिव्य, महकती सुगंध आज की ही नहीं, बल्कि आने वाली नई पीढ़ियों को भी प्रेरणा का आलोक प्रदान करती रहेगी, इसमें तनिक भी संदेह नहीं।

श्रीमंत दगडूशेठ हलवाई सार्वजनिक गणपति ट्रस्ट, पुणे

गणपति भवन, २५०, बुधवार पेठ, पुणे - ४११००२

गणपति सदन : +९१ २० २४४९६४६४ / +९१ २० २४४९२०००

contact.dhgt@gmail.com

www.dagdushethganpati.com